ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ಮುಕ್ತವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ

ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು – 570 006.

Karnataka State Open University

Manasagangothri, Mysore - 570 006.

अनुवाद और प्रयोजनमूलक हिन्दी

M.A. Previous HINDI
Course / Paper - V

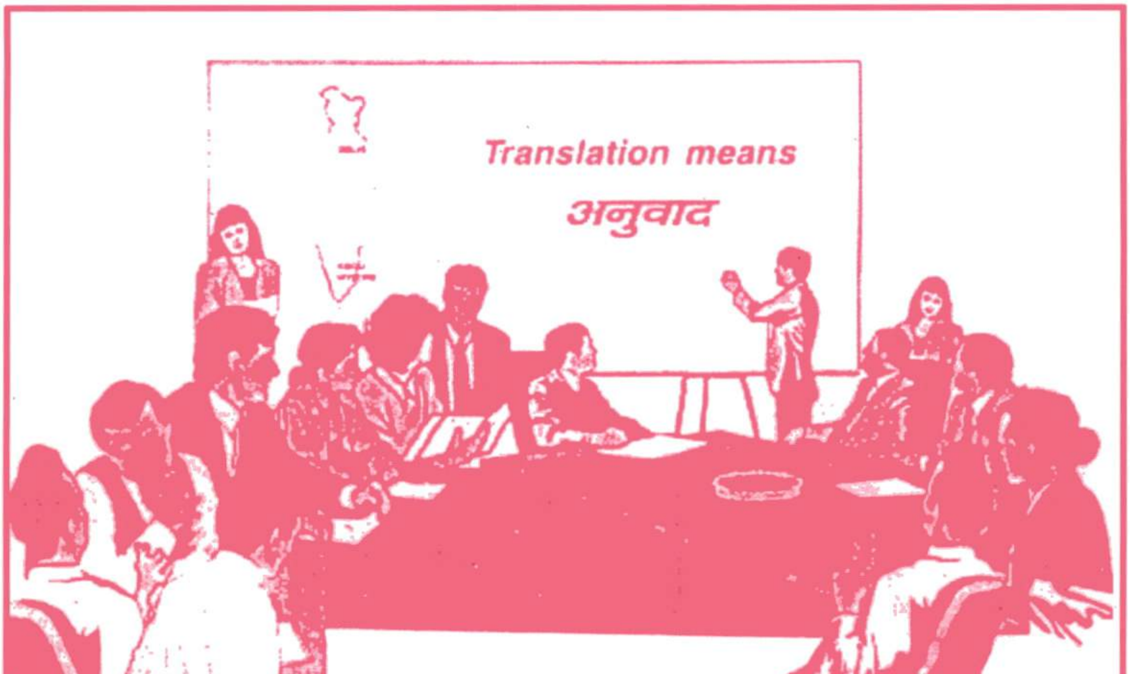

Block - 1

ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕಾಗಿ ಇರುವ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣವನ್ನು ಪ್ರಜಾತಂತ್ರೀಕರಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸಲಾಗಿದೆ.

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ 1986

ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯವು ದೂರಶಿಕ್ಷಣ ಪದ್ಧತಿಯಲ್ಲಿ ಬಹುಮಾಧ್ಯಮಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತದೆ. .... ವಿದ್ಯಾಕಾಂಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಕಲಿಕಾ ಕೇಂದ್ರಕ್ಕೆ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ಬದಲು, ಜ್ಞಾನ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಯುವವರ ಬಳಿ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ವಾಹಕವಾಗಿದೆ.

ಡಾ || ಕುಳಂದೈಸ್ವಾಮಿ

The Open University system has been initiated in order to augment opportunities for higher education and as an instrument of democratising education.

National Education Policy 1986

The Open University system makes use of Multi-media in distance education system. .... it is a vehicle which transports knowledge to the place of learners rather than transport people to the place of learning.

Dr. Kulandai Swamy

इकाई एक

अनुवाद की परिभाषा एवं प्रतीकांतर

1.0. प्रस्तावना

1.1. उद्देश्य

1.2. अनुवाद की परिभाषा

1.3. अनुवाद शब्द का नया अर्थ

1.4. अनुवाद और प्रतीकांतर

1.5. अनुवाद का स्पष्ट अर्थ

1.6. सफल अनुवाद के लिए आवश्यक तत्व

1.7. अनुवाद संबंधी विभिन्न परिभाषाएँ

1.8. ट्रान्सलेशन के संबंध में विद्वद् विचार

1.9. शब्द ग्रहण

1.10. अनुवाद के लिए आवश्यक बातें

1.11. ट्रान्सलेशन : निष्पत्ति और अर्थ विकास

1.12. निष्कर्ष

1.13. शब्दावली

1.14. सारांश

1.15. प्रश्न

1.16. अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

1.17. संदर्भ ग्रन्थ एवं निबन्ध

पाठ्यक्रम अभिकल्प तथा संपादकीय समिति

प्रो.एम.जी.कृष्णन
उप कुलपति तथा अध्यक्ष
क.रा.मु.वि.विद्यालय,
मैसूर - 6

प्रो.एस.एन.विक्रमराज अरस
डीन (शैक्षणिक) - संयोजक
क.रा.मु.वि. विद्यालय
मैसूर - 6

डॉ.कांबले अशोक — संयोजक
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि.विद्यालय
मैसूर - 6

डॉ.मिथाली भट्टाचार्य — संपादिका
रीडर, हिन्दी विभाग
ज्ञानभारती, बेंगलूर वि.विद्यालय
बेंगलूर - 56.

पाठ्यक्रम के लेखक

डॉ.सरगु कृष्णमूर्ति
प्रोफेसर
बेंगलूर विश्वविद्यालय.

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर, शैक्षणिक अनुभाग द्वारा निर्मित । सभी अधिकार सुरक्षित । कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना इस कार्य के किसी भी अंश को किसी भी रूप में अनुलिपित या किसी अन्य. माध्यम द्वारा प्रतिकृति नहीं किया जाएगा ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम पर अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर - 6 से प्राप्त की जा सकती है ।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से रजिस्ट्रार **(प्रशासन)** द्वारा मुद्रित व प्रकाशित ।

ब्लाक परिचय

प्रिय विद्यार्थी,

कोर्स - एक में आपने **'कर्नाटक** संस्कृति एवं **कन्नड़ साहित्य'** का अध्ययन किया ।

कोर्स - दो में आपने **'आधुनिक हिन्दी काव्य'** के बारे में अध्ययन किया और कविवर 'जयशंकर प्रसाद', 'मैथिलीशरण गुप्त', 'रामधारी सिंह दिनकर' और सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' तथा 'नयी कविता के कवियों' के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली ।

कोर्स - तीन में **'आधुनिक गद्य एवं निबन्ध'** में आपने 'जयशंकर प्रसाद विरचित 'ध्रुवस्वामिनी', भारतेन्दु कृत 'चन्दावली नाटिका' और 'हिन्दी के श्रेष्ठ निबन्ध' तथा 'एकाँकी वैभव' का भी अध्ययन किया । 'कहानी कौस्तुभ' नामक कहानी संकलन का भी अध्ययन किया । इसके अलावा आपने 'जैनेन्द्र' कृत 'त्याग पत्र' तथा भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यासों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर ली ।

कोर्स - चार में आपने **'हिन्दी साहित्य का इतिहास और व्याकरण'** के बारे में सविस्तार रूप से अध्ययन भी किया और जानकारी भी प्राप्त कर ली ।

को विभिन्न रीतियों में परिभाषित किया है । इस इकाई के अनुभाग में हम अनुवाद शब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ का परिचय प्राप्त करेंगे । अनुवाद शब्द के इतिहास का विवरण भी इस अनुभाग में दिया जायेगा ।

1.2.1. अनुवाद का अर्थ

अनुवाद शब्द अनु + वाद से बना है । इस शब्द का संबंध 'वद्' धातु से है - वद् = बोलना या कहना । 'वद्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय के लगने से वाद शब्द बनता है । इसमें 'अनु' उपसर्ग के जुड़ने से अनुवाद शब्द बनता है । 'अनु' का अर्थ है पीछे, बाद में अनुवर्तित । अब अनुवाद का अर्थ निकलता है - किसी के कहने के बाद कहना अर्थात् पुनःकथन ।

1.2.2. शब्द चिंतामणि कोश में अनुवाद का अर्थ

इस कोश में अनुवाद का अर्थ यों दिया गया है -

प्राप्तस्य पुनःकथने
अथवा
ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने ।

इसके अनुसार अनुवाद का अर्थ है - पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना ।

1.2.3. अनुवचन

प्राचीन काल में गुरु जो कुछ कहते थे, छात्र उसे दुहराते थे । यह दुहराने की प्रक्रिया अनुवाद या अनुवचन है । यही अनुवाद है । यह परंपरा भारत में प्रचलित थी ।

प्रथम एम.ए. - कोर्स पाँचवाँ

Course - V, Paper - V

1

''अनुवाद और प्रयोजनमूलक हिन्दी''

'' अनुवाद ''

Unit No. 1 to 5 **Page No.**

अनुक्रमणिका

इकाई	01	अनुवाद की परिभाषा एवं प्रतीकांतर	1 - 32
इकाई	02	अनुवाद का महत्व	33 - 59
इकाई	03	अनुवाद प्रक्रिया के चरण	60 - 87
इकाई	04	अनुवाद : कला, विज्ञान व तंत्र	88 - 108
इकाई	05	अनुवाद के प्रकार	109 - 161

1.0. प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में आप अनुवाद की विभिन्न परिभाषाओं की जानकारी हासिल करेंगे । साथ ही इस तथ्य से आप अवगत होंगे कि अनुवाद प्रतीकांतर का ही एक रूप है । एक भाषा में अभिव्यक्त विचार को उसी भाषा में व्यक्त करना शब्दान्तर है, जब कि एक भाषा में अभिव्यक्त विचार को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना रूपांतर कहलाता है । यह रूपांतर प्रतीकों का परिवर्तन है । इसका दूसरा नाम प्रतीकांतर है । इस इकाई में अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ अर्थात् ऋग्वेद, ब्राह्मण ग्रंथ आदि में प्रयुक्त अनुवाद शब्द के विभिन्न अर्थ आप जान पायेंगे । साथ ही आप को इस तथ्य का बोध कराया जायेगा कि अनुवाद शब्द का आधुनिक अर्थ पूर्व अर्थ से भिन्न है । अनुवाद शब्द का आधुनिक अर्थ भाषांतरण है । इस इकाई में आप यह भी जान सकेंगे कि सफल अनुवाद के लिए आवश्यक तत्व क्या हैं । इस इकाई में अनुवाद के संबंध में विभिन्न मनीषियों से प्रदत्त मतों का भी उल्लेख किया जाता है ।

1.1. उद्देश्य

अनुवाद विज्ञान अत्यंत जनप्रिय विषय बनता जा रहा है । वस्तुतः आधुनिक युग अनुवाद का युग है । घटकों में विभक्त प्रस्तुत अध्ययन में हम अनुवाद विज्ञान से संबंधित अंशों का विवेचन करने जा रहे हैं । इसकी विभिन्न इकाइयों में भिन्न-भिन्न अंशों पर प्रकाश डाला जायेगा । अनुवाद कला के तत्वों का पूर्ण ज्ञान प्रदान कर छात्रों को योग्य अनुवादक बनाना ही इस रचना का उद्देश्य है ।

अनुवाद पद्धति, अनुवाद विज्ञान, अनुवाद की उपयोगिता आदि के विवेचन का उद्देश्य यह है कि छात्र इस क्षेत्र में निष्णात बनें, जिससे कि आगे अन्य भाषाओं में रचित महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद हिन्दी अथवा अपनी मातृभाषा में कर सकें । अनुवाद कला में जो प्रवीण बनता है, वह अन्य भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न पुस्तकों की संपत्ति से अनुवाद के माध्यम से हिन्दी एवं अन्य भाषाओं को समृद्ध बना सकता है । इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य यही है ।

1.1.1. पठनीय अंश

अनुवाद का क्षेत्र इतना विशाल है कि एक कृति के अंतर्गत उससे संबंधित सभी विषयों का आकलन करना सरल नहीं है । बिन्दु-सिन्धु न्याय में कतिपय प्रमुख विषयों का विवेचन यहाँ किया जायेगा । प्रमुख विषय निम्नलिखित हैं -

अनुवाद की परिभाषा, अनुवाद का स्वरूप, अनुवाद क्या है, वह शिल्प है या कला है या विज्ञान है, अनुवाद के प्रकार, अनुवाद की शैली, अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद सिद्धांत, अनुवाद की समस्याएँ यथा मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या, साहित्य के अनुवाद की समस्या, काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, कार्यालय अनुवाद, पारिभाषिक शब्दावली, अलंकारों का अनुवाद, सांस्कृतिक अनुवाद, पुनरीक्षण आदि ।

1.2. अनुवाद की परिभाषा

अनुवाद शब्द की कई परिभाषाएँ हैं । देश-विदेश के विद्वानों ने अनुवाद

कोर्स - पाँच में अब आप '**अनुवाद और प्रयोजनमूलक हिन्दी**' के बारे में अध्ययन करने जा रहे हैं ।

अनुवाद के **ब्लॉक - एक** में आप अनुवाद की परिभाषा एवं प्रतीकांतर, अनुवाद का महत्व, प्रक्रिया तथा अनुवाद-कला, विज्ञान और तंत्र, अनुवाद के प्रकार आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

शुभकामनाओं के साथ,

डॉ. कांबले अशोक
अध्यक्ष , हिन्दी विभाग
क.रा.मु.वि. विद्यालय
मैसूर - 6.

1.2.4. ऋग्वेद में अनुवाद शब्द

ऋग्वेद में अनु और वद् का अलग-अलग प्रयोग मिलता है । दुहराने के अर्थ में यह प्रयुक्त है -

अन्वेको वदति यद्ददात्ति

अन्य प्रयोग है - रोचनादधि । इस संबंध में सायण का कथन है - अधिःपंचम्यर्थानुवादी । सायण भी दुहराने का अर्थ मानते हैं ।

1.2.5. ब्राह्मण ग्रंथ

ब्राह्मण ग्रंथों में पुनःकथन के अर्थ में अनुवाद शब्द प्रयुक्त है -

अनुब्रूयाद् .... उदितानुवादिनम् कुर्यात् ।

1.2.6. उपनिषदों में अनुवाद शब्द का प्रयोग

उपनिषदों में अनुवाद का प्रयोग व्याकरणिक रूपों में हुआ है । 'अनुवदति' का प्रयोग दुहराने के अर्थ में हुआ है । कई विद्वानों ने इस शब्द का प्रयोग पुनःकथन के अर्थ में किया है ।

1.2.7. निरुक्त में अनुवाद शब्द का प्रयोग

निरुक्त में इसका प्रयोग 'ज्ञात को कहना' के अर्थ में हुआ है - **'कालानुवादं परीत्य'** । इसी में अन्यत्र इसका प्रयोग दुहराने के अर्थ में हुआ है । यास्क ने कई बार इस शब्द का प्रयोग किया है ।

1.2.8. अष्टाध्यायी में अनुवाद शब्द का प्रयोग

पाणिनी ने भी इसका प्रयोग किया है -

अनुवादे चरणानाम् ।

ये भी 'पुनःकथन' अर्थ में इस शब्द का प्रयोग करते हैं । भट्टोजी दीक्षित इसकी व्याख्या 'ज्ञात बात को कहना' के अर्थ में करते हैं ।

1.2.9. कय्यट की परिभाषा

कय्यट अपनी टीका में अनुवाद शब्द का अर्थ पुनःकथन बताते हैं । काशिका के अनुसार अन्य किसी प्रमाण से ज्ञात बात का शब्द के द्वारा कथन ही अनुवाद है । मीमांसा में यही अर्थ उभरता है । इसके तीन भेद हैं भूतार्थानुवाद, स्तुत्यर्थानुवाद, गुणानुवाद ।

1.2.10. सूत्र आदि में अनुवाद शब्द का प्रयोग

न्याय सूत्र के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं, जिसमें अनुवाद भी एक है - विधि, अर्थवाद और अनुवाद । इसीमे अन्यत्र कहा गया है कि विधि तथा विहित का पुनःकथन अनुवाद है । न्याय दर्शन के अनुसार अनुवाद और पुनरुक्त में भेद नहीं है । सायण इसे नहीं मानते । उनके अनुसार अनुवाद पुनरुक्ति नहीं है । भर्तृहरि पुनःकथन को अनुवाद मानते हैं । जैमिनीय न्याय माला के अनुसार ज्ञात का कथन अनुवाद है -

ज्ञातस्य कथनमनुवादः

मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लूक भट्ट अनुवाद का अर्थ पुनःकथन बताते । संस्कृत में गुणानुवाद का अर्थ गुण का बार-बार कथन है ।

1.2.11. संस्कृत में अनुवाद के विभिन्न अर्थ

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि संस्कृत में अनुवाद शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है यथा - गुरु की बात का शिष्य द्वारा

दुहराया जाना, पश्चात्कथन, दुहराना, पुनःकथन, ज्ञात को कहना, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, विधि अथवा विहित का पुनःकथन, आवृत्ति, सार्थक आवृत्ति आदि । प्राचीन संस्कृत साहित्य में कहीं भी अनुवाद शब्द का प्रयोग किसी भी विषय को एक भाषा से अन्य भाषा में प्रस्तुत करना - इस आधुनिक अर्थ में नहीं हुआ है । प्रायः सभी विद्वानों ने पुनः कथन के अर्थ में अनुवाद शब्द का प्रयोग किया है ।

1.3. अनुवाद शब्द का नया अर्थ : डॉ.मिताली भट्टाचारजी

अनुवाद शब्द का विवेचन करती हुई डॉ.मिताली भट्टाचारजी लिखती हैं कि प्राचीन काल में अनुवाद का अर्थ ज्ञात विषय का पुनःकथन था । अनुवाद का नया अर्थ भाषान्तरण है, अर्थात् एक भाषा में कथित विषय का पुनःकथन अन्य भाषा में । अन्य भाषा में पुनःकथन के लिए **छाया** शब्द का प्रयोग होता था । प्राकृत से संस्कृत में जो अनुवाद होता है, उसे छाया कहते हैं । संस्कृत नाटकों में स्त्रियाँ और नौकर अपने विचार प्राकृत में व्यक्त करते हैं । उनके कथन की छाया संस्कृत में दी जाती है । चौदहवीं, पंद्रहवीं सदियों से ज्योतिष, कथावार्ता, नीति, वैद्यक आदि ग्रंथों का भाषान्तरण हिन्दी में होने लगा, जिसे **भाषा-टीका** कहते हैं । यह भाषा-टीका भाषानुवाद ही है । फारसी भाषा के प्रचार के कारण हिन्दी में अनुवाद के लिए **तरजुमा** शब्द प्रचलित हुआ । भाषा टीका तरजुमा शब्द के साथ-साथ **उल्था** शब्द भी प्रचलित हुआ । धीरे-धीरे भाषानुवाद शब्द के साथ-साथ अनुवाद शब्द अस्तित्व में आया । अनुवाद शब्द बंगला में पहले से प्रयुक्त है । मराठी, गुजराती, असामी, उड़िया, पंजाबी, तेलुगु,

तमिल, कन्नड आदि में अनुवाद शब्द सत्रहवीं सदी से प्रयुक्त हो रहा है ।

1.4. अनुवाद और प्रतीकान्तर

अनुवाद प्रतीकान्तर का एक भेद है । विचार एवं भाव प्रतीकों के द्वारा व्यक्त किये जाते हैं । प्रत्येक कला के अपने पृथक्-पृथक् प्रतीक होते हैं । प्रतीकों का परिवर्तन प्रतीकान्तर कहलाता है ।

प्रतीकांतर तीन प्रकार के हैं -

1. शब्दान्तर 2. माध्यामान्तर 3. भाषान्तर ।

1. शब्दान्तर

एक भाषा में अभिव्यक्त विचार को उसी भाषा में अन्य शब्दों में व्यक्त करना शब्दान्तर है, यथा - 'आप बैठिये' के बदले में 'आप तशरीफ़ रखिए' लिखना ।

2. माध्यामान्तर

एक माध्यम के प्रतीकों के स्थान पर अन्य माध्यमों के प्रतीकों का प्रयोग करना माध्यमांतर है । एक कवि एक भाव को व्यक्त करता है । उसी भाव को शिल्पी शिल्प के माध्यम से व्यक्त करता है तो चित्रकार चित्र के माध्यम से ।

3. भाषांतर

एक भाषा में अभिव्यक्त विचार या भाव को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना भाषान्तर कहलाता है । इससे स्पष्ट है कि अनुवाद प्रतीकांतर का एक भेद है । इस भाषान्तर या भाषाप्रतीकान्तर में एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर

अन्य भाषा के प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है ।

उदाहरण :- विभिन्न भाषाओं के प्रतीकांतर

अंग्रेजी	**हिन्दी**
Boy	लड़का
Girl	लड़की
School	विद्यालय
Mango	आम
Tree	पेड़ ।

1.5. अनुवाद का स्पष्ट अर्थ

एक भाषा की सामग्री का अन्य भाषा में रूपांतर करना ही अनुवाद है, जैसे -

हिन्दी :- दिव्या गीत गा रही है ।

अंग्रेजी में रूपांतर :- Divya is singing a song.

प्रत्येक भाषा की अपनी रूपात्मक, ध्वन्यात्मक, शाब्दिक, अर्थ संबंधी, मुहावरे विषयक आदि विशेषताएँ होती हैं । अन्य भाषाओं में ये विशेषताएँ भिन्न होती हैं । स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में ये विशेषताएँ समान नहीं होतीं । अनुवाद में पूर्णतः समान अभिव्यक्ति का अर्थ है - स्रोत भाषा की रचना पढ़कर लक्ष्य भाषा-भाषी ठीक वही अर्थ ग्रहण करता है । यह अर्थ-ग्रहण कभी विस्तृत, कभी संकुचित और कभी भिन्न होता है । दोनों भाषाओं की इकाइयाँ सदा समान नहीं होतीं । अनुवाद में इनका समान होना आवश्यक है । इस समानता का अर्थ अनुवाद में दोनों की समानता है । यह अर्थ एक समझौता मात्र है । समानता की निकटता से अनुवाद सफल होता है ।

उदाहरण

हिन्दी वाक्य :- उसने कहा ।
उसने कह दिया ।
उसने कह डाला ।

अंग्रेजी में समतुल्य वाक्य है :-

He told.

अंग्रेजी में तीनों हिन्दी वाक्यों का अनुवाद

He told ही है । He told away अंग्रेजी का गलत प्रयोग है । इसी प्रकार Please come to our house का अनुवाद हिन्दी में विभिन्न रूपों में किया जा सकता है,

जैसे :-

1. कृपया हमारे घर आइए ।
2. कृपया हमारे घर पधारिए ।
3. कृपया हमारे घर तशरीफ लाइए ।
4. कृपया हमारे घर आकर उसे पवित्र बनाइए ।

चारों का अर्थ एक होने पर भी उसमें यत्किंचित् अन्तर है । यथा संभव समान अभिव्यक्ति अनुवाद में होनी चाहिए । सटीक अनुवाद सफल अनुवाद है ।

1.5.1. सटीक अनुवाद

सटीक अनुवाद निकटतम भावाभिव्यक्ति है । स्रोत अभिव्यक्ति और लक्ष्य अभिव्यक्ति में समानता होनी चाहिए । जब पूर्ण समानता संभव नहीं है, तब स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति का यथा-तथा अनुवाद ठीक नहीं है । लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के भाव को पूर्णतः व्यक्त करना ही अनुवाद का लक्ष्य है ।

उदाहरण :- अंग्रेजी वाक्य :- The fruit which sarala brought from the garden, is very sweet.

इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है -

'वह फल जिसे सरला बगीचे से लायी, बहुत मीठा है ।' यह अनुवाद हिन्दी अभिव्यक्ति के अनुसार नहीं है । लक्ष्य भाषा के अनुरूप निम्न प्रदत्त अनुवाद स्रोत भाषा के भाव के निकट होगा - 'बगीचे से सरला जो फल लायी, वह मीठा है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि अनुवाद स्रोत भाषा के भाव की समानार्थी अभिव्यक्ति है । कह सकते हैं कि अनुवाद एक भाषा में अभिव्यक्त भाव या विचारों को यथासाध्य समान एवं सहज अभिव्यक्ति के द्वारा अन्य भाषाओं में प्रकट करने का प्रयत्न है ।

1.6. सफल अनुवाद के लिए आवश्यक तत्व

सफल अनुवाद के लिए निम्न सूचित तत्व आवश्यक हैं -

1. स्रोत भाषा की रचना के भाव या विचार लक्ष्य भाषा में मूल रूप में लाना अनुवाद का मूल उद्देश्य है ।
2. स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति के लिए लक्ष्य भाषा में समान अभिव्यक्ति की खोज होनी चाहिए ।
3. लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति स्रोत भाषा की छाया - जैसी नहीं होनी चाहिए ।

1.6.1. अनुवाद में सतर्कता

अनुवाद में सतर्कता न बरते तो अनुवाद विडंबना का नमूना बन जाता है । अनुवाद के संबंध में यह कहा जाता है कि अनुवाद वह कस्टम हॉउस याने सीमाशुल्कसदन है, जिससे होकर स्रोत भाषा के प्रयोगों का विदेशी माल लक्ष्य भाषा में अन्य स्रोतों की तुलना में अधिक आ जाता है । * यदि अनुवादक

अपेक्षित सतर्कता न बरते तो उपर्युक्त विसंगति संघटित होगी ।

* Translation is a custom house through which passes, if the custom officers are not alert, more smuggled goods of foreign idioms, than through any linguistic frontier.

1.7. अनुवाद संबंधी विभिन्न परिभाषाएँ

अनुवाद को परिभाषित करना सरल नहीं है । कतिपय विद्वानों की धारणा है कि अनुवाद नामक कोई वस्तु या तत्व नहीं है । यहाँ अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ दी जा रही हैं -

नीडा - "Tranlating consists in producing in the receptor language, the closest natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and scondly in style."

कैटफोर्ड - " The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in another language."

फोरेस्टन - " Translation is the transference of the content of a text from one language into another, bearing in mind - we cannot always disassociate, the content from the form."

डॉ.भोलानाथ तिवारीजी की परिभाषा

विभिन्न परिभाषाओं तथा अनुवाद की प्रक्रिया को दृष्टि में रखकर भोलानाथ तिवारी जी ने एक नई परिभाषा दी है - ''भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य

और सहज प्रतीकों का प्रयोग । इस प्रकार अनुवाद निकटतम समतुल्य और सहज प्रति-प्रतीकन या यथा-साध्य समान प्रति प्रतीकन है ।''

डॉ.भोलानाथ तिवारी आगे लिखते हैं - साथ ही स्रोत भाषा में कथ्य और अभिव्यक्ति का जैसा सामंजस्य हो, लक्ष्य भाषा में भी इन दोनों का सामंजस्य होना चाहिए । अनुवाद कथनतः और कथ्यतः निकटतम सहज प्रति प्रतीकन है ।

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन द्वारा प्रदत्त परिभाषा

डॉ.पी.के.बालसुब्रह्मणियन के अनुसार ''अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है - 'अनु + वाद' अर्थात् किसी के कहने के बाद कहना, किसी कथन के पीछे का कथन, 'पुनःकथन' आदि । जिस अर्थ में आज अनुवाद शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह प्राचीन नहीं है । वस्तुतः पहले व्याख्या रूप में पुनः कथन की प्रक्रिया थी । अनुवाद प्रायः उसी भाषा में होता था ।'' अनुवाद के नये अर्थ को स्पष्ट करते हुए श्री तुकाराम रामप्रिय अनुवाद की परिभाषा यों देते हैं - ''समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास ही अनुवाद है ।'' हमारे अनुसार अनुवाद कथनतः और कथ्यतः निकटतम सहज प्रति प्रतीकन की प्रक्रिया है ।

डॉ.भोलानाथ तिवारी, डॉ.सेवारी, डॉ.जी.गोपीनाथन आदि के द्वारा संप्रदत्त अनुवाद की परिभाषाएँ एकवत् हैं ।

1.8. ट्रान्सलेशन के संबंध में विद्वद् विचार

ट्रान्सलेशन शब्द का अर्थ है - एक भाषा में निहित भाव या विचारों को

अन्य भाषा में व्यक्त कर देना । अनुवादकों और अनुवाद-चिंतकों ने इसकी अनेक परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं । इन सभी परिभाषाओं में मूलतः अनुवाद का यही अर्थ ध्वनित हुआ है ।

अनुवाद के लिए प्रयुक्त ''अंतरण'' शब्द से मिलता जुलता एक अर्थ--परिवर्तन या क्रियान्वयन भी है, जैसे - "He did not translate his ideas into action." अर्थात् उसने अपने विचारों को कार्यरूप में परिणत नहीं किया । Translation शब्द को भाषांतरण अथवा भाषा परिवर्तन का आधुनिक अर्थ बहुत बाद में मिला है ।

1.8.1. परकाय प्रवेश

डॉ.सेवरी अनुवाद प्रक्रिया की तुलना आत्मा की परकाय प्रवेश प्रक्रिया से करते हैं । अनुवाद के परकाय प्रवेश होने का सिद्धांत बहुत पहले से ही प्रचलित रहा है । [The art of translation, Theoder Savary, p.13]

डॉ.स्याम्युल जॉनसन के अनुसार - ''अनुवाद स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अर्थ के अन्तरण की प्रक्रिया है । अनुवाद का तात्पर्य है अर्थ को बनाये रखते हुए अन्य भाषा में अन्तरण करना ।''

1.8.2. अनुवाद के विभिन्न अर्थ

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन

अनुवाद शब्द, 'अनु व 'वाद' दो शब्दों के मिलन से उत्पन्न सामासिक शब्द है । 'वद्' धातु का अर्थ संस्कृत में 'बोलना' है । 'अनु' का अर्थ होता है 'बाद में चलनेवाला' । असल में अनुवाद किसी एक ग्रंथ या रचना के मौलिक

सृजन के बाद किया जाता है । इसलिए अनुवाद का शाब्दिक अर्थ हुआ - 'पुनःकथन' याने 'किसी के कहने के बाद कहना ।'

1. एक जमाने में सारी शिक्षा-दीक्षा की प्रणाली मौखिक थी । 'श्रुति' जो वेदों के बाद अस्तित्व में आयी, वह इसी का द्योतक है । पहले गुरु कहते थे तो शिष्य उनका अनुकरण करके कहता था, जिसे 'अनुवाद' कहा जाता था । याने गुरु की बात को शिष्य दुहराते तो उस क्रिया को 'अनुवाद' या 'अनुवचन' कहते थे ।
2. **शब्दार्थ चिन्तामणि** के अनुसार अनुवाद का अर्थ 'प्राप्तस्य पुनः कथने' या पुनःकथन कहा गया है ।
3. जो बात क़ही गयी, उसे बाद में कहा जाय तो उसे भी अनुवाद कहते थे । इसे 'पश्चात्कथन' कहते थे ।
4. कोई बात दुहरायी जाती है तो उसे भी अनुवाद कहते थे ।
5. 'कहना', 'ज्ञात को कहना' आदि भी अनुवाद माना जाता था ।
6. किसी विषय का प्रतिपादन किया जाय या अनुसमर्थन किया जाय तो उसे भी अनुवाद कहते थे । 'समर्थ न के लिए प्रयुक्त कथन' भी अनुवाद माना जाता था ।
7. बार-बार कहा जाय तो उस 'आवृत्ति' को भी अनुवाद कहते थे ।
8. सार्थक आवृत्ति भी अनुवाद मानी जाती थी ।
9. जो जानने योग्य है या जो जाना हुआ है, उसे पुनः कहा जाय अर्थात् 'विधि' या 'विहित' का पुनःकथन भी अनुवाद माना जाता था ।

राबर्ट गिब्स की परिभाषा

आज Translation के अर्थ में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग होता है । उपन्यासकार राबर्ट गिब्स अंनुवाद को 'असत्य' या 'विनम्र असत्य' मानते हैं । वह 'सत्य' नहीं हो सकता । ऐसी स्थिति में अनुवाद वंचक हो जाता है । गिब्स के अनुसार अनुवाद वंचनापूर्ण अंतरण है ।

थियोडार सेवरी की परिभाषा

'अनुवाद' का महत्व स्वीकार करते हुए थियोडार सेवरी कहते हैं - ''यह बात बिलकुल सही है कि वैज्ञानिक ग्रंथों में विषयवस्तु का ही प्रमुख महत्व होता है और शैली का बिलकुल नहीं । फिर भी वैज्ञानिक तथा तकनीकी अनुवाद की कुछ विशिष्टताएँ होती हैं । पहली बात तो यह है कि ऐसी पुस्तकों का अनुवाद उनमें निहित महत्व के कारण ही किया जाता है । इसका यह महत्व पूरी तरह जीवन के भौतिक पक्ष से सम्बद्ध होता है । प्रो.आर.सी.पुन्नट की पुस्तक मेंडलिम का जापानी भाषा में अनुवाद केवल इसलिए किया गया था कि जापानी लोग आनुवंशिकता के सिद्धांतों का आश्रय लेना चाहते थे ।'' सेवरी के अनुसार स्रोतभाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद है ।

यहाँ विषय को महत्व दिया गया है, न कि शैली को । वस्तुतः अनुवाद करते समय 'विषय' को ही ध्यान में रखना श्रेयस्कर है । 'पूर्ण अनुवाद' तो कदापि संभव नहीं, यद्यपि इसका 'प्रयत्न' मात्र किया जाता है । कुछ अनुवादक इसको दर्पण मानते हैं, जिससे मूलकृति का हू-ब-हू प्रतिबिम्ब उभर कर आये ।

थियोडोर सेवरी के अनुसार अनुवाद कार्य उस विचार साम्य के कारण संभव हो पाता है, जो हमारी शाब्दिक अनुभूतियों के मूल में विद्यमान रहता है । यह विचार साम्य इस तथ्य में खोजा जा सकता है, जिसके अनुसार सभी राष्ट्रों के लोगों की जाति एक ही है - मानव जाति । यह विचार सार्वजनीन है । जब कोई अंग्रेज़ उस स्त्री के बारे में सोच रहा हो, जिसे वह "My Mother" कहता है, तो फ्रांसीसी "Ma mere" के बारे में सोचता है और जर्मन "Meine mutter" के बारे में । सामान्य लोगों के लिए ये तीनों विचार एक से होंगे और इससे

उनके मन में करुणा, प्रेम तथा अभिमान की एक सी भावनाएँ पैदा होंगी -

"Translation is made possible by an equivalence of thought which lies behind the different verbal expressions of thought. This equivalence is tracable to the fact that men of all nations belong to the same species. When an English man is thinking of the woman whom he describes as my mother, a French man is thinking of 'Ma mere' and German of 'Meine mutter'. Among normal people, the three thoughts will be very similar and will recall the same memories of tenderness, loving care and material pride" (Theodore Savory - The art of Translation.)

लियोनार्ड फ्रार्स्टर द्वारा प्रदत्त परिभाषा

लियोनार्ड फ्रार्स्टर के शब्दों में ''अनुवाद एक भाषा के कथ्य या विषय वस्तु का दूसरी भाषा में रूपांतरण है । फ्रार्स्टर के मत से वस्तु विधान को रूप विधान से पूर्ण रूपेण अलग नहीं किया जा सकता । यदि सम्प्रेषण का अर्थ उन संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग मान लिया जाए, जिनके द्वारा लोग एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, तो फिर अनुवाद की परिभाषा अर्थ के अंतरण के रूप में नहीं, प्रयुत प्रतीकों के अंतरण के रूप में की जा सकती है ।

एल.डब्ल्यु. टेंकाफ़ की परिभाषा

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन के लेख में एल.डब्ल्यु.टैंकाफ का मत उल्लिखित है । फ्रान्सीसी व अंग्रेजी अनुवादों की शैलीगत समस्याओं पर विचार करते समय एल.डब्ल्यु.टैंकाफ ने अनुवाद कार्य के दो पक्ष माने हैं - मूल लेखक

के अर्थ का ठीक-ठीक अंतरण और मूल लेखक की शैलीगत विशेषताओं का अंतरण । टैंकाफ के मत से शैली की अपेक्षा अर्थ का अधिक महत्व है । उनके मत से यदि कोई अनुवादक शैली के उत्साह में मूल लेखक के भाव का उल्लंघन करता है, तो फिर वह अनुवाद नहीं, शब्दांतरण [Paraphrase] मात्र रह जाता है । टैंकाफ भाव के सक्षम एवं पूर्ण भाषांतरण को अनुवाद मानते हैं -

"His task is two-fold. First he must translate. That is to say communicate the exact meaning of his French text and secondly to give his English reader some impression of the flavour of that text, for no literary work is tasteless. Like a glass of distilled water, it has its peculiar aroma or consistency or texture which the translator must try to transmit. I deliberately put these two aspects of literary translation in that order -- exact meaning first and flavour second so as to rule out once and for all this so called translation that in its enthusiasm of points of style modifies the sense of the original."

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन के लेख में उद्धृत सी.रोबिन की परिभाषा

सी.रोबिन ने 'The linguistics of translation' नामक निबंध में अनुवाद का विवेचन उस प्रक्रिया के रूप में किया है, जिसके द्वारा लिखित या मौखिक वचन को एक भाषा से दूसरी भाषा में इस तरह अंतरित किया जाए कि उसका वही अर्थ निकले जो मूल भाषा में था । इस तरह अनुवाद में दो तत्व निहित हैं - एक तो अर्थ या कथ्य और दूसरा दोनों भाषाओं में उस अर्थ या कथ्य की अभिव्यक्ति शैली । रेबिन कहते हैं -

"Translation is process by which a spoken or written

utterance takes place in one language which is intended and presumed to convey the same meaning as a previously existing utterance in another language. It thus involves two distinct factors - a meaning or reference to some slice of reality and the difference between two languages in referring to that reality." C.Robin - 'The linguistics of translation' in A.H.Smith (Ed) p.123.

डॉ.जॉनसन की परिभाषा

श्री बालसुब्रह्मणियन लिखते हैं कि डॉ.जॉनसन ने अनुवाद की बहुत सरल और व्यापक परिभाषा दी है । उनके अनुसार अनुवाद मूल भाषा की रक्षा करते हुए उसके कथ्य को दूसरी भाषा में बदल देना है -

To translate is to change into another language retaining the sense.

ए.एच.स्मिथ द्वारा प्रदत्त परिभाषा

ए.एच.स्मिथ के शब्दों में - अनुवाद करना यथासंभव अधिक से अधिक भाव की रक्षा करते हुए उसे दूसरी भाषा में बदल देना है ।

यवरीसन के अनुवाद संबंधी विचार

भाषा मनुष्य के बीच सामाजिक संपर्क का साधन है । अनुवाद की भी विभिन्न भाषाभाषियों के बीच सेतु की भूमिका है और वह विभिन्न संस्कृतियों के बीच आदान प्रदान का सहज माध्यम होता है । इस में कोई संदेह नहीं कि अनुवाद कर्म भी प्रायः उतना ही पुरातन है, जितना कि मूल लेखन । उसका इतिहास भी उतना ही सम्मानजनक तथा जटिल है, जितना कि साहित्य की

किसी अन्य शाखा का ।

"Translation is almost as old as original authorship and has a history as honourable and as complex as that of any other branch of literature."

डॉ.जी.गोपीनाथन द्वारा प्रदत्त परिभाषा तथा उनके द्वारा उद्धृत अन्य परिभाषाएँ

डॉ.गोपीनाथन लिखते हैं कि अनुवाद एक व्याख्या है । **रोमन जैकबसन** के अनुसार भाषाओं के बीच अनुवाद से तात्पर्य है एक भाषा के शाब्दिक प्रतीकों की अन्य भाषा के शाब्दिक प्रतीकों द्वारा व्याख्या । **जेम्सहोल्म्स** काव्यानुवाद के विभिन्न रूपों की परीक्षा करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सभी तरह का अनुवाद कार्य आलोचनात्मक व्याख्या है । **रूसी लेखिका मेदनिकोवा** के अनुसार अनुवाद एक तरह से टीका टिप्पणी करना है । साहित्यिक अनुवाद में व्याख्यात्मक अन्तरण की आवश्यकता पड़ती है । व्याख्या के रूप में अनुवाद एक सृजनात्मक प्रक्रिया है । एक ही पाठ के दो अनुवादकों द्वारा किये गये अनुवादों का अवलोकन यही दिखाता है कि प्रत्येक अनुवादक उस पाठ की व्याख्या करता है । साहित्यिक रचना की सांस्कृतिक, अर्थपरक एवं सौंदर्यपरक क्षतिपूर्ति - प्रतिस्थापन आदि व्याख्यात्मक तकनीकों द्वारा ही संभव है । इस कारण से अनुवाद संबंधी प्रस्तुत दृष्टिकोण तुलनात्मक साहित्य एवं तुलनात्मक सौंदर्यशास्त्र की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है ।

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन के प्रतीकांतर संबंधी विचार

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन के अनुसार एक प्रतीक या प्रतीक वर्ग द्वारा व्यक्त विचार को दूसरे प्रतीक या प्रतीकवर्ग द्वारा व्यक्त करना प्रतीकांतर है ।

अनुवाद या भाषांतर को प्रतीकांतर का भेद मानना चाहिए ।

प्रतीकान्तर तीन प्रकार के हैं -

1. **शब्दान्तर** :- एक भाषा में व्यक्त विचार को उसी भाषा में दूसरे शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जाय तो शब्दान्तर होता है ।

उदाहरण :- आप चलिए । आप जाइए । आप तशरीफ ले जाइए । मैं नहाता हूँ । मैं स्नान करता हूँ ।

2. **माध्यमान्तर** :- अभिव्यक्ति का माध्यम बदले तो माध्यमान्तर है । राम के वन गमन का प्रसंग कविता में वर्णित है । चित्र के द्वारा यह दर्शाया जाय तो माध्यमान्तर होता है । संकेत या इशारा भी दूसरा माध्यम हो सकता है ।

3. **भाषान्तर** :- एक भाषा में व्यक्त विचार को दूसरी भाषा में व्यक्त करना भाषान्तर है । इसको अनुवाद या तर्जुमा बताया जाता है ।

अज्ञेय के अनुवाद संबंधी विचार

विचारों अथवा तात्पर्य को भिन्न भाषा में अभिव्यक्त करना या विचारों को एक भाषा से दूसरी में रूपांतरित करना अनुवाद है । किन्हीं दो शब्दों का पूर्णतः समान अर्थ नहीं होता । कविता के प्रसंग में अर्थ से क्या तात्पर्य हो सकता है ? क्या कविता वही है जो कि उसकी अन्तर्वस्तु कहलाती है ? किसी कविता में अभिव्यक्त विचार को एक भाषा से दूसरी में रूपान्तरित कर देने से अनुवादक का कार्य एक सीमा तक पूरा हो जाता है । स्वयं विचार उन शब्दों से, जिनमें कि वे पिरोये गये हैं पृथक् नहीं किये जा सकते हैं ।

जैनेन्द्र द्वारा प्रदत्त परिभाषा

श्री जैनेन्द्र के शब्दों में - ''अनुवाद का मतलब है बात को एक से दूसरी भाषा में उतार कर कहना । आवश्यक है कि वह बात दूसरी भाषा वाले के पास पहुँच जाये । बात का भाव सही-सही पहुँचे और बीच में कहीं वह अपना प्रभाव भी न खोये । जिस मात्रा में यह परिणाम आता हो उसी मात्रा में अनुवाद सफल कहा जा सकता है ।''

भाषा सिर्फ शब्दों का समूह नहीं है । शब्द का अर्थ बंधा और स्थिर होता है । लेकिन शब्दों से वाक्य तब बनता है, जब उसमें क्रिया शामिल होती है, अर्थात् भाषा में अर्थ भर नहीं होता, बल्कि सक्रिय अर्थ होता है । संज्ञा तो मूर्त अथवा वाचक हुआ करती है । लेकिन क्रिया अमूर्त होती है । इसलिए अनुवाद का काम सहज नहीं रह जाता । केवल अर्थ की बात होती तो कठिनाई नहीं होती । कोश से वह काम चल सकता है ।

1.9. शब्द ग्रहण

भारतीय भाषाएँ संस्कृत से प्रभावित हैं । अतः बहुत से तत्सम व तद्भव शब्द भारतीय भाषाओं में पाये जाते हैं । कहीं वे विपरीतार्थी हैं तो कहीं समानार्थी । अतः उनके प्रयोग में सावधानी बरतनी पड़ती है । 'ब्रह्माण्ड' शब्द कहीं विश्व के लिए प्रयुक्त है तो कहीं बृहदाकार वस्तु के लिए । अनुवाद कार्य में शब्द ग्रहण करते समय सावधानी बरतनी पड़ती है ।

1.10. अनुवाद के लिए आवश्यक बातें

श्री बालसुब्रह्मणियन के शब्दों में -

1. **स्रोत भाषा का संपूर्ण ज्ञान** :- पूरे विषय को जानने हेतु स्रोत भाषा समझने व रसास्वादन करने की क्षमता आवश्यक है ।

2. **लक्ष्य भाषा का विषयानुरूप समुचित ज्ञान** :- इस ज्ञान की मात्रा पर अनुवाद की उपादेयता निर्भर है ।

3. **विषय ज्ञान** :- विषय का ज्ञान हो, तभी अर्थ को अनर्थ किये बिना अनुवाद हो सकता है । मूल का संपूर्ण ज्ञान होने से आदर्श अनुवाद संभव है ।

1.11. ट्रान्सलेशन : निष्पत्ति और अर्थ विकास

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन के अनुसार अंग्रेजी शब्द Translation के अर्थ विकास में अर्थ परिवर्तन की प्रक्रिया स्पष्ट दृष्टिगत होती है । यह शब्द लैटिन भाषा का है, जो दो शब्द Trans और Lation के योग से निर्मित हुआ है । Trans का अर्थ है 'पार' और lation का अर्थ है 'आनयन' । इस प्रकार Translation का अर्थ है एक पार से दूसरे पार ले जाने की क्रिया । प्राचीन काल में विषय के स्थानांतर और जीवितावस्था में वर्गांतरण करने के अर्थ में भी इसी शब्द का प्रचलन था ।

Translation शब्द का एक अर्थ परिवर्तन भी था । शेक्सपियर ने 'Mid summer Night's Dream' में इस शब्द का इसी अर्थ में प्रयोग किया है । क्विन्सजुलाहे बाटम से कहता है - "Bless the Bottom bless thee. Thou art translated". इसी भाव को रन्नाउट ने " O Bottom ! thou art changed" कहकर व्यक्त किया है ।

अनुवाद भाषाओं के बीच सम्प्रेषण की वह प्रक्रिया है, जिसके लिए

संस्कृत में भाषांतर, अंग्रेजी में 'ट्रान्सलेशन', फ्रेंच में 'ट्रड्डक्शन' और अरबी में 'तर्जुमा' कहते हैं ।

संस्कृत में भाषांतर या रूपान्तर के लिए 'टीका', 'भाषा', 'छाया' आदि शब्द चलते हैं । उन्नीसवीं सदी से हिन्दी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगला, असमिया, कन्नड एवं तेलुगु में अनुवाद शब्द चल रहा है । किसी भाषा में लिखी गयी या कही गयी बात को पीछे किसी अन्य भाषा में लिखना या कहना अनुवाद है ।

1.12. निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद मूलतः भाषातंरित भावगत वह प्रक्रिया है, जिस में शब्द और लिपि का चोला बदल जाता है, पर आत्मा मूल की ही रहती है । अनुवाद प्रतीकांतर का एक रूप है जिसे भाषातंरण भी कहते हैं ।

विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान उन भाषाओं को सीखकर प्राप्त नहीं कर सकते । यह ज्ञान अनुवाद के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है । ज्ञान की पुस्तकों का भाषांतरण ही अनुवाद है ।

प्रतीकान्तर

अनुवाद के आचार्यों का कथन है कि अनुवाद में प्रतीकान्तरों का निक्षेप होता है, अर्थात् स्रोत भाषा के शब्द में नवीन अर्थ के लिए लक्ष्य भाषा में उपलब्ध शब्दों का समानार्थी प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया जाता है ।

1.13. शब्दावली

इकाई	-	Unit
माध्यम	-	Medium
कला	-	Art
तंत्र	-	Technic, Technique
शैली	-	Style
मुहावरा	-	Idiom
लोकोक्ति	-	Proverb
अनुवाद की समस्याएँ	-	Problems of Translation
महाकाव्य	-	Epic
अलंकार	-	Figures of Speech
पुनरीक्षण	-	Review
अनुभाग	-	Section
इतिहास	-	History
कोश	-	Dictionary
प्रक्रिया	-	Process
परंपरा	-	Tradition
समीक्षा	-	Criticism
आवृत्ति	-	Repetition
जनप्रिय	-	Popular
अनुवाद कला	-	Art of Translation
पाठ्यक्रम	-	Syllabus
धातु	-	Verb Root
दुहराने की प्रक्रिया	-	Process of repetition
व्याकरणिक रूप	-	Grammatical forms
प्रतीक	-	Symbol
स्त्रोत भाषा	-	Source Language
लक्ष्य भाषा	-	Target Language
परकाय प्रवेश	-	Entering into the body of another person

1.14. सारांश

प्रस्तुत निबंध में अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं । यह तथ्य प्रकाश में लाया गया है कि प्राचीन काल में अनुवाद का अर्थ था ज्ञात विषय का पुनःकथन, जबकि आधुनिक युग में इसका अर्थ है किसी भी पुस्तक का अथवा किसी भी विषय का भाषांतरण ।

आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है । इस निबंध में अनुवाद की महत्ता का भी निरूपण किया गया है । संपूर्ण ग्रंथ के विभिन्न विषयों का उल्लेख किया गया है । पठनीय अंश विभिन्न परिच्छेदों में दिये गये हैं । संस्कृत के विभिन्न विद्वानों द्वारा संप्रदत्त अनुवाद संबंधी परिभाषाओं का विवरण दिया गया है । संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि विद्वानों की परिभाषाएँ भी इस निबंध में दी गई हैं । अनुवाद शब्द 'अनु' + 'वाद' से बना है । इस शब्द का संबंध 'वद्' धातु से है । इसका पूर्ण विवरण दिया गया है । प्राचीन काल में इसका अर्थ था किसी के कहने के बाद कहना - पुनःकथन ।

शब्दचिंतामणि में अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है - ''प्राप्तस्य पुनःकथने ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने'' - अर्थात् पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना ।

अनुवचन :- गुरु के कहे हुए वचन को छात्रों द्वारा पुनः कहा जाना - यह अनुवाक् के रूप में प्रयुक्त होता था ।

ऋग्वेद, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषद, अष्टाध्यायी, कय्यट कृति, सूत्रग्रंथ आदि में पुनःकथन, सार्थक आवृत्ति आदि अर्थों में अनुवाद शब्द का प्रयोग हुआ है ।

आधुनिक युग में इसका प्रयोग भाषांतरण के रूप में हो रहा है । चौदहवीं व पंद्रहवीं सदियों में कथा वार्ता आदि का भाषांतरण हिन्दी में होने लगा । इसे भाषा-टीका कहते थे ।

फारसी भाषा में अनुवाद के लिए तर्जुमा शब्द प्रयुक्त होता है । अनुवाद के लिए उल्था शब्द भी प्रचलित हुआ । आरंभ में इसे भाषानुवाद कहते थे । धीरे-धीरे आधुनिक भारतीय भाषाओं में भाषानुवाद के लिए अनुवाद शब्द प्रयुक्त होने लगा । यह निरूपित किया गया है कि अनुवाद प्रतीकांतर है ।

अंग्रेजी में अनुवाद के लिए 'ट्रान्सलेशन' शब्द का प्रयोग होता है । इस निबंध में सफल अनुवाद के लिए आवश्यक तत्व निरूपित किये गये हैं । श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन, प्रो.जी.गोपीनाथन, डॉ.मिताली भट्टाचारंजी, डॉ. थियोडोर सेवरी, स्याम्युअल जॉनसन, रॉबर्ट गिब्स, लियोनार्ड फॉस्टर, एल. डब्ल्यु. टैंकाफ, सी.रोबिन, रोमन ज्याक बसन, जैम्स होल्म्स, जैनेन्द्र कुमार आदि द्वारा प्रदत्त अनुवाद संबंधी परिभाषाओं तथा विचारों को इस निबंध में व्यक्त किया गया है ।

श्री बालसुब्रह्मणियन, प्रा.जी.गोपीनाथन आदि की परिभाषाओं की चर्चा इसमें की गयी है ।

1.15. प्रश्न

1. प्राचीन आचार्यों द्वारा संप्रदत्त अनुवाद की विभिन्न परिभाषाओं का विवेचन कीजिए ।
2. आधुनिक युग में अनुवाद के संबंध में संप्रदत्त विभिन्न परिभाषाओं का विश्लेषण कीजिए ।

1.16. अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

1. प्राचीन आचार्यों द्वारा संप्रदत्त अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ

प्राचीन आचार्यों ने अनुवाद शब्द का प्रयोग पुनः कथन, अनुवचन आदि अर्थों में किया है । कालांतर में यह अर्थ भाषांतरण के रूप में परिवर्तित हो गया है । पाश्चात्य संसार में भी अनुवाद शब्द के अर्थ में परिवर्तन आया है ।

अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ इस प्रकार हैं -

अंश - 1. संस्कृत में अनुवाद की परिभाषाएँ

पुनःकथन परिभाषा
अनुवचन परिभाषा
शब्दचिंतामणि परिभाषा
ऋग्वेद में अनुवाद की परिभाषा
ब्राह्मण ग्रंथों की परिभाषा
उपनिषदों में निहित परिभाषा
अष्टाध्यायी में निहित परिभाषा
कय्यट की परिभाषा
सूक्त ग्रंथों में उपलब्ध परिभाषा
ग्रीक में उपलब्ध परिभाषा
ट्रान्सलेशन के विभिन्न अर्थ

इस प्रश्न के उत्तर में प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रदत्त परिभाषाएँ दी जानी चाहिए ।

2. आधुनिक युग में अनुवाद के संबंध में संप्रदत्त विभिन्न परिभाषाएँ

आधुनिक युग में अनुवाद शब्द के अर्थ में परिवर्तन आ गया है । अब इस शब्द का अर्थ पुनःकथन या अनुवचन नहीं है । आधुनिक युग में अनुवाद शब्द का प्रयोग 'भाषांतरण' के अर्थ में होता है । संसार की विभिन्न भाषाओं में

विभिन्न अर्थों में अनुवाद शब्द का प्रयोग हो रहा है । इन अर्थों में अधिक भेद नहीं है ।

भाषांतरण के अर्थ में अनुवाद शब्द की नवीन परिभाषाएँ इस प्रकार हैं-

1. ट्रान्सलेशन = भाषांतरण
2. फारसी में तर्जुमा = उल्था = भाषांतरण
3. भाषानुवाद = प्रतीकांतर ।

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन की परिभाषा
डॉ.जी.गोपीनाथन की परिभाषा
डॉ.थिरोडोर की परिभाषा
स्याम्युयल जॉनसन की परिभाषा
राबर्ट गिब्स की परिभाषा
लियोनार्ड की परिभाषा
श्री रोबिन की परिभाषा
श्री टैंकाफ की परिभाषा
रोमन जाक की परिभाषा
जैनेन्द्र कुमार की परिभाषा
डॉ.मिताली भट्टाचारजी की परिभाषा

1.17. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद - डॉ.जी.गोपीनाथन
3. अनुवाद कला - डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर
4. व्यावहारिक हिन्दी - डॉ.सोमेश्वर एवं डॉ.राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव

निबन्ध

1. अनुवाद - डॉ.मिताली भट्टाचार्जी
2. अनुवाद - डॉ.पी.के.बालसुब्रह्मणियन

3. अनुवाद - एक सांस्कृतिक सेतु - डॉ.जी.गोपीनाथन
4. अनुवाद - एक वैज्ञानिक कला (संस्कृति पत्रिका से)
5. साहित्य के अनुवाद की समस्या - डॉ.नगेन्द्र
6. साहित्य का अनुवाद - डॉ.महेन्द्र चौधरी
7. सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - डॉ.प्रभाकर माचवे
8. अनुवाद - एक विचार - जैनेन्द्र कुमार
9. अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ.वी.एस.नरवणे
   (रूपांतर : प्रद्युम्न कृष्ण दीक्षित)
10. अनुवाद का भाषा वैज्ञानिक पक्ष - डॉ.सत्यनारायण
11. अनुवाद : एक कला - श्री तीर्थ वसंत (अनु. - वेदप्रकाश)
12. अनुवाद - आचार्य बी.यन.केशवमूर्ति

NOTES

NOTES

इकाई दो

अनुवाद का महत्व

2.0. प्रस्तावना

2.1. उद्देश्य

2.2. भाषा की उपलब्धि

2.3. अनुवाद की उपलब्धियाँ

2.3.1. अनुवाद द्वारा विश्व कुटुम्ब की भावना का प्रचार : डॉ.मितालीजी का मंतव्य

2.3.2. अनुवाद : एक सामाजिक उपलब्धि

2.3.3. अनुवाद का बहुमुखी प्रयोग

2.3.4. अनुवाद के बढ़ते चरण

2.3.5. अनुवाद एवं विश्वभाषा ग्रन्थ

2.3.6. तुलनात्मक साहित्यिक विवेचन में अनुवाद का स्थान

2.3.7. राष्ट्रीय साहितय का निर्माण : डॉ.मिताली का मत

2.3.8. अनुवाद संपर्क-साधन के रूप में

2.3.9. औद्योगिक उन्नति में अनुवाद का स्थान

2.3.10. अनुवाद एवं राष्ट्रीय भावानात्मक एकता

2.3.11. कोश कार्य निर्माण

2.3.12. भाषा का विकास और अनुवाद

2.3.13. समस्त भाषाओं का सेतुबंधन : डॉ.मितालीजी का मत

2.3.14. व्यष्टि का समष्टीकरण

2.3.15. अन्य भाषागत विचार परिचय

2.3.16. ज्ञान का सेतु बंधन

2.3.17. ज्ञान संवाहक

2.3.18. मानव की सर्वोन्नत उपलब्धि

2.3.19. विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का परिचय

2.3.20. अनुवाद विश्वमानवता की एकता के सेतु के रूप में

2.3.21. मानवीय एकता का अद्‌भुत संधायक

2.3.22. अनुवाद का द्विगुणीकृत महत्व

2.3.23. अनुवाद : भावैक्य का महासेतु

2.3.24. अनुवाद का वैश्विक प्रयोग

2.3.25. अनुवाद विश्व-संस्कृति का संवाहक

2.3.26. अनुवाद एवं विश्व साहित्य का निर्माण

2.3.27. अनुवाद सांस्कृतिक सेतु के रूप में

2.4. निष्कर्ष

2.5. सारांश

2.6. संभाव्य प्रश्न

2.7. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

2.8. शब्दावली

2.9. संदर्भ ग्रंथ तथा निबंध सूची

2.0. प्रस्तावना

इस घटक में आपको अनुवाद के महत्व की जानकारी दी जा रही है । अनुवाद के विस्तार और व्याप्ति का ज्ञान हासिल करते हुए आप यह जान सकेंगे कि अनुवाद आधुनिक वैज्ञानिक युग में वटवृक्ष की तरह संव्याप्त हो रहा है । वह स्वयं भाषा की एक महान उपलब्धि बन रहा है । अनुवाद के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की श्री संपत्ति कई भाषाओं में संव्याप्त होती है । आप इस तथ्य से अवगत होंगे कि अनुवाद धीरे-धीरे विश्व बंधुत्व एवं मानवीय एकता का सेतु-केतु बन रहा है । अनुवाद विज्ञान और कला की विभिन्न शाखाओं की ज्ञान संपत्ति का संवाहक बन गया है । तुलनात्मक साहित्यिक विवेचन में भी अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । औद्योगिक उन्नति, राष्ट्रीय भावात्मक एकता के संप्रवर्धन, व्यष्टि का समष्टीकरण, विश्व मानवतावादी चेतना, विश्व संस्कृति आदि का संवाहक बनकर अनुवाद अत्यंत गरिमामय स्थान का अधिकारी बन रहा है ।

2.1. उद्देश्य

यह घटक अनुवाद के महत्व को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से प्रस्तुत किया जा रहा है । अनुवाद के स्वरूप को समझने हेतु यह आवश्यक है कि उसके विस्तार एवं व्याप्ति का ज्ञान हासिल करें । किसी भी विषय का पूर्ण विवेचन तभी संभव है, जब उसका महत्व प्रकाश में लाया जाता है । अनुवाद वटवृक्ष की तरह सर्वत्र संव्याप्त हो रहा है । उसका स्वरूप भी दिन-ब-दिन बढ़ रहा है । वह वामन स्वरूप से विश्वरूप ग्रहण कर रहा है । कला, विज्ञान एवं तंत्र - इन सभी विशेषताओं से वह विभूषित हो रहा है । वस्तुतः हम जिस

युग में साँस ले रहे हैं, वह अनुवाद का युग है । ज्ञान-विज्ञान के अनंत विषयों के ग्रंथ किसी एक भाषा में प्रणीत नहीं हैं । संसार की विभिन्न भाषाएँ यथा अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी, चीनी आदि भाषाओं में तंत्र एवं विज्ञान के नये आविष्कारों का पूर्ण विवरण उल्लिखित है । इन सब का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने हेतु उन भाषाओं में रचित तद्विषयक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए ।

तदर्थ उन सभी भाषाओं का ज्ञानार्जन आवश्यक है । कोई भी व्यक्ति इन सभी भाषाओं का ज्ञान एक जन्म में प्राप्त नहीं कर सकता । अनुवाद के माध्यम से इन विषयों का ज्ञान हम हासिल कर सकते हैं । यदि अनुवाद न हो तो इन विषयों का ज्ञान अन्य माध्यम से प्राप्त नहीं कर सकते । अनुवाद ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम विश्व की भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान को करतलामलक बना सकते हैं ।

2.2. भाषा की उपलब्धि

भाषा मानव की सबसे बड़ी उपलब्धि है । भाषा को प्राप्त कर मानव ने मानो सब कुछ प्राप्त कर लिया है । मानव और पशु के बीच में विद्यमान विभाजन की रेखा भाषा ही है, जो संचित ज्ञान-विज्ञान की समूची संपत्ति को भाषा के माध्यम से पीढ़ी - दर - पीढ़ी पहुँचा सकता है । वही मनुष्य है, अर्थात् भाषा ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है ।

2.3. अनुवाद की उपलब्धियाँ

अनुवाद कई उपलब्धियों का कल्पवृक्ष है । अनुवाद मानव को ज्ञान के सर्वोन्नत शिखर तक ले जा रहा है ।

2.3.1. अनुवाद द्वारा विश्व कुटुम्ब की भावना का प्रचार : डॉ.मितालीजी का मंतव्य

अनुवाद की महत्ता पर प्रकाश डालती हुई डॉ.मिताली कहती हैं कि अनुवाद विभिन्न भाषाओं में निहित ज्ञान भण्डार प्रदान कर हमारे मन और मस्तिष्क को अभूतपूर्व विस्तार प्रदान करता है । इस साधन के द्वारा हम जानने लगते हैं कि हमारे विचार एक जैसे हैं । विभेदों की खाई से ऊपर उठकर हम समानता की दिशा में अग्रसर होते हैं । अनुवाद मानव जगत् के तत्व हमारे सम्मुख धरता है । इन तत्वों के परिणामस्वरूप हम ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सपने को सत्य बना लेते हैं ।

2.3.2. अनुवाद : एक सामाजिक उपलब्धि

पहले अनुवाद का अधिक उपयोग धार्मिक क्षेत्र में होता था । अब इसका सर्वाधिक उपयोग समस्त समाज के लिए हो रहा है । अब अनुवाद रंजक साहित्य को ही नहीं, वरन् ज्ञान साहित्य को भी शत शत पंख प्रदान कर रहा है । समूचे समाज के रूपायन एवं विकसन में अनुवाद का उल्लेखनीय योगदान दिखायी पड़ता है ।

2.3.3. अनुवाद का बहुमुखी प्रयोग

अनुवाद आरम्भ में रंजन का साधन था । अब उसका क्षेत्र दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है । यह केवल साहित्य तक सीमित नहीं है । अपनी विकास यात्रा में प्राप्त समस्त शास्त्रों के ज्ञान दीप की दिव्य कांति-किरणें अनुवाद के माध्यम से हम अपनी भाषा में संचित कर रहे हैं । क्या भूगोल शास्त्र, क्या खगोल शास्त्र और क्या संगणक विज्ञान - इन सब की संपत्ति

विभिन्न भाषाओं में बिखरी हुई है । आज हम अनुवाद की सहायता से अपनी भाषा में इन सब को रूपांतरित कर रहे हैं ।

2.3.4. अनुवाद के बढ़ते चरण

समाजवादी देशों ने समकालीन भारतीय साहित्य के अनुवाद में अधिक उत्साह दिखाया है । युनेस्को द्वारा अनूदित कराये गये प्रेमचंद के गोदान, विभूतिभूषण के पथेर पांचाली, मलयालम के चेम्मीन आदि ग्रन्थों ने भी वर्तमान भारत के साहित्य में दिलचस्पी बढ़ाई है ।

2.3.5. अनुवाद एवं विश्वभाषा ग्रन्थ

डॉ.जी.गोपीनाथन के शब्दों में भारत जैसे विकासशील बहुभाषा भाषी राष्ट्र में प्रशासन, कानून, शिक्षा, व्यवसाय, विज्ञान एवं कृषि के क्षेत्रों में जन भाषाओं की प्रतिष्ठा का नया युग आ रहा है । न केवल भावनात्मक एकता को बनाये रखने के लिये, बल्कि ज्ञान-विज्ञान के नये स्पन्दन को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिये भी आज भारतीयों के लिये अनुवाद अनिवार्य हो गया है । भारतीय भाषाएँ क्रमशः उच्च शिक्षा का माध्यम बनती जायेंगी । साथ ही विश्वभाषाओं से उत्तम ग्रन्थों के अनुवाद की आवश्यंकता भी बढ़ती जाएगी । अनुवाद के द्वारा हम मानव के इस विश्व कुटंब में संपूर्ण एकता एवं समझदारी की भावना विकसित कर सकते हैं, मैत्री एवं भाईचारे को प्रवर्धित कर सकते हैं और गुटबन्दी, संकुचित प्रान्तीयतावाद आदि से मुक्त होकर मानवीय एकता के मूल बिन्दु तक पहुँच सकते हैं ।

आधुनिक युग अनुवाद का युग है । अब अनुवाद के चरण उन्नति की

दिशा में बढ़ते जा रहे हैं । विभिन्न भाषाभाषियों के पारस्परिक संपर्क एवं संप्रवर्धन से अनुवाद का महत्व और भी बढ़ गया है । जिन राष्ट्रों में बहुभाषिकता है, वहाँ पारस्परिक विचार विनिमय के लिए अनुवाद का प्रश्रय लिया जा रहा है । शास्त्रीय ग्रन्थों में निहित ज्ञान भंडार को विभिन्न भाषाओं में प्रतिष्ठापित करने में अनुवाद का अत्यधिक साहाय्य लिया जा रहा है ।

सामाजिक, व्यावहारिक, शैक्षणिक एवं ज्ञानात्मक संदर्भों में अनुवाद की भूमिका अतीव महत्वपूर्ण है । द्विभाषिकता की स्थिति में अनुवाद का महत्व और भी बढ़ जाता है । सामाजिक एवं व्यावहारिक संदर्भों में अनुवाद के प्रकाश से हमें नवीन ज्ञान किरणें संप्राप्त हो रही हैं । शैक्षणिक तथा ज्ञानात्मक संदर्भों में अनुवाद का प्रयोग साध्य एवं साधन दोनों रूपों में किया जा रहा है । भाषा शिक्षण की एक विधि के रूप में अनुवाद प्रसिद्ध है । व्याकरण की अनुवाद पद्धति अत्यंत उपयोगी है । व्यतिरेकी भाषा विज्ञान में दो भाषाओं की तुलना अनुवाद द्वारा संपन्न होती है । भाषाओं के साम्य तथा वैषम्य के निरूपण एवं विश्लेषण में व्यतिरेकी भाषा विश्लेषण अनुवादात्मक विश्लेषण है ।

2.3.6. तुलनात्मक साहित्यिक विवेचन में अनुवाद का स्थान

तुलनात्मक साहित्यिक विवेचन में विभिन्न भाषाओं के साहित्यों में निहित सदृश विदृश अंशों का अर्थबोध अनुवाद के द्वारा ही संपन्न होता है । डॉ.मिताली के शब्दों में संस्कृति का प्रसाद अनुवाद के द्वारा संप्राप्त होता है । साहित्य के अनुवाद से संस्कृति की सूक्ष्म अंतर्धारा विभिन्न भाषाओं में प्रसरित होती है । साहित्यिक अनुवाद हमारे सम्मुख विभिन्न भाषाभाषियों की सांस्कृतिक गरिमा का

चित्र प्रस्तुत करता है । अनुवाद के माध्यम से ही हम जान सकते हैं कि ग्रीक संस्कृति और भारतीय संस्कृति में अनेक सदृश अंश निहित हैं ।

2.3.7. राष्ट्रीय साहित्य का निर्माण : डॉ.मिताली का मत

डॉ.मिताली भट्टाचारजी के शब्दों में अनुवाद के द्वारा भाषाओं का बहुमुखी विकास होता है । अन्य भाषाओं की अंतर्धारा हमारी भाषा की साहित्यिक अंतर्भूमि को सरस बनाती है । एक राष्ट्र की वास्तविक पूंजी उसका राष्ट्रीय साहित्य है । हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है । राष्ट्र भाषा वही हो सकती है, जिसमें समूचे राष्ट्र की नाड़ी का स्पंदन हो । डॉ.एस.एम.रामचन्द्र स्वामी लिखते हैं कि वही राष्ट्रभाषा हो सकती है, जिसमें राष्ट्रीय संस्कृति प्रतिबिंबित हो । यह राष्ट्रीय संस्कृति-प्रतिफलन अनुवाद के द्वारा ही संभव है । हिन्दी में जब तक प्रत्येक आंचल की भाषाओं के साहित्य का अनुवाद नहीं होगा, तब तक हमारी राजभाषा, राष्ट्रभाषा संपूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व नहीं कर पायेगी । अनुवाद के माध्यम से कन्नड़, तेलुगु, तमिल, बंगाली, गुजराती आदि सभी भाषाओं की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सुगंध संप्रसरित हो सकती है । तात्पर्य यह है कि राष्ट्रीय साहित्य का निर्माण अनुवाद के माध्यम से ही हो सकता है ।

2.3.8. अनुवाद संपर्क-साधन के रूप में

अनुवाद एक राष्ट्र अथवा विश्व के विभिन्न प्रांतों के बीच में संपर्क-साधन भी है । राज्य आपस में या केन्द्र सरकार के साथ संपर्क भाषा हिन्दी अथवा

अंग्रेजी में पत्राचार करते हैं । यह पत्राचार अनुवाद के माध्यम से अधिक सफल होता है । अपनी भाषा की सामग्री अनूदित कर सर्वत्र पत्राचार द्वारा भेजते हैं ।

2.3.9. औद्योगिक उन्नति में अनुवाद का स्थान

तंत्रज्ञान अर्थात् प्रौद्योगिकी का ज्ञान अनुवाद के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं । फ्रॉन्स, ब्रिटन, जर्मनी, रूस, अमेरिका आदि तंत्रज्ञान संपन्न देशों की वैज्ञानिक ज्ञान गंगा उन देशों की भाषाएँ पढ़कर प्राप्त नहीं कर सकते । उन देशों की भाषाओं में निहित तंत्रज्ञान की संपत्ति हम अनुवाद की शरण में जाकर ही प्राप्त कर सकते हैं ।

2.3.10. अनुवाद एवं राष्ट्रीय भावात्मक एकता

राष्ट्रीय भावात्मक एकता का रूपायन भाषा, साहित्य एवं संस्कृति से संपन्न होता है । हमारी सामाजिक संस्कृति का परिचय देश के विभिन्न भाषा-भाषी नागरिकों को अनुवाद ही प्राप्त करा सकता है ।

2.3.11. कोश कार्य निर्माण

वस्तुतः कोश कार्य एक प्रकार का अनुवाद ही है । समभाषिक कोश में एक भाषा के भीतर अनुवाद होता है । इसे समभाषिक अनुवाद कहते हैं । द्विभाषिक कोश में दो भाषाओं के बीच अन्य भाषिक अनुवाद होता है ।

2.3.12. भाषा का विकास और अनुवाद

भाषा के विकांस में अनुवाद का योगदान महत्वपूर्ण है । यह विकास

विषय-वस्तु एवं अभिव्यक्ति-भंगिमा दोनों दृष्टियों से संपन्न होता है । अनुवाद प्रक्रिया में शब्दों को नये अर्थ प्राप्त होते हैं । नई प्रयुक्तियाँ प्रकाश में आती हैं । साथ ही भाषा के नव विकसित भेद हमारे सम्मुख आते हैं । आधुनिक प्रशासनिक हिन्दी व पत्रकारिता हिन्दी के नये भेद हैं । भाषा का यह नियोजन राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का अंग हैं ।

2.3.13. समस्त भाषाओं का सेतुबंधन : डॉ.मितालीजी का मत

अनुवाद की महत्ता निरूपित करती हुई डॉ.मिताली भट्टाचारजी लिखती हैं कि अपनी सभ्यता की यात्रा में मानव ने कई मंजिलें पार की हैं । उसने बहुत कुछ पाया, बहुत कुछ खोया, पर उसके साथ-साथ साँस और प्राण की तरह रहने वाली उसकी माता भाषा ही है । उसने आग का आविष्कार कर कई यंत्र बनाये । पानी से विद्युत निकाली, प्रकृति पर विजय प्राप्त की । सभ्यता और संस्कृति की यात्रा में उसने कई उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं । इसके द्वारा उसने अपनी मुट्ठी में ज्ञान-विज्ञान को बाँध रखा है । पर ज्ञान-विज्ञान की यह रत्न राशि किसी एक भाषा में नहीं है । विभिन्न भाषाओं में बिखरी हुई है । इन सभी भाषाओं को सीखकर उन्हें प्राप्त करना संभव नहीं है । इन सभी भाषाओं में निहित ज्ञान संपत्ति अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषा में रूपांतरित कर मानव लाभान्वित हो सकता है । इस प्रकार सभी भाषाओं की ज्ञान संपत्ति प्राप्त करने का एक मात्र साधन अनुवाद ही है ।

2.3.14. व्यष्टि का समष्टीकरण

भाषा मानव को व्यष्टि से समष्टि बनाती है, जबकि अनुवाद उसे

महासमष्टि का सदस्य बनाता है । ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्था ही भाषा है । यह भाषा अनुवाद के माध्यम से मनुष्य की सहायिका बनती है । भाषा के माध्यम से विभिन्न भाषा-समुदाय आपस में विचार विनिमय करते हैं । अनुवाद कई भाषाओं के माध्यम से मानव को बहुसमाज - सापेक्ष बनाता है, अर्थात् एक हिन्दीभाषी कन्नड़ भाषा समुदाय के विचारों को हिन्दी में रूपांतरित कर कन्नड की ज्ञान संपत्ति प्राप्त कर लेता है । इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा में निहित ज्ञान राशि को अनुवाद के द्वारा प्राप्त कर लेता है । यह स्पष्ट है कि अनुवाद कई भाषा समुदायों का ज्ञान रूपी अमृत अन्य भाषा समुदायों को प्रदान करता है ।

2.3.15. अन्य भाषागत विचार परिचय

एक राष्ट्र में कई भाषाएँ होती हैं । इनमें उपलब्ध ज्ञान साहित्य अथवा शक्ति साहित्य को अनुवाद के माध्यम से सभी व्यक्ति प्राप्त कर लेते हैं । कन्नड भाषाभाषी मराठी-भाषी के विचारों से अवगत नहीं होता, क्योंकि दोनों के बीच में भाषा की दीवार खड़ी है । ये एक दूसरे को समझ नहीं पाते हैं । अनुवाद के माध्यम से मराठी-भाषी के विचार कन्नड-भाषी जान सकता है । इसी प्रकार मराठी-भाषी अनुवाद के माध्यम से कन्नड-भाषी के विचारों से परिचित होता है ।

2.3.16. ज्ञान का सेतु बंधन

अनुवाद के माध्यम से हम विभिन्न भाषाभाषियों के समुदाय एवं ज्ञान से परिचित होते हैं तथा एक दूसरे को विभिन्न भाषाभाषी पूर्णतः समझ लेते हैं । हम यह जानने लगते हैं कि हमारी संस्कृतियों में एक विचित्र साम्य है । इस

प्रकार अनुवाद ज्ञान का सेतु-बंधन बनता है ।

2.3.17. ज्ञान संवाहक

आधुनिक युग में ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार के साथ संसार की विभिन्न भाषाओं में विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का संप्रसरण हो रहा है । भौतिकी, सांख्यिकी, गणित, जीवशास्त्र आदि में और न जाने कितनी विभिन्न शाखाओं में असंख्य पुस्तकें लिखी जा रही हैं । इन सभी ग्रन्थों में निहित ज्ञान को प्राप्त करना असंभव है, क्योंकि ये पुस्तकें किसी एक भाषा में न हो कर विभिन्न भाषाओं में प्रणीत हैं । इन सभी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना संभव नहीं है । इन सबका ज्ञान केवल अनुवाद के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है । इस प्रकार अनुवाद ज्ञान संवाहक बन गया है ।

2.3.18. मानव की सर्वोन्नत उपलब्धि

विकास की यात्रा में मानव ने न जाने कितनी असंख्य उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं ! जीवन और जगत को पूर्ण बनाने हेतु उसने आग का आविष्कार किया । कृषि क्षेत्र में अपूर्व उन्नति प्राप्त की । धरती, आकाश, नदी, समुद्र हर कहीं उसके चरणों के चिह्न अंकित हैं । इन विभिन्न क्षेत्रों में उसने जो कुछ पाया, उसका मूल साधन भाषा है । भाषा संपत्ति को प्राप्त कर मानो उसने सब कुछ प्राप्त कर लिया । अपनी भाषा के द्वारा उसने समाज के साथ पूर्ण संपर्क स्थापित किया । पर अन्य भाषाओं में ज्ञान की जो संपत्ति संचित हुई है, उससे वह वंचित रहा । कन्नड-भाषी पंजाबी भाषा में लिखित साहित्य का प्रसाद नहीं पाता ।

इसी प्रकार अंग्रेजी, हिन्दी, चीनी, जापानी भाषाओं में रचित ग्रन्थों से वह लाभ नहीं उठा सकता । अन्य भाषाओं में निहित ज्ञान पाने का एक मात्र मार्ग अनुवाद है । भाषा मानव की सर्वोन्नत उपलब्धि है । किन्तु मानव जाति की ज्ञान-गंगा किसी एक भाषा में उपलब्ध नहीं है । डॉ.मिताली के शब्दों में उन सभी भाषाओं की नदियों में बहते हुए अमृत का रसपान करने के लिए उसे अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है ।

2.3.19. विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का परिचय

संसार में यदि एक भाषा होती तो सभी मानव उसी में भाव एवं विचार व्यक्त करते । पर ऐसा नहीं है । हजारों भाषाएँ संसार के विभिन्न खंडों में प्रचलित हैं । इन भाषाओं में अपूर्व, अद्‌भुत व सुन्दर साहित्य विरचित है । उन सबका रसास्वादन उन भाषाओं के ज्ञान के बिना संभव नहीं है । बंगाली भाषा जाने बगैर कृत्तिवास रामायण में विद्यमान राम की शक्तिपूजा का आनंद नहीं उठा सकते । इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा जाने बगैर शेक्सपियर के सुन्दर नाटकों का आनंद उठाना असंभव है । सहस्त्राधिक भाषाओं में रसात्मक साहित्य की मधुधारा बह रही है । इन सभी भाषाओं में निहित सुन्दर काव्य, नाटक, उपन्यास आदि का रसास्वादन मानव अब केवल अनुवाद के द्वारा ही कर सकता है । हम जीवन में बड़ी कठिनाई से चार पाँच भाषाएँ सीख सकते हैं । अन्य भाषाओं के विद्युत्प्रकाश से हम वंचित रह जाते हैं । अनुवाद वह महत्वपूर्ण साधन है, जिसके द्वारा हम इलियट का काव्य, पैराडाइस लास्ट, युद्ध और शांति, दास कैपिटा आदि विभिन्न भाषाओं की कृतियों की सौंदर्यश्री प्राप्त कर सकते हैं ।

2.3.20. अनुवाद विश्वमानवता की एकता के सेतु के रूप में

डॉ.जी.गोपीनाथन के शब्दों में विश्व के विभिन्न प्रदेशों के मानव समुदायों के बीच अन्तः संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की दार्शनिक एवं जीववैज्ञानिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है । अनुवाद मानव की मूलभूत एकता का, व्यक्ति चेतना एवं विश्वचेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है । जीव वैज्ञानिक एवं अनुवाद चिंतक थियोडर सेवरी का विचार है - अनुवाद इसलिए संभव हो पाता है कि विश्व के विभिन्न प्रदेशों के मानव मूल रूप से एक ही वंश के हैं । जार्ज स्टीनक का कथन है कि अनुवाद भाषाओं के गहन स्तरों पर पायी जाने वाली मानवीय मूलभूत एकता का अद्‌भुत प्रमाण है । अनुवाद के द्वारा हम मानवों की मूलभूत ऐतिहासिक एवं सामाजिक एकता का अनुभव करते हैं, जो मानवीय भाषा के प्रत्येक मुहावरे के अन्तराल में निहित है । अनुवाद करने का तात्पर्य है दो भाषाओं की बाह्य भिन्नताओं की तह में जाकर मानवीय अस्तित्व के समान तत्वों को प्रकाश में लाना । भाषा भिन्नता की खाई में स्थित विश्व मानवता के बीच अनुवाद एक सक्षम सांस्कृतिक सेतु का कार्य करता है, जिसके माध्यम से हम समय तथा दूरी के अन्तराल को पार करते हैं ।

2.3.21. मानवीय एकता का अद्‌भुत संधायक

प्रो.राधाकृष्ण मुदलियार के शब्दों में अनुवाद केवल ज्ञान का प्रसारक ही नहीं, वरन् मानवीय एकता का अद्‌भुत संधायक भी है । भाषा मानवीय एकता का सेतु है । भाषा के बिना मानव सामाजिक नहीं बन सकता । एक भाषा का ज्ञान उस भाषा के समाज के साथ अपना हृदय बढ़ा सकता है । अन्य भाषा-भाषी समाज के सुख-दुःख से अपरिचित रह जाता है । वे एक दूसरे से

हृदय नहीं मिला सकते, क्योंकि उनके बीच में भाषा की दीवार खड़ी रहती है । कई बार यह सत्य देखा गया है कि अंग्रेजी भाषा-भाषी इटालियन भाषियों के साथ बैठना नहीं चाहते । तमिल-भाषी अपने को मलयालम-भाषी से दूर रखता है । इसी तरह तेलुगु-भाषी, कन्नड-भाषी के साथ व्यवहार करना नहीं चाहता, क्योंकि वे एक दूसरे के विचारों को भाषा ज्ञान के बिना बिलकुल समझ नहीं पाते । उन्हें दुभाषियों की सहायता लेनी पड़ती है । पर ये दुभाषी हमारे बीच में कब तक रहेंगे ?

अब इन सब मानवों में एकता लाने हेतु अनुवाद का प्रश्रय लेना पड़ता है । अनुवाद के द्वारा हम यह जानते हैं कि इन सब लोगों के सुख-दुःख एक-जैसे हैं । ये सभी प्रेम के पात्र हैं, न कि द्वेष के । इन भाषाओं में रचित साहित्य अनुवाद के माध्यम से पढ़कर मानव अनुभव करने लगते हैं कि इन सब के हृदयों में प्रेम की प्यास एक-जैसी है । चाहे कन्नड भाषी हो या पंजाबी, चाहे सिंधी हो या रूसी-अपनी माता से दूर रहकर एक ही तरह के दुःख का अनुभव करता है । अनुवाद साहित्य हमें यह बताता है कि मानव जाति हर कहीं एक जैसी है । सभी भाषाओं के कलशों में एक ही तरह का पीयूष है और इन भाषा-भाषियों के हाथों में जो पात्र हैं, उनमें संचित आँसुओं की गंगा एक जैसी है । अब समझ गये होंगे कि अनुवाद साहित्य के पठन-पाठन से हम जान पाते हैं कि हजारों भेदों के बीच में भी इस विशाल भूखंड में बिखरी हुई मानव जाति एक जैसी है । अनुवाद के द्वारा हम भेद-भाव के तमस्तोम से निकलकर मानवीय एकता के प्रकाश पुंज की दिशा में आगे बढ़ते हैं । मौलिक साहित्य की तरह ही अनूदित साहित्य भी हमें एकता, समन्वय, सामंजस्य तथा समरसता की दिशा में

आगे ले चलता है ।

2.3.22. अनुवाद का द्विगुणीकृत महत्व

अनुवाद मानव की सभ्यता के साथ-साथ प्रचलित एक ऐसा तंत्र है - जिसका रूपायन बहुभाषिक स्थिति के संकट व द्विधा से बचने के लिए किया गया । अनुवाद के संदर्भ में बाइबल की कथा प्रसिद्ध है ।

डॉ.जी.गोपीनाथन, डॉ.भोलानाथ तिवारी, श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन आदि ने इसका उल्लेख किया है । बाइबल की इस मिथकीय कथा के अनुसार मानव ने जब शिनार देश में एक अपूर्व नगर बसाया, उसने एक मीनार बनाकर यहोवा से टक्कर लेना चाहा तो उसने उनकी भाषाओं में भेद उत्पन्न किया, जो आपसी फूट का कारण बना । मानव ने भाषाओं के इस विभेद की स्थिति से ही अनुवाद की आवश्यकता महसूस की और उसका आविष्कार किया । हमारे अनुसार यह प्रक्रिया अब इतनी महत्वपूर्ण बन गयी है कि इसके बिना ज्ञान विज्ञान का संप्रसरण हो ही नहीं सकता ।

2.3.23. अनुवाद : भावैक्य का महासेतु

भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एक मात्र अचूक साधन है । डॉ.जी.गोपीनाथन कहते हैं कि इस तरह अनुवाद द्वारा मानव की एकता को रोकने वाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्वमैत्री को और भी सुदृढ़ बना सकते हैं ।

2.3.24. अनुवाद का वैश्विक प्रयोग

विश्व की राजनीति में तृतीय विश्व के देशों का महत्व पहले से अधिक बढ़ गया और इस कारण से अनुवाद की संभावनाएँ भी बढ़ गयी हैं ।

अनुवाद अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति के युग में एक अनुपेक्षणीय कार्य है । संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, चीनी एवं अरबी के अतिरिक्त हिन्दी, स्पैनिश आदि भाषाओं का महत्व भी अनुवाद के क्षेत्र में बढ़ रहा है । मारिशस, फिजी, सूरीनामा आदि देशों की प्रमुख भाषा के रूप में और विभिन्न भारतीय भाषाओं को जोड़नेवाली भाषा के रूप में हिन्दी एक व्यापक अनुवाद-माध्यम बनती जा रही है । विकासशील देशों के लिए पाठ्य ग्रन्थ निर्माण में भी अनुवाद का ही सहारा लिया जा रहा है, अर्थात् ज्ञानियों, तकनीकी विशेषज्ञों, राजनीतिज्ञों, कूटनीतिज्ञों एवं पत्रकारों का काम अनुवाद के बिना असम्भव-सा बन गया है ।

2.3.25. अनुवाद विश्व-संस्कृति का संवाहक

विश्व संस्कृति के विकास में अनुवाद का योगदान महत्वपूर्ण रहा है । धर्म एवं दर्शन का व्यापक प्रचार अनुवाद पर आश्रित है । डॉ.मिताली जी के शब्दों में संस्कृति की प्रगति वस्तुतः अनुवाद रूपी धुरी पर आश्रित है । विश्व के विभिन्न भौगोलिक खंडों में संस्कृति का जो विकास हुआ है, वह एक दूसरे का पूरक है । विश्व संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया में विचारों के आदान प्रदान का बड़ा हाथ रहा है और यह आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाया है । उदाहरण के लिये बाइबल तथा पाश्चत्य साहित्य का भारतीय भाषाओं में

और भारतीय आध्यात्मिक ग्रन्थों एवं भारतीय साहित्य का यूरोपीय भाषाओं में जो अनुवाद हुआ, उसने पूर्व एवं पश्चिम के अंतर की पुरानी कल्पनाओं को तोड़ दिया है । मैक्समूलर ने ऐसे एक विश्व चक्र का उल्लेख किया है, जिसमें पूर्व के विचार पहले पश्चिम की ओर जाते हैं और फिर पश्चिम से ये विचार नये रूप में पूरब की दिशा में लौटते हैं । बीसवीं शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति की शताब्दी है और इस कारण से इसे अनुवाद की शताब्दी भी कहा गया है । संप्रेषण के नये माध्यमों के आविष्कारों ने 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की उपनिषदीय कल्पना को साकार बना दिया है ।

2.3.26. अनुवाद एवं विश्व साहित्य का निर्माण

डॉ.जी.गोपीनाथन के शब्दों में अनुवाद के सहारे ही विश्व साहित्य का निर्माण एवं विकास हुआ है । प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण कथासंग्रह 'पंचतंत्र' का अनुवाद सन् 570 में पहलवी भाषा में हुआ और उससे अरबी तथा अनेक एशियाई एवं युरोपीय भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ । अब्दुल इब्न अल मोकक्का द्वारा 'पंचतंत्र' का सन् 759 ईसवी में जो अरबी अनुवाद किया गया था, वह एशिया और युरोप के अनेक अनुवादों का स्रोत बना । इन रोचक कहानियों ने अनेक शताब्दियों तक संसार के तीन महाद्वीपों के कथा साहित्य को उत्प्रेरित किया । आधुनिक यूरोपीय कथा साहित्य भी उनसे अत्यंत प्रभावित है । यह अत्यंत प्रसिद्ध है कि जर्मन कवि, नाटककार एवं समालोचक गेथे को विश्व साहित्य की परिकल्पना विकसित करने की प्रेरणा 'शाकुन्तलम्' के अनुवाद को पढ़कर मिली थी । आधुनिक युरोप में जो भारतीय साहित्य की रचनाएँ लोकप्रिय हुई हैं, उनमें शाकुंतलम् का विशिष्ट स्थान है । इसका अनुवाद सन् 1786 में

विलियम जोन्स ने अंग्रेजी में किया था और गियर्ग फारस्टर ने इसी अनुवाद पर आधारित जर्मन अनुवाद प्रकाशित किया था । जर्मन भाषा के प्रसिद्ध लेखक हेर्डर तथा गेथे इस ग्रन्थ से प्रभावित हुए थे । गेथे ने सन् 1761 में शाकुंतलम् पर जो प्रशंसात्मक काव्यांश लिखा, वह इसी प्रेरणा का परिणाम था -

''यदि मैं फूलों की बहार और उसके परिपक्व दलों को एक बारगी ही पाना चाहूँ, यदि मैं वह सब कुछ पाना चाहूँ, जो आत्मा को मुग्ध, उल्लसित और संप्रेषित करता है''

यदि मैं पृथ्वी और स्वर्ग को एक ही नाम में संयुक्त पाना चाहूँ तो शकुंतला ! मैं तुम्हारा नाम लूँगा और सब कुछ एक बारगी हो जायगा ।'' गेथे जैसे विद्वानों ने भारतीय साहित्य के प्रति यूरोप में जो जिज्ञासा पैदा की, उससे युरोपीय भाषाओं में भारतीय साहित्य के अनुवाद की एक बाढ़-सी आयी । इस प्रक्रिया ने युरोप की साहित्य संबंधी धारणाओं में क्रांति उपस्थित की है । टैगोर के व्यक्तित्व तथा उनकी 'गीतांजली' ने आधुनिक भारतीय साहित्य में उत्साह बढ़ाया । द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में अकादमीशियन वारान्निकोव द्वारा 'रामचरितमानस' का जो अनुवाद रूसी में हुआ, वह रूस के भारत संबंधी अध्ययन में एक परिंवर्तन का कारण बना । रूस की भौतिकवादी दृष्टि पहली बार मध्ययुगीन भक्ति साहित्य के प्रमुख ग्रंथ पर पड़ी ।

2.3.27. अनुवाद सांस्कृतिक सेतु के रूप में

अनुवाद के द्वारा विश्व की विभिन्न भाषाओं के साहित्य की विशेषताओं,

मूल्य एवं महत्ता के पूर्ण परिचय की प्राप्ति सरल हुई है । साहित्य समाज का दर्पण है । इसलिए उसमें प्रत्येक देश के जन जीवन के आचार, विचार तथा संस्कृति के विभिन्न पहलू प्रतिबिम्बित होते हैं । लोगों के रीति-रिवाज, सभ्यता आदि सभी तत्वों से परिचित होने के लिए अनुवाद एक सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है । विश्व संस्कृति के रूपायन में अनुवाद का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है । धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, प्रशासन, राजनीति एवं कूटनीति जैसे विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों एवं आयामों का संबंध अनुवाद से है । अनुवाद संस्कृति की प्रगति में चार चाँद लगाता है, अतः वह सांस्कृतिक सेतु के नाम से प्रसिद्ध है ।

बहुभाषा-भाषी भारत में विभिन्न भाषा-भाषियों के साहित्य व विचार का परिचय अनुवाद के द्वारा ही संभव है ।

2.4. निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व भाषा, साहित्य, समाज, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक चेतना, भाषा की शक्ति, पाठ निर्वचन, ज्ञान-विज्ञान का प्रसार, संस्कृति संवर्धन, विश्व कुटुंब परिकल्पना, भाषा विकास आदि सभी दृष्टियों से बढ़ रहा है । अनुवाद के माध्यम से ही विश्व के विभिन्न राष्ट्रों की विभिन्न भाषाओं में रचित ज्ञान विज्ञान का साहित्य हम अपनी भाषाओं में प्रतिष्ठापित कर रहे हैं । अनुवाद औद्योगिक उन्नति, संस्कृति समन्वय, विश्वमानवतावादी चेतना, वैज्ञानिक उन्नति, ज्ञान-विज्ञान का संप्रसरण आदि का संवाहक बना है । विभिन्न भाषाओं में निहित समस्त ज्ञान भण्डार की संप्राप्ति

अन्य भाषा-भाषी अनुवाद के माध्यम से ही प्राप्त कर सकते हैं ।

2.5. सारांश

प्रस्तुत घटक में अनुवाद के महत्व का विश्लेषण किया गया है । मौलिक साहित्य किसी भी भाषा की वास्तविक संपत्ति है । इसी प्रकार अनुवाद साहित्य भी भाषा की संपन्नता का एक अत्यंत प्रधान अंग है । आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है । विश्व की विभिन्न भाषाओं में प्रणीत ग्रंथों में निहित ज्ञान विज्ञान की निधि प्राप्त करने हेतु हमें उन भाषाओं का ज्ञान हासिल करना चाहिए । उन सभी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना एक जन्म में संभव नहीं है । तद्विषयक ज्ञानार्जन हेतु हमारे यहाँ एक ही साधन है । वह है अनुवाद । अनुवाद के माध्यम से हम धरा मंडल की विभिन्न दिशाओं में प्रचलित भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान की किरणें प्राप्त कर सकते हैं ।

इस घटक में अनुवाद के महत्व के विभिन्न आयामों का समुद्घाटन किया गया है, यथा - अनुवाद की आवश्यकता, समस्त भाषाओं के सेतु बन्धन के रूप में अनुवाद का संवर्द्धन, अनुवाद के बढ़ते चरण आदि । यह निरूपित किया गया है कि अनुवाद के बिना आधुनिक वैज्ञानिक युग में हम न घर के रहेंगे, न घाट के । अनुवाद व्यष्टि का समष्टीकरण कर वैश्विक सामाजिकता की सुगंध फैलाता है ।

अनुवाद ही एक मात्र साधन है, जिसके माध्यम से हम इस विशाल वसुंधरा में व्याप्त सहस्राधिक भाषाओं में निहित समस्त शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं ।

अनुवाद इतना महत्वपूर्ण है कि उसकी सहायता के बिना हम अन्य व्यक्ति, समाज आदि के विचार जान नहीं सकते । कन्नड-भाषी यदि हिन्दी न जानता हो तो वह हिन्दी-भाषी के विचारों को केवल अनुवाद के द्वारा ही जान सकता है । संक्षेप में कह सकते हैं कि इस निबंध में यह तथ्य समुद्घाटित है कि अनुवाद सांस्कृतिक सेतु बंधन है । अनुवाद के द्वारा ही विश्वकुटुंब की भावना का प्रचार संभव है और आधुनिक युग में आविष्कृत विभिन्न साधनों का ज्ञान हमें केवल अनुवाद के द्वारा ही मिल सकता है । भावैक्य साधन एवं तुलनात्मक साहित्यिक विवेचन अनुवाद के द्वारा ही संभव है । संपर्क साधन के रूप में अनुवाद एक महान वरदान है । अनुवाद औद्योगिक क्षेत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया है । अनुवाद ज्ञान-संवाहक है । मानवीय एकता के अद्भुत संधायक के रूप में अनुवाद की कीर्तिश्री बढ़ रही है । आधुनिक युग में अनुवाद विश्वमानवता की एकता का सुभद्र सेतु है और साथ ही विश्वसंस्कृति का निर्माण अनुवाद कर रहा है । उपर्युक्त अंशों का विस्तृत विवेचन इस घटक में हुआ है ।

2.6. संभाव्य प्रश्न

1. अनुवाद की महत्ता का निरूपण कीजिए ।
2. वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के आधुनिक युग में अनुवाद की बढ़ती हुई आवश्यकता पर प्रकाश डालिए ।

2.7. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

1. अनुवाद की महत्ता

इस घटक में अनुवाद की महत्ता का निरूपण किया गया है । परीक्षार्थी को इस प्रश्न के उत्तर में समूचे निबंध के अंशों का विवेचन करना चाहिए ।

प्रमुखतः अनुवाद के बढ़ते हुए चरणों का उल्लेख अपेक्षित है । निम्न सूचित अंश आवश्यक हैं :-

1. अनुवाद की आवश्यकता
2. अनुवाद का साधन : भाषा
3. अनुवाद समस्त भाषाओं के सेतु बंधन के रूप में
4. अनुवाद की उपादेयता
5. विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की संव्याप्ति एवं अन्य अंश

इस प्रश्न के उत्तर में घटक के प्रायः सभी अंश अपेक्षित हैं ।

2. वैज्ञानिक एवं तकनिकी प्रगति के आधुनिक युग में अनुवाद की बढ़ती हुई आवश्यकता

इस प्रश्न के उत्तर में प्रमुखतः निम्न सूचित अंश अपेक्षित हैं -

1. अनुवाद की महत्ता ।
2. आधुनिक युग में अनुवाद के बढ़ते चरण ।
3. अनुवाद संपर्क साधन के रूप में ।
4. औद्योगिक उन्नति में अनुवाद का स्थान ।
5. अनुवाद ज्ञान के संवाहक के रूप में ।
6. अनुवाद के माध्यम से वैज्ञानिक साहित्य के ज्ञान का प्रसार ।
7. वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान की प्राप्ति में अनुवाद की भूमिका ।

2.8. शब्दावली

पीढ़ी	-	Generation
सेतुबंधन	-	Construction of bridge
सभ्यता	-	Civilization
संस्कृति	-	Culture
आविष्कार	-	Invention

व्यष्टि	-	Individual
समष्टीकरण	-	Socialisation
समुदाय	-	Community
विश्व कुटुम्ब	-	World family
वसुधैव कुटुम्बकम्	-	Entire world is one family
भूगोल	-	Geography
खगोल	-	Astronomy
रसायनशास्त्र	-	Chemistry
संगणक विज्ञान	-	Computer Science
बहुभाषिकता	-	Multilinguism
संपर्क	-	Contact
शैक्षणिक	-	Academic
द्विभाषिकता	-	Bilinguism
अनुवादपद्धति	-	Translation Methodology
तुलनात्मक भाषाविज्ञान	-	Comparative Linguistics
सदृश	-	Equal
विदृश	-	Unequal
बहुमुखी विकास	-	Multifacit development
राष्ट्रभाषा	-	National Language
राजभाषा	-	Official Language
संपर्क भाषा	-	:Language of contact

पत्राचार	-	Correspondence
औद्योगिक उन्नति	-	Industrial development
तदर्थ	-	For that
विद्यमान	-	Existing
अग्रसर होना	-	To go forward
पंख	-	Wings
क्षेत्र	-	Field
प्रशासन	-	Administration
कृषि	-	Agriculture
उच्च शिक्षा	-	Higher Education
भूमिका	-	Role

2.9. संदर्भ ग्रन्थ निबंध सूची

अ. ग्रन्थ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग - डॉ.जी.गोपीनाथन
3. व्यावहारिक हिन्दी : प्रयोग एवं विधि - भाग-2 - प्रो.कामता कमलेश
4. बृहत् व्याकरण भास्कर - डॉ.वचनदेव कुमार
5. अनुवाद कला : कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमाणी व वेदप्रकाश
6. अनुवाद कला - डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

आ. निबंध

1. अनुवाद - श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन
2. अनुवाद के प्रकार - डॉ.मिताली भट्टाचारजी
3. अनुवाद का महत्व - डॉ.एस.एम.रामचन्द्र स्वामी

NOTES

NOTES

इकाई तीन

अनुवाद प्रक्रिया के चरण

3.0. प्रस्तावना

3.1. उद्देश्य

3.2. अनुवाद प्रक्रिया के चरण

3.2.1. अंतःप्रेरणा

3.2.2. अर्थप्रेषण : डॉ.मितालीजी का कथन

3.3. मूल पाठ का आनयन : डॉ.मितालीजी

3.4. अनुवाद प्रक्रिया के तकनीकी पहलू : डॉ.जी.गोपलनाथन जी

3.5. अनुवाद प्रक्रिया संबंधी विभिन्न मत

3.5.1. नाइडा का मत

3.5.2. परोक्ष प्रक्रिया

3.5.3. न्यूमार्क का मत

3.5.4. बाथगेट कस मत

3.5.5. डॉ.भोलानाथ तिवारी का मत

3.5.6. डॉ.मिताली एवं डॉ.कुसुमगीता का मत

3.6. अनुवाद प्रक्रिया के सिद्धांत

3.6.1. औचित्य सिद्धांत

3.6.2. तादात्म्य सिद्धांत

3.6.3. रचना सिद्धांत

3.6.4. पुनर्गठन सिद्धांत

9

3.7. अनुवाद प्रक्रिया के चरण

3.7.1. भाषांतरण

3.7.1.1. दुभाषिये के लिए अपेक्षित बातें

3.7.2. अनुवाद में सुधार प्रक्रिया

3.7.3. पुनरीक्षण शब्द

3.7.4. पुनरीक्षण प्रक्रिया

3.8. निष्कर्ष

3.9. सारांश

3.10. अभ्यास : प्रश्न

3.11. अभ्यास के प्रश्नों से संबंधित उत्तर

3.12. शब्दावली

3.13. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

3.0. प्रस्तावना

पूर्व घटकों में अनुवाद की विभिन्न परिभाषाओं, उसके नित्यनूतन संप्रवर्धन एवं महत्व की जानकारी आपको दी गई है । प्रस्तुत अध्याय में अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का ज्ञान आप्र प्राप्त करेंगे । अनुवाद को सुंदर, सुबोध, सुगम व समग्र बनाने हेतु अनुवादक को चाहिए कि वह अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का ज्ञान हासिल करे । इस अध्याय में आप अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न आयामों के ज्ञान के साथ-साथ इस से संबंधित नायिड़ा, न्यूमार्क आदि के मतों की जानकारी भी हासिल करेंगे । इस घटक में अंतःप्रेरणा, अर्थप्रेषण, मूलपाठ का आनयन, अनुवाद प्रक्रिया के तकनीकी पहलू, अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरण, मूल पाठ का पठन, विश्लेषण, पुनर्गठन, लक्ष्य भाषा पाठ, द्विभाषी की सहायता, सुधार प्रक्रिया, पुनरीक्षण आदि की जानकारी आप प्राप्त कर सकेंगे ।

3.1. उद्देश्य

अपने अनुवाद को सुन्दर, सुबोध व समग्र बनाने हेतु अनुवादक को चाहिए कि वह अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का पालन करे । उन सभी नियमों का पालन करने के उपरांत भी अनुवादक को चाहिए कि वह पुनःपुनः अनुवाद को संशोधित कर ले तथा सर्वांग सुन्दरता की दिशा में आगे बढ़े । डॉ.वी.एस.नरवणे अंतःप्रेरणा को अनुवाद के लिए आवश्यक मानते हैं । डॉ.भोलानाथ तिवारी पुनःपरीक्षण को अत्यंत आवश्यक बताते हैं । लक्ष्य भाषा में मूल पाठ को प्रतिस्थापित करने हेतु आवश्यकता के अनुसार अर्थ प्रेषण प्रक्रिया संबंधित तत्वों का पालन आवश्यक है । अनुवाद प्रक्रिया के तकनीकी

पहलू का पालन भी अपेक्षित है । डॉ.गोपीनाथन जी के शब्दों में मूल पाठ्य सामग्री के विश्लेषण तथा समुचित समतुल्यता निर्वहण अनुवाद प्रक्रिया में अपेक्षित है । अनुवाद प्रक्रिया के औचित्यमय रचना विधान, पुनर्गठन आदि सिद्धांतों का निर्वहण अनुवाद में नये प्राणों का प्रतिस्थापन करता है । प्रस्तुत घटक में अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरण यथा – मूल भाषा का पाठ, विश्लेषण, संक्रमण, पुनर्गठन, लक्ष्य भाषा पाठ आदि का निर्वहण आवश्यक हैं । प्रस्तुत घटक में संप्रदत्त तत्वों का लक्ष्य यह है कि इनसे पूर्णतः अवगत होकर पाठक अनुवाद प्रक्रिया पालन में निष्णात बने तथा अनुवाद कार्य के द्वारा ज्ञानामृत संसार को प्रदान करे । यही इस घटक का उद्देश्य है ।

3.2. अनुवाद प्रक्रिया के चरण

अनुवाद करने का विधान ही अनुवाद की प्रक्रिया है । अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष एवं व्यावहारिक पक्ष में अंतर है । सिद्धांत रूप में कह देना सुलभ है, जबकि उस सिद्धांत को आचरण में लाना कठिन है । 'सत्यं वद' अर्थात् सत्य बोलो - यह सिद्धांत वाक्य है । इसे व्यवहार में लाना बहुत ही कठिन है । इसी प्रकार अनुवाद के विभिन्न सिद्धांतों का विवेचन सरल है, जबकि उन सिद्धांतों का पालन करते हुए शब्द, भाव, अर्थ आदि को एक भाषा से दूसरी भाषा में नियोजित करना सुलभ नहीं है । अनुवाद करने के उपरांत भी बार-बार हमें यह देखना पड़ता है कि अनुवाद कार्य सफल हुआ है या नहीं, अर्थात् स्रोतभाषा में जो भाव है, उस भाव का हमने सफल रूप से लक्ष्य भाषा में संप्रेषण किया है या नहीं । यदि नहीं किया है, तो पुनःसंशोधन आवश्यक है । अनुवाद

का कार्य विभिन्न दशाओं को पार करता हुआ अंत में सफलता की दशा तक पहुँचता है । मूल रचयिता के आशय को अन्य भाषा में हम किस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं -- इसका पुनःपुनः परीक्षण व संवीक्षण होना चाहिए । यही अनुवाद प्रक्रिया है ।

3.2.1. अंतःप्रेरणा

डॉ.वी.एस.नरवणे अंतःप्रेरणा को सफल अनुवाद के लिए आवश्यक मानते हैं । उत्कृष्ट लेखकों में अंतःप्रेरणा माध्यम बनती है । ऐसे प्रभावशाली लेखकों की बृहत् सूची हमारे सामने आती है । होरेस, सिसिरो, लूथर मार्टेन ड्राइडन, पोप, शेली, कोलरिज, अर्नाल्ड, श्लेगल, गेटे, एजरा पाउंड, लूई मेकनिको, मेलेर्भ बादलेयर, स्टीफन और बोरिस पेस्तरनाक उच्च कोटि के रचनात्मक कार्यों में संलग्न थे । ये अनुवाद में अपने ह्रंदय लगाने के लिए बाध्य हुए । अनुवाद अन्तःशक्ति की एक प्रेरणा है, जो कुछ व्यक्तियों में गहराई से बद्धमूल है । यह एक अन्तःप्रेरणा है, एक विशिष्ट प्रकार की मेधा है, जो किसी को अनुवादक बना सकती है । अन्तःशक्ति अनुकरणात्मक प्रथम आवेश नहीं है । अनुवादक न तो अनुकर्ता होता है और न व्यंग्यकार । वह नाटकीय आनन्द भी नहीं प्राप्त करता । यह कोई अभिनय का अथवा कल्पना का आनन्द भी नहीं है और न अपनी शक्तियों को प्रयुक्त करने की इच्छा ही इस कार्य में निर्णायक कारण है । यह केवल एक कार्य करने और व्याख्या करने की प्रेरणा है । जिस प्रकार एक महान संगीतज्ञ अपने सम्मुख रखी संगीत रचना को रूपांतरित करता है, उसी प्रकार अंतःप्रेरणा से अनुवादक अनुवाद प्रक्रिया पूर्ण करता है ।

3.2.2. अर्थप्रेषण : डॉ.मितालीजी का कथन

डॉ.मिताली जी के शब्दों में अनुवादक अपने कार्य में तभी सफल हो सकता है, जब मूलपाठ के अर्थप्रेषण की ओर ध्यान देता है । अर्थ के चार प्रकार हैं -

1. बोधात्मक
2. संरचनात्मक
3. सामाजिक
4. सांस्कृतिक ।

अनुवादक को चाहिए कि मूलपाठ के अर्थ का संप्रेषण लक्ष्यभाषा में औचित्य के धरातल पर करे । अनुवाद करने से पहले वह यह देख ले कि अनूद्य वाक्य ठीक है या नहीं ।

1. संबोधात्मक वाक्य

कतिपय वाक्य व्याकरण एवं अर्थबोध की दृष्टि से शुद्ध होते हैं, किन्तु संदर्भ की दृष्टि से ठीक नहीं होते, जैसे श्रीकृष्ण देवराय ने दिल्ली पर राज किया । यह वाक्य संदर्भ की दृष्टि से गलत है, क्योंकि श्री कृष्णदेवराय दिल्ली के नहीं, बल्कि विजयनगर साम्राज्य के सम्राट् थे ।

2. संरचनात्मक

कतिपय वाक्य संरचना की दृष्टि से शुद्ध नहीं होते — 'An accident occured in the safety zone.'

(अ) इसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है - सुरक्षा वलय के बाहर दुर्घटना हुई ।

(अ) सुरक्षा पथ पर दुर्घटना हुई ।

उपर्युक्त वाक्यों में संरचना दोष है ।

3. सामाजिक

सामाजिक दृष्टि से वाक्य शुद्ध होना चाहिए । 'गुरुवर्य आया।' - इस वाक्य में क्रिया एक वचन में है । सामाजिक औचित्य की दृष्टि से क्रिया बहुवचन में होनी चाहिए । अतः अनुवादक को चाहिए कि वह सामाजिक शालीनता निर्वहण हेतु गुरु के लिए बहुवचन का प्रयोग करे, यथा - गुरुवर्य आये ।

4. सांस्कृतिक

अनुवाद करते समय सांस्कृतिक औचित्य पर भी ध्यान देना चहिए । **उदाहरण** - 'पुत्र ने श्रद्धा से पिता के चरण दबाये ।'

उपर्युक्त वाक्य में 'दबाये' शब्द से सांस्कृतिक गरिमा कुंठित हो जाती है । सांस्कृतिक औचित्य को दृष्टि में रखकर इस वाक्य को निम्नसूचित रीति में लिखना चाहिए - पुत्र ने श्रद्धा से पिताजी के चरणों का स्पर्श किया ।

उपर्युक्त चार संदर्भ अनुवाद प्रक्रिया के आरंभिक अंश हैं ।

3.3. मूलपाठ का आनयन : डॉ.मिताली जी

डॉ.मिताली जी के शब्दों में अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक मूल पाठ के वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ से अवगत होकर तत्पश्चात् मूल लेखक की शैली अनुवाद में लाने का प्रयत्न करता है । मूल की अभिव्यक्ति भंगिमा लक्ष्यभाषा में लाने का उद्यम किया जाता है ।

3.4. अनुवाद - प्रक्रिया के तकनीकी पहलू : डॉ.जी.गोपीनाथन जी

डॉ.जी.गोपीनाथन जी के शब्दों में अनुवाद प्रक्रिया के तकनीकी पहलुओं

की रूपरेखा उसकी विभिन्न अवस्थाओं को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत की जा सकती है । इस प्रक्रिया के दो पहलू हैं -

1. मूल पाठ्य सामग्री का विश्लेषण
2. समुचित समतुल्यता का निर्माण ।

सर्वप्रथम अनुवादक संपूर्ण स्रोत सामग्री को विषयगत और भाषागत दृष्टि से समझने का प्रयास करता है । इयान फिनले की राय में अनुवाद करने से पूर्व संपूर्ण पाठ्य सामग्री को पढ़ना और समझना अनुवाद प्रक्रिया का अनिवार्य नियम है । दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है अनुवादक द्वारा अर्थतत्व की पहचान । अतः केन्द्रीय एवं बाह्यतः केन्द्रित प्रयोगों एवं शब्दावली के अर्थ का निर्णय ही अनुवाद प्रक्रिया का आरंभिक महत्वपूर्ण कार्य है । शब्दों के पीछे निहित सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परंपरा की धारणा भी इस संदर्भ में बहुत अधिक आवश्यक है ।

3.5. अनुवाद प्रक्रिया संबंधी विभिन्न मत

अनुवाद प्रक्रिया के संबंध में विविध विद्वानों के मत भिन्न भिन्न हैं । कतिपय विद्वान अर्थबोध को महत्व देते हैं, तो चन्द विद्वान भाव बोध को स्थान देते हैं । आधुनिक विशेषज्ञ शैली तत्व को भी महत्व देते हैं ।

3.5.1. नाइडा का मत

प्रसिद्ध विद्वान नाइडा के मत के अनुसार अनुवाद एक क्रमबद्ध, सुसूत्र प्रक्रिया है, जिसमें मूलपाठ की सभी इकाइयों का अनुवाद होना चाहिए । वे अनुवाद प्रक्रिया के दो रूप मानते हैं - प्रत्यक्ष रूप एवं परोक्ष रूप । प्रत्यक्ष रूप में वे स्रोत भाषा एवं लक्ष्यभाषा के बीच में मध्यवर्ती संरचना को स्थान देते हैं -

मूलभाषा　　　　मध्यवर्ती संरचना　　　　लक्ष्यभाषा

परोक्षरूप के अंतर्गत नाइडा अनुवाद प्रक्रिया की पाँच दशाएँ मानते हैं -

1. मूल भाषा का पाठ
2. विश्लेषण
3. संक्रमण
4. पुनर्गठन
5. लक्ष्यभाषा पाठ ।

नाइडा के अनुसार प्रत्यक्ष प्रक्रिया के प्रारूप के अनुसार मूलपाठ की संरचना के स्तर पर भाषिक इकाइयों के पर्याय लक्ष्यभाषा में निश्चित होते हैं । नाइडा आगे बताते हैं कि अनुवाद की इस क्रमबद्ध प्रक्रिया में मूल के प्रत्येक अंश का अनुवाद होना चाहिए । वे पर्याय चयन तथा प्रस्तुतीकरण को स्वचालित प्रक्रिया मानते हैं । मूलभाषा और लक्ष्यभाषा के बीच में मध्यवर्ती संरचना संपन्न होती है, जिसमें दोनों भाषाओं की विशेषताएँ लुप्त हो जाती हैं और एक नई वस्तु उत्पन्न होती है ।

3.5.2. परोक्ष प्रक्रिया

परोक्ष प्रक्रिया की पाँच स्थितियों को तीन चरणों में व्यक्त कर सकते हैं, जिसके कारण मूल भाषा का पाठ लक्ष्यभाषा के पाठ में परिवर्तित हो जाता है -

1. पाठविश्लेषण　　2. संक्रमण　　3.पुनर्गठन ।

3.5.3. न्यूमार्क का मत

न्यूमार्क अनुवाद प्रक्रिया में दो चरण मानते हैं । नाइडा व्याकरण को विशेष महत्व देते हैं, जबकि न्यूमार्क बोधन व अभिव्यक्ति - चरणों को महत्वपूर्ण बताते हैं ।

3.5.4. बाथगेट का मत

बाथगेट प्रारूप को सक्रियात्मक प्रारूप बताते हैं । उनके अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के सात चरण हैं -

1. समन्वयन
2. विश्लेषण
3. बोधन
4. पारिभाषिक अभिव्यक्ति
5. पुनर्गठन
6. पर्यालोचन
7. पुनरीक्षण ।

3.5.5. डॉ.भोलानाथ तिवारी का मत

डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के पाँच चरण हैं -

1 पाठ पठन
2. पाठ विश्लेषण
3. भाषांतरण
4. समायोजन
5. मूल से तुलना ।

3.5.6. डॉ.मिताली एवं डॉ.कुसुमगीता का मत

डॉ.मिताली जी एवं डॉ.कुसुमगीता के मत के अनुसार छः सोपान हैं -

1. मूलपाठ पठन एवं बोधन
2. पाठ विश्लेषण
3. भाषांतरण
4. पुनरीक्षण
5. समायोजन
6. मूल से तुलना ।

डॉ.मिताली जी ने एवं डॉ.कुसुमगीता ने अनुवाद प्रक्रिया के संबंध में अत्यंत संतुलित विचार व्यक्त किये हैं ।

3.6. अनुवाद प्रक्रिया के सिद्धांत

अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख सिद्धांत ये हैं -

1. औचित्य सिद्धांत
2. तादात्म्य सिद्धांत
3. रचना सिद्धांत
4. पुनर्गठन सिद्धांत ।

3.6.1. औचित्य सिद्धांत

औचित्य सिद्धांत अनुवाद प्रक्रिया को दोषरहित बनाता है । औचित्य के प्रकार ये हैं -

बोधात्मक औचित्य

संरचनात्मक औचित्य

सामाजिक औचित्य

सांस्कृतिक औचित्य

लोकमंगल औचित्य

3.6.2. तादात्म्य सिद्धांत

अनुवाद प्रक्रिया में तादात्म्य सिद्धांत का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि जब तक मूल लेखक की आत्मा को अनुवादक अपनी आत्मा में प्रतिष्ठापित नहीं करता, तब तक मूल रचना की भावदशा तक अनुवाद की रचना पहुँच नहीं सकती । कथ्य, शिल्प एवं शैली की समतुल्यता तादात्म्य स्थापना से ही संभव है । अनुवाद केवल शब्दों का नहीं, बल्कि पूरे पाठ का होना चाहिए ।

3.6.3. रचना सिद्धांत

रचना सिद्धांत अनुवाद प्रक्रिया का तृतीय सिद्धांत है । इस सिद्धांत के अनुसार औचित्य निर्वहण तथा तादात्म्य स्थापना के उपरांत अनुवादक को वास्तविक अनुवाद कार्य में संलग्न होना चाहिए । अनुवादक अपने मन में पूरे पाठ से संबंधित भाव, अर्थ, शब्द, वाक्य, शैली आदि को संगठित कर लेता है और अनुवाद कार्य पूरा करता है ।

3.6.4. पुनर्गठन सिद्धांत

पुनर्गठन सिद्धांत अनुवाद कार्य की द्वितीय दशा से संबंधित है । इस सिद्धांत के अनुसार मूलपाठ का पूर्ण अनुवाद करने के उपरांत अनुवादक यह देख ले कि स्रोतभाषा के मूलपाठ की सभी इकाइयों की समतुल्य प्रतिस्थापना लक्ष्य भाषा में हुई है या नहीं । औचित्य रोचकता आदि की दृष्टि से अनुवाद को पुनः संयोजित कर लेना है ।

3.7. अनुवाद प्रक्रिया के चरण

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण बताते हैं - समझना, भाषान्तरण और समायोजन । जहाँ पर मूल भाषा के विचारों को समझने के लिए उस भाषा से संबंधित कोश की जरूरत है, वहाँ भाषान्तरण के लिए द्विभाषा कोश याने स्रोतभाषा व लक्ष्यभाषा के कोश की जरूरत पड़ती है । पर्यायवाची व विलोम शब्दों को ढूँढ़ने में ये कोश सहायक होते हैं । संदर्भ ग्रन्थों से सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि की पहचान सरल होती है । विषयज्ञान के आधार के लिए ये कोश उपयोगी होते हैं । इसलिए कोश, संदर्भ - ग्रंथ व विश्वकोश अनुवादक की ज्ञान वृद्धि ही नहीं करते, वरन् अभिव्यक्ति कुशलता को भी बढ़ा देते हैं । व्याकरणिक संरचना को समझने के लिए कोश शब्दों के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करते हैं । लिंग, वचन, कारक व प्रयोग दोनों भाषाओं में होते हैं । उनकी गहराई तक पहुँचाने में कोश सहायक होते हैं । इससे अनुवाद का काम आसान होता है । जो अनुवाद कोश, विश्वकोश व संदर्भ ग्रंथों का उपयोग बार-बार करते हैं, वे स्वयं चलते फिरते विश्व कोश बन जाते हैं ।

3.7.1. भाषांतरण

भाषांतरण का अर्थ

दुभाषिये या भाषांतरकार (इन्टरप्रेटर) का काम भाषांतरण कहलाता है । भाषांतरकार की गति दो भाषाओं में होती है । वह एक की बात सुनकर उसका झट अनुवाद कर दूसरे को सुना देता है । दुभाषिये का कार्य बातचीत का माध्यम बन जाता है ।

3.7.1.1. दुभाषिये के लिए अपेक्षित बातें

डॉ.भोलानाथ तिवारी के अनुसार दुभाषिए के लिए निम्नांकित बातें अपेक्षित होती हैं -

1. दोनों भाषाओं में उसकी बहुत अच्छी गति होनी चाहिए । बिना किसी अन्य व्यक्ति, शब्द कोश या विशेष समयसाध्य सोच-विचार की सहायता से वह अनुवाद कर सके ।
2. श्रवणशक्ति बहुत अच्छी होनी चाहिए, ताकि वह कथित सामग्री को ठीक से सुनकर अनुतान, बलाघात, अनुनासिकता, दीर्घता आदि को ठीक पहचान कर कथ्य को निर्भ्रान्त रूप से ग्रहण कर सके ।
3. उसका उच्चारण भी बहुत अच्छा होना चाहिए, जिससे कि श्रोता उसे निर्भ्रान्त रूप से समझ सके । स्वर, व्यंजन, संयुक्त स्वर, संयुक्त व्यंजन, अनुतान, बलाघात, संहिता आदि की दृष्टि से उच्चारण ठीक होना चाहिए ।
4. दुभाषिया घबरानेवाला नहीं होना चाहिए, क्योंकि घबरानेवाला व्यक्ति कोई बात न समझने पर इतना घबरा जाता है कि बोधगम्य बात भी उसके लिए अबोधगम्य हो जाती है ।
5. बिना संकोच दुभाषिए को वक्ता से उस बिन्दु को स्पष्ट कर लेना चाहिए, जो समझ में न आ रहा हो । ऐसा न करने से अर्थ का अनर्थ हो सकता है ।
6. अत्यंत अपेक्षित होने पर दुभाषिया वक्ता से यह संकेत कर सकता है कि धीरे-धीरे बोलने से उसका काम सरल हो जाएगा ।
7. अनुवाद छोटे-छोटे वाक्यों में धीमी गति से करना चाहिए ।
8. दुभाषिए को अपेक्षित होने पर भावानुवाद करने से नहीं कतराना चाहिए । उसके लिए भावानुवाद भी बहुत सटीक एवं आदर्श अनुवाद होता है ।

डॉ.भोलानाथजी के ये विचार अत्यंत संतुलित हैं ।

3.7.2. अनुवाद में सुधार प्रक्रिया

डॉ.वी.एस.नरवणे लिखते हैं - भाषांतरण अपने आप में एक सृजनात्मक

प्रक्रिया है । लेखक की खोज में सर्वप्रथम वह किसी अन्य व्यक्ति में लेखक को पाता है और फिरं स्वयं अपने में । रेनेट पेगीओली ने यह बात बहुत सुंदर व स्पष्ट रूप से कही है । दूसरे के कला रूपी जलाशय में अपना प्रतिरूप देखने वाले नरकीसस के समान अनुवादक का वर्णन करते हुए पेगिओली कहते हैं - एक नई खोजी हुई कविता मूलतः मनोवैज्ञानिक प्रकार के परिज्ञान से स्तंभित अनुवादक को व्यावहारिक कठिनाइयों के लिए अनुकरणीय समाधान प्रस्तुत करती है, साथ ही निर्गम साधन भी प्रदान करती है । प्रत्येक सौन्दर्यात्मक विवेचन में आत्मिक परिव्याप्ति का विशेष गुण होता है । शाब्दिक अनुवादकों का विचार निःसंदेहतः उपयुक्त है । एक अनुवादक को अनुवाद करना चाहिए, न कि नव रचना । अतिवादी यह धारणा स्वीकार नहीं कर सकते कि अत्यंत आकर्षक भावानुवाद की अपेक्षा शाब्दिक अनुवाद हजारगुना अच्छा है । अनुवादक को कुछ छोड़ने का अधिकार नहीं है । उसे लेखक की शिल्पशाला में सूक्ष्म निरीक्षण कर उसकी अनेक आकर्षक बातों को प्रकट करने की जोखिम उठानी पड़ेगी । उसे मूल रचना को सुधारने का अधिकार नहीं है । डॉ.जॉनसन कहते हैं कि आप जिस लेख को अनूदित कर रहे हैं, उससे आगे बढ़ने का प्रयास कदापि न करें । अपने मानस को स्वर की गति से संयोजित करें । अर्थ के कारण अपना ध्यान भंग न होने दे । यदि मूल रचना की संगीतात्मकता सुरक्षित रखी जा सकती है तो ठीक है । यदि नहीं रखी जा सकती है तो शुद्ध अनुवाद की वेदी पर उसका उत्सर्ग किया जा सकता है ।

3.7.3. पुनरीक्षण शब्द

पुनरीक्षण शब्द अनुवादक के संशोधन के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।

एक व्यक्ति अनुवाद कर अपने अनुवाद को एक बार देख लेता है, दूसरा व्यक्ति अर्थात् पुनरीक्षक उसको फिर से देखता है, अनुवाद का पुनरीक्षण करता है ।

3.7.4. पुनरीक्षण प्रक्रिया

डॉ.भोलानाथ के अनुसार पुनरीक्षक पर बहुत अधिक दायित्व है । अनुवादक और पुनरीक्षक एक से न होकर एक दूसरे के पूरक हों तो अधिक अच्छा होता है ।

अन्य भाषा भाषी पुनरीक्षण

पुनरीक्षक यदि अनुवादक की बोली या भाषा बोलने वाला न होकर किसी अन्य बोली या भाषा का भाषी हो तो अपना काम अधिक अच्छा कर सकता है ।

ज्ञानात्मक साहित्य का पुनरीक्षण

ज्ञानात्मक साहित्य का अनुवाद पुनरीक्षण के सहयोग से हो तो अधिक अच्छा होता है । ज्ञान की दृष्टि से भी अनुवादक और पुनरीक्षक को एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए ।

सर्जनात्मक साहित्य का पुनरीक्षण

डॉ.भोलानाथ तिवारी जी के अनुसार सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद में भी अनुवादक और पुनरीक्षक को एक-सा नहीं होना चाहिए । एक स्वयं साहित्य का सर्जक हो और दूसरा साहित्य सर्जक न होकर अच्छा अनुवादक हो तो दोनों एक-दूसरे को संतुलित कर लेते हैं ।

दो पुनरीक्षक

पुनरीक्षक को अनुवाद का पुनरीक्षण विषय और अभिव्यक्ति दोनों दृष्टियों से करना चाहिए । अपेक्षित होने पर दो पुनरीक्षक भी हो सकते हैं -- एक विषय का जानकर और एक भाषा का जानकर । पुनरीक्षक को तटस्थ संशोधक होना चाहिए ।

3.8. निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि अनुवाद प्रक्रिया के कई चरण हैं, जिनमें प्रमुख हैं - मूल पाठ पठन, बोध विश्लेषण, भाषातंरण, पुनरीक्षण, समायोजन, मूल से तुलना आदि । अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख सिद्धांत, यथा औचित्य सिद्धांत, रचना सिद्धांत, उदात्त सिद्धांत, पुनर्गठन सिद्धांत आदि की जानकारी सफल अनुवादक के लिए अत्यंत आवश्यक है । प्रिय पाठको, आप इस इकाई में इस तथ्य का अवगाहन करेंगे कि अनुवाद वस्तुतः परकाय प्रवेश है । स्रोत भाषा के मूल पाठ में निहित विभिन्न इकाइयों को लक्ष्य भाषा में लाने हेतु अनुवादक अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का पालन करता हुआ सफलता की दिशा में अग्रसर होकर ज्ञान की किरणें फैलाता है । अनुवाद प्रक्रिया के इस महायज्ञ में वह याज्ञिक बनकर समस्त मानवता के हित के लिए मूल लेखक के हृदय के साथ तादात्म्य स्थापित करता है ।

3.9. सारांश

अनुवाद प्रक्रिया से संबंधित सिद्धांतों का विवरण प्रस्तुत घटक में दिया गया है । अनुवाद प्रक्रिया वस्तुतः परकाय प्रवेश है । अनुवाद प्रक्रिया के चरणों

के संबंध में विभिन्न विद्वान भिन्न-भिन्न सिद्धांत प्रतिपादित करते हैं । डॉ.वी.एस.नरवणे अंतःप्रेरणा को महत्व देते हैं, क्योंकि अंतःप्रेरणा के बिना कोई महत्कार्य संपन्न नहीं हो सकता । अनुवाद प्रक्रिया का मूल लक्ष्य लक्ष्यभाषा में निहित मूलपाठ के समस्त तत्वों का आनयन है । डॉ.जी.गोपीनाथन मूलपाठ्य सामग्री का विश्लेषण व समुचित समतुल्यता निर्वहण को अनुवाद प्रक्रिया में अधिक महत्व देते हैं ।

अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख सिद्धांत ये हैं -

1. औचित्य सिद्धांत
2. तादात्म्य सिद्धांत
3. रचना सिद्धांत
4. पुनर्गठन सिद्धांत ।

औचित्य सिद्धांत

औचित्य के पाँच प्रकार हैं -

1. बोधात्मक औचित्य
2. संरचनात्मक औचित्य
3 सामाजिक औचित्य
4. सांस्कृतिक औचित्य
5 लोकमंगल औचित्य ।

अनुवाद प्रक्रिया में अर्थबोध, भावबोध तथा शैली तत्व को अधिक महत्व देना चाहिए । डॉ.नायिडा के मत के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया में विभिन्न चरणों के पालन से अनुवाद क्रमबद्ध व सुसूत्र बनता हैं, जिसमें मूल पाठ के सभी इकाइयों का अनुवाद आवश्यक है । उनके अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के दो रूप हैं -

1. प्रत्यक्ष   2. परोक्ष ।

नायड़ा के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया की पाँच दशाएँ हैं -

1. मूलभाषा का पाठ   2. विश्लेषण   3. संक्रमण

4. पुनर्गठन   5 लक्ष्य भाषा पाठ ।

न्यूमार्क, बाथगेट, डॉ.भोलानाथ तिवारी, डॉ.कुसुम गीता, श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन, डॉ.मिताली जी आदि के द्वारा प्रतिपादित विभिन्न तत्व अनुवाद प्रक्रिया में पथ दीपक बने हैं । डॉ.भोलानाथ तिवारी भाषांतरण प्रक्रिया के विभिन्न सिद्धांतों का निर्वहण आवश्यक मानते हैं । इस प्रक्रिया में पुनःरीक्षण चरण अत्यंत महत्व पूर्ण है ।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि अनुवाद प्रक्रिया में निम्नसूचित चरणों का निर्वहण आवश्यक है -

1. मूलभाषा पाठपठन - पर्याय
2. पाठविश्लेषण
3. बोधन
4. संक्रमण
5. समन्वयन
6. पारिभाषिक अभिव्यक्ति भाषान्तरण
7. पुनर्गठन
8. पर्यालोचन
9. लक्ष्यभाषा पाठ - समायोजन मूल से तुलना
10. पुनरीक्षण ।

3.10. अभ्यास : प्रश्न

1. अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का विवेचन कीजिए ।

2. **टिप्पणी लिखिए -**

   अ. अर्थ प्रेषण

   आ. अनुवाद प्रक्रिया के सिद्धांत ।

3.11. अभ्यास के प्रश्नों से संबंधित उत्तर

I] अनुवाद प्रक्रिया के चरण

अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरणों एवं आयामों के ज्ञान के बिना अनुवाद कार्य सुन्दर और सफल हो नहीं सकता । अनुवादक को यह जानना चाहिए कि स्रोतभाषा के मूल पाठ को लक्ष्यभाषा में प्रतिस्थापित करते समय किन तत्वों का पालन करना चाहिए । अनुवाद प्रक्रिया के अंतर्गत कई चरण हमारे सम्मुख आते हैं, यथा -- मूल पाठ का पठन, पुनःपठन, सभी अंशों का अर्थग्रहण, लक्ष्य भाषा में स्रोतभाषा के विभिन्न तत्वों एवं अभिव्यक्तियों के लिए उपलब्ध समतुल्य समानार्थक तत्व अर्थात् अभिव्यक्तियों का ज्ञान, भाषातंरण, पुनरीक्षण, समायोजन आदि आयामों का पालन करने के उपरांत अनुवादक को यह देखना चाहिए कि उसका अनुवाद कार्य कहाँ तक सफल हुआ है । संप्रेषण को अधिक सफल बनाने हेतु संशोधन आवश्यक है ।

अनुवाद प्रक्रिया उपर्युक्त दशाओं से होती हुई अंत में सफलता का शिखर छू लेती है । मूल रचयिता के आशय को अन्य भाषा में किस प्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता है - इसका पुनः पुनः परीक्षण एवं संवीक्षण होना चाहिए । यही अनुवाद प्रक्रिया है । केवल प्रक्रिया के नियमों के पालन से अनुवाद

सफलता की सुगंध प्राप्त नहीं कर सकता । उसके लिए अत्यंत आवश्यक मूल प्रक्रिया अंतःप्रेरणा है । इस प्रक्रिया के उपरांत अर्थ प्रेषण प्रक्रिया पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है । मूलपाठ की सरल, सुन्दर व सफल पुनःस्थापना के लिए अनुवाद प्रक्रिया के तकनीकी पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है ।

अनुवाद प्रक्रिया संबंधी विभिन्न मतों का पालन भी आवश्यक है । नायडा द्वारा सूचित प्रक्रिया अनुवाद को सफल बनाने में सहायक बनते हैं । नायडा के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया की पाँच दशाएँ हैं -

1. मूलभाषा का पाठ
2. विश्लेषण
3. संक्रमण
4. पुनर्गठन
5. लक्ष्यभाषा पाठ ।

न्यूमार्क का मत

न्यूमार्क अनुवाद प्रक्रिया में दो चरण मानते हैं -

1. बोधन , 2. अभिव्यक्ति ।

बाथगेट का मत

बाथगेट के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया के सात चरण हैं -

1. समन्वयन
2. विश्लेषण
3. बोधन
4. पारिभाषिक अभिव्यक्ति
5. पुनर्गठन
6. पर्यालोचन
7. पुनरीक्षण ।

डॉ.भोलानाथ तिवारी अनुवाद प्रक्रिया के पाँच चरण मानते हैं -

1. पाठपठन
2. पाठविश्लेषण
3 भाषांतरण
4. समायोजन
5. मूल से तुलना ।

डॉ.कुसुमगीता एवं डॉ.मितालीजी अनुवाद प्रक्रिया के छः सोपान बताती हैं -

1. मूलपाठ पठन एवं बोधन
2. पाठ विश्लेषण
3. भाषांतरण
4. पुनरीक्षण
5. समायोजन
6 मूल से तुलना ।

उत्तर को समग्र बनाने हेतु उपर्युक्त अंशों का सोदाहरण विश्लेषण आवश्यक है ।

II] टिप्पणी

अ. अर्थप्रेषण

अर्थ प्रेषण अनुवाद प्रक्रिया का एक प्रमुख आयाम है । भाषा का मूल लक्ष्य अर्थ प्रेषण है । ध्वनि, रूप, शब्द, वाक्य, प्रयुक्ति आदि अंगों का लक्ष्य अर्थप्रेषण ही है । अनुवाद में यदि अर्थ की प्रतिस्थापना लक्ष्यभाषा में सुचारु ढंग से न हो तो अनुवादक का सारा कार्य मिट्टी में मिल जायेगा । स्रोतभाषा में निहित अर्थ का संप्रेषण लक्ष्य भाषा में सफल ढंग से लाने हेतु अर्थ के विभिन्न

प्रकारों का ज्ञान आवश्यक है । अर्थ के चार प्रकार ये हैं -

1. बोधात्मक
2. संरचनात्मक
3. सामाजिक
4. सांस्कृतिक ।

अनुवाद पूर्ण करने से पहले अनुवादक यह देख ले कि अनूदित वाक्य ठीक है या नहीं । अर्थप्रेषण वाक्य रचना पर निर्भर है । ये वाक्य इस प्रकार हैं -

1. संबोधत्मक वाक्य

वाक्य व्याकरण की दृष्टि से नहीं, बल्कि संदर्भ की दृष्टि से भी शुद्ध होना चाहिए, यथा -- ''नेहरू जी इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री हैं '' - व्याकरण की दृष्टि से यह वाक्य ठीक है । पर सत्य व इतिहास की दृष्टि से अशुद्ध है । शुद्ध रूप है - 'नेहरू भारत के प्रधान मंत्री थे ।'

2. संरचनात्मक वाक्य

मूल वाक्य है - 'वह घर पर है ।'' अनुदित वाक्य है - "He is on the house" --- यह अशुद्ध वाक्य है । शुद्ध वाक्य है - He is in the house.

3. सामाजिक दृष्टि

'गुरु आया' -- वाक्य सामाजिक दृष्टि से गलत है । शुद्ध वाक्य है - 'गुरु आये ।'

4 सांस्कृतिक औचित्य

मूल वाक्य है - ''पुत्र ने श्रद्धा से पिता के चरण दबाये ।'' 'दबाये' शब्द के कारण सांस्कृतिक गरिमा कुंठित हो जाती है । सांस्कृतिक औचित्य की दृष्टि

से वाक्य ऐसा होना चाहिए - ''पुत्र ने श्रद्धा से पिता के चरणों का स्पर्श किया ।''

उपर्युक्त चार संदर्भ अनुवाद प्रक्रिया के आरंभिक अंश हैं । टिप्पणी में उपर्युक्त अंशों का सोदाहरण विश्लेषण अपेक्षित है ।

आ. अनुवाद प्रक्रिया के सिद्धांत

अनुवाद प्रक्रिया के प्रमुख सिद्धांत ये हैं -

1. औचित्य सिद्धांत
2. तादात्म्य सिद्धांत
3. रचना सिद्धांत
4. पुनर्गठन सिद्धांत ।

1. औचित्य सिद्धांत

औचित्य सिद्धांत अनुवाद प्रक्रिया को दोष रहित बनाता है । औचित्य के पाँच प्रकार हैं -

1. बोधात्मक औचित्य
2. संरचनात्मक औचित्य
3. सामाजिक औचित्य
4. सांस्कृतिक औचित्य
5 लोकमंगल औचित्य ।

2. तादात्म्य सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार अनुवादक को चाहिए कि मूल लेखक की आत्मा को वह अपनी आत्मा में प्रतिस्थापित कर ले । तभी मूल रचना की भावदशा पुनःस्थापित हो सकती है ।

3. रचना सिद्धांत

रचना सिद्धांत के अनुसार औचित्य तथा तादात्म्य की स्थापना के उपरांत अनुवादक मूलरचना के अनुवाद कार्य में संलग्न हो जाता है । मूल पाठ के सभी तत्वों को संगठित कर अनुवाद कार्य पूरा करता है ।

4. पुनर्गठन सिद्धांत

पुनर्गठन सिद्धांत के अनुसार मूलपाठ का अनुवाद करने के उपरांत अनुवादक को यह देख लेना चाहिए कि मूलपाठ की सभी इकाइयों की प्रतिस्थापना लक्ष्यभाषा में हुई या नहीं । यह पुनःसंयोजन है ।

3.12. शब्दावली

संशोधन	-	Revision
अंतःप्रेरणा	-	Inner intuition
मेधा	-	Brain, Intelligence
अभिव्यक्ति भंगिमा	-	Way of expression
उद्यम	-	Effort
अर्थप्रेषण	-	Communication of meaning
शालीनता निर्वहण	-	Maintenance of dignity
पहलू	-	Aspect
प्रस्तुतीकरण	-	Presentation
समन्वयन	-	Confluence
कारक	-	Case
दुभाषिया	-	Interpreter
बलाघात	-	Stress

3.13. संदर्भ ग्रन्थ एवं निबंध

अ. **निबंध**

1. अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरण - डॉ.जे.एस.कुसुमगीता

2. अनुवाद प्रक्रिया के तकनीकी पहलू - (अनुवाद ग्रंथ से)
3. अनुवाद - श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन
4. अनुवाद : एक सांस्कृतिक सेतु - डॉ. जी.गोपानाथन
5. अनुवाद प्रक्रिया - डॉ.मिताली भट्टाचारजी

आ. गंन्थ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी
2. व्यावहारिक हिन्दी - डॉ.आर.के.पाण्डेय
3. अनुवाद - डॉ.जी.गोपीनाथन

NOTES

NOTES

इकाई चार

अनुवाद : कला, विज्ञान व तंत्र

4.0. प्रस्तावना

4.1. उद्देश्य

4.2. अनुवाद : विज्ञान, कला एवं तंत्र

4.3. अनुवाद कला है

4.3.1. अनुवाद के कला रूप में मौलिकता

4.3.2. कलारूप में अनुवाद

4.3.3. कला की सृजनात्मकता

4.3.4. अनुवाद का कला रूप और शैली

4.3.5. चेतना से कला रूप का रूप संवर्द्धन

4.3.6. मूल सौन्दर्य की रक्षा कलात्मकता से संभव है

4.3.7. शब्दानुवाद की विसंगतियों का निवारण कला रूप द्वारा

4.3.8. भावानुवाद में अनुवाद के कलारूप की भूमिका

4.4. अनुवाद विज्ञान है

4.4.1. वैज्ञानिक प्रक्रिया

4.4.2. अनुवाद अशंतः विज्ञान है

4.5. अनुवाद तंत्र है

4.6. निष्कर्ष

4.7. सारांश

4.8. प्रश्न

4.9. उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

4.10. शब्दावली

4.11. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

4.0. प्रस्तावना

इस इकाई में अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए इस तथ्य का निरूपण किया जा रहा है कि अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और तंत्र भी। आप इस तथ्य की जानकारी हासिल करेंगे कि अनुवाद अपनी कलात्मकता के कारण एक ओर लालित्य से लसित होता है तो दूसरी ओर विज्ञान रूप के कारण उसमें अनुशासन की ऊर्जा आ जाती है। आप यह जान सकेंगे कि अपने शिल्प रूप की तांत्रिकता के कारण अनुवाद तांत्रिकता की सुषमा प्राप्त करता है।

4.1. उद्देश्य

इस घटक में अनुवाद के स्वरूप का विवेचन करते हुए इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि वह वस्तुतः ज्ञान-विज्ञान की किस कोटि में आता है, अर्थात् यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि वह मूलतः और अंततः क्या है - अनुवाद विज्ञान है या कला है या तंत्र है। विभिन्न तर्क प्रस्तुत करते हुए यह सिद्ध किया गया है कि वह विज्ञान भी है, कला भी है और तंत्र भी है। अनुवाद प्रक्रिया में एक तरफ कलात्मकता का सौरभ है तो दूसरी तरफ वैज्ञानिकता की चमक भी है। उस में शिल्प के गुण भी विद्यमान हैं। सफल अनुवाद के निर्वहण में अनुवाद के इन तीनों स्वरूपों की विशेषताओं का उपयोग करना पड़ता है। अनुवाद अपने कला रूप के विभिन्न आयामों के द्वारा स्रोत भाषा के मूल पाठ को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार सँजोता है कि यह भाषांतरण न लगकर मौलिक पाठ-सा लगता है। अपनी कलात्मकता के कमनीय चातुर्य से अनुवाद

लालित्य एवं सौंदर्य का लक्ष्य भाषा में अनुष्ठान करता है । साथ ही साथ अपने विज्ञान रूप के अनुशासन पर्व की ज्योति भी लक्ष्य भाषा के प्रतीकों में भरता है । अपने शिल्परूप की अनल्प तांत्रिकता से लक्ष्य भाषा में शिल्प की सुषमा प्रस्फुटित करता है ।

इस घटक में यह प्रमाणित किया गया है कि अनुवाद में विज्ञान, कला और तंत्र-तीनों की विशेषताएँ निहित हैं । वस्तुतः अनुवाद इन तीनों की त्रिवेणी है । यह निरूपण ही इस निबंध का उद्देश्य है ।

4.2. अनुवादः विज्ञान, कला एवं तंत्र

अनुवाद विज्ञान भी है, कला भी है और तंत्र भी । अर्धनारीश्वर में ईश्वर भी हैं और पार्वती भी है । एक व्यक्ति के कई रूप होते हैं । उसी प्रकार अनुवाद के भी कई रूप हैं । विज्ञान, कला एवं तंत्र के रूपों में अनुवाद की उपयोगिता बढ़ गयी है ।

अनुवाद प्रक्रिया में एक तरफ कलात्मकता की सुंगध है तो दूसरी तरफ वैज्ञानिकता की चमक है । उसमें तंत्र का मंत्र भी है । अपनी प्रांजल प्रक्रिया से वह परकाय प्रवेश का अद्भुत चमत्कार दिखाता है ।

4.3. अनुवाद कला है

कला सृजनात्मक एवं रचनात्मक होती है, जबकि विज्ञान प्रयोगात्मक होता है । अनुवाद कार्य में मूलकृति पर किसी प्रकार का प्रयोग नहीं किया जाता है और न वह किसी वैज्ञानिक अन्वेषण का प्रतिपादन करता है । उसके सिद्धांत

भी वैज्ञानिक सिद्धांत की तरह अपरिवर्तनशील नहीं होते । अतः देश विदेश के कई विद्वान उसे कला मानते हैं । यह स्रोत भाषा के आधार पर लक्ष्य भाषा में पुनःसृजन करता है । इस प्रक्रिया में स्रोत भाषा की विशेषताओं के साथ कभी-कभी लक्ष्य भाषा में अनुवादक के व्यक्तित्व का प्रतिफलन हो सकता है । विज्ञान में मौलिकता होती है, जबकि अनुवाद स्रोत भाषा की विषयवस्तु को ज्यों की त्यों लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है । इसमें मौलिकता का प्रश्न नहीं उठता । अनुवाद स्रोत भाषा के शब्द, अर्थ, प्रभाव, लोकोक्ति, मुहावरे आदि सभी विशेषताओं को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है । कलात्मक चातुर्य के साथ इन सभी तत्वों को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि लक्ष्य भाषा के पाठक को यह अनुवाद-सा नहीं लगकर मौलिक रचना-सा लगता है । इस कलात्मक सौंदर्य के कारण ही अनुवाद प्रक्रिया में मूल लेखक की संवेदनशीलता दृग्गोचर होती है । अनुवादक 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' निविष्ट न कर, पारदर्शक नव्यता प्रदर्शित करता है । मूल लेखक की आत्मा से उसकी आत्मा पूर्णतः एकमेक हो जाती है । साधारणीकरण की बिन्दु पर पहुँचकर उसका अनुवाद सृजन या पुनःसृजन बन जाता है । उसकी अनूद्य कृति कला की वस्तु बन जाती है । इस सृजन कार्य में अनुवादक मूल लेखक के जीवन के अमूल्य क्षणों से होकर गुजरता है । विषय वस्तु एवं रूप का पुनःसृजन कलात्मक ढंग से किया जाता है । अनुवादक को अपनी ओर से जोड़ने का अधिकार नहीं है, तथापि अनुवाद में कुछ छूटता है, कुछ जुड़ता है । सफल लेखक की भाँति अनुवादक छूटे हुए अंशों के स्थान पर नये अंशों को इस प्रकार जोड़ता है कि लक्ष्य भाषा के पाठक को अनुवाद मौलिक कृति का आनन्द प्रदान करता है । पाश्चात्य संसार के

थियोडार सेवरी, जॉर्ज स्नीनर आदि अनुवाद को कला ही मानते हैं ।

डॉ.मिताली का मंतव्य :

डॉ.मिताली जी के शब्दों में काव्यानुवाद में काव्य के विभिन्न तत्वों के संयोजन से लक्ष्य भाषा पाठ को इस प्रकार सजाया जाता है कि अनुवाद एक दम मौलिक-सा लगता है । अनुवाद का कला रूप इस संदर्भ में पूर्णतः निखर उठता है ।

4.3.1. अनुवाद के कला रूप में मौलिकता

श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन शिल्प और कला में अंतर बताते हुए कहते हैं कि कला में कलाकार की मौलिक उद्भावनाएँ और कल्पनाएँ प्रकट होती हैं, जबकि शिल्प में कोई खासियत नहीं होती । कला ईश्वरदत्त या जन्मजात रुचि, अभिरुचि या राग द्वेष पर निर्भर है । शिल्प के लिए अभ्यास मात्र पर्याप्त है । कला में आत्माभिव्यक्ति संभव है । कला सर्जना की क्रिया से संबंधित है । अनुवाद पुनः सर्जन है और उसमें अनुवादक की अपनी प्रतिभा अवश्य प्रकट होती है । इसलिए वह कला है । अनुवाद अंशतः कला है ।

4.3.2. कलारूप में अनुवाद

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब ही नहीं, संस्कृति व सभ्यता का परिचायक भी है । इसलिए विभिन्न भाषाओं के साहित्य के पठन-पाठन से विभिन्न भाषाभाषी जनगण पारस्परिक सहयोग बढ़ा लेते हैं । विभिन्न भाषा साहित्यों का ग्रन्थ परिचय अनुवाद के द्वारा ही संभव है । कला के रूप में अनुवाद साहित्यिक व

शास्त्रीय ग्रन्थों को आकर्षक बनाता है । विश्वमैत्री व विश्व बंधुत्व अनुवाद के माध्यम से संपन्न होता है । पुनःसृजन प्रक्रिया में जो कलात्मकता निखरती है, वह अनुवाद के कला रूप व शैली को चमकाती है ।

4.3.3. कला की सृजनात्मकता

श्री तीर्थ वसंत के शब्दों में अदृश्य सत्य को प्रत्यक्ष करना ही सौंदर्य कला का मूलभूत प्रयोजन है । साहित्यकार की कला और शिल्प, औचित्य और उपयुक्तता, संचेतना और संवेदनशीलता से सौन्दर्य को अनुवाद की भाषा में पुनर्जीवित करने के लिए दुगुने त्याग व श्रम की अपेक्षा है । अपनी चेतना को इस तरह प्रयोग में लाना पड़ता है, जिससे कि मूल ग्रन्थकार की अनुभूति रचना की वस्तु एवं शैली का पुनःसृजन हो जाय । जब अनुवाद कला सृजनात्मक कला का पद प्राप्त करना चाहती है, तब अनुवाद को उस तरल क्षण को अपनी कल्पना में संजोने की क्षमता पैदा करनी चाहिए । यह कठिन कार्य है । अनुवादगत कला सृजनात्मकता से उसका कला रूप निखरता है ।

4.3.4. अनुवाद का कला रूप और शैली

भाषा में स्वभावतः अनेक शैलियों का सम्मिश्रण रहता है । प्रत्येक लेखक समय एवं विषय के अनुसार विभिन्न शैलियों का प्रयोग करता है । काव्य रचना के समय उसकी शैली वही नहीं रहती, जो तर्क संगत भाषण देते समय या वक्तृतापूर्ण उपदेश देते समय वह प्रयोग में लाता है । कथोपकथन और मधुर व्यंग्य के तन्तु विन्यास से तत्व ज्ञानी का तन्तु-विन्यास भिन्न है । यदि अनुवादक हर प्रकार की शैली में निपुण नहीं है, तो वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकता ।

शैली का सुंदर रूपायन अनुवाद के कला रूप में चार चाँद लगाता है ।

4.3.5. चेतना से कला रूप का रूप संवर्द्धन

श्री तीर्थ वसंत प्रत्येक साहित्यिक कार्य में साहस के दर्शन करते हैं । अनुवाद कार्य भी एक साहसिक कार्य है ।

होरेस, सिसिरो, ड्राइडेन, पोप, शेली, गेटे एवं बोदलेयर जैसे सृजनशील कलाकारों ने ऐसा ही साहसपूर्ण अनुवाद कार्य किया । ऐसे अनुवादकों ने स्वयं को खोकर स्वयं को पाने की कला का यज्ञ किया । ये शब्द जाल में न उलझकर शब्दों की आत्मा तक पहुँचने का प्रयास करते हैं तथा रूढ़िगत अनुरूपता को खोजते हैं । वे रचनात्मक फोटोग्राफर की भाँति मूल में न तो कुछ जोड़ते हैं और न उसमें से कुछ निकालते हैं । मूल की चेतना से उनके अंतर में जो आकर्षण पैदा हुआ है, उसकी प्रतिच्छाया उनके अनुवाद में प्रतिबिम्बित होती है । ड्राइंगरूम में रखे निर्जीव गीध की अपेक्षा जीवित गौरैया ज्यादा आकर्षक है । यह मौलिक चेतना एवं सौंदर्य दृष्टि अनुवाद के कला रूप के लिए वरदान है ।

4.3.6. मूल सौन्दर्य की रक्षा कलात्मकता से संभव है

यदि मूल-ग्रन्थ के साहित्यिक सौंदर्य, कवित्व, कल्पना, नाटकीय-प्रभाव आदि को कायम रखना है तो अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह ऐसी शैली का अनुसरण करे, जिससे लगे कि स्वयं लेखक अनुवाद की थाह में लिख

रहा है । कला के सूक्ष्म वैभव के बिना यह संभव नहीं । अनुवाद का कला-रूप मूल सौंदर्य की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ।

4.3.7. शब्दानुवाद की विसंगतियों का निवारण कला रूप द्वारा

एक साधारण रचना का तो शाब्दिक अनुवाद संभवतः ठीक हो सकता है, पर उच्च स्तरीय रचना के लिए शब्दानुवाद व्यावहार्य नहीं है । कोई भी दो भाषाएँ बिलकुल एक जैसी नहीं हैं जो समानार्थक शब्दों द्वारा परस्पर आदान-प्रदान कर सकें । तथापि शाब्दिक अनुवाद के अभिलाषी मूल रचना के हर शब्द को कुरान का आयात समझते हैं, जिसके साथ छेड़खानी करना अपराध के समान है । कार्डिनल न्यूमन और जॉनसन का परामर्श है कि आप रचना को सुधारने या मूल ग्रन्थकार से आगे बढ़ने का प्रयास न करें, क्योंकि इस प्रकार आप केवल अनुवाद को ही सुधार सकते हैं । मूल-रचना वैसी की वैसी रहेगी । शब्दानुवाद की अपनी महत्ता है । अनुवाद के कलारूप के कारण शब्दानुवाद विकृत नहीं होता । शब्दानुवाद की कमियों एवं विसंगतियों को अनुवादक अपने कलातत्व के द्वारा दूर करता है ।

4.3.8. भावानुवाद में अनुवाद के कलारूप की भूमिका

विचार का अर्थ सार प्रस्तुतीकरण नहीं है । आम का रस आम नहीं है । इसी तरह मात्र सार - प्रस्तुतीकरण अनुवाद नहीं है । श्री तीर्थ वसंत के शब्दों में जिस तरह गरमी आग से पृथक् नहीं की जा सकती, उसी तरह विचार को भी शब्द से अलग नहीं किया जा सकता । प्रकृति की भाँति भाषा भी विचार की अन्तरात्मा का अपूर्ण प्रकाश है । शब्द व विचार का अनुवाद साहित्यिक शब्दों में

साधारण शब्दों की अपेक्षा अधिक अर्थ गाम्भीर्य से समंचित होता है । यह अर्थ विशिष्ट वाक्य-विन्यास, छन्द-कौशल, ऐतिहासिक ज्ञान व व्यक्तिगत अनुभव के कारण कई भाव छायाओं से अलग से आवृत होता है । शब्दों के विशिष्ट क्रम एवं तद्‌गत स्वर लहरी से ये भावछायाएँ अनावृत हो ज़ाती हैं । शब्दों की इन सूक्ष्मताओं को पकड़ने की और वाक्यों में लाक्षणिकता लाने की योग्यता जिस व्यक्ति में नहीं है, वह उत्कृष्ट कोटि का कवि नहीं बन सकता । शेक्सपीयर के शब्दों में जैसे झीने रेशमी आवरण में किसी रूपवती का मुखड़ा झलकता है, उसी प्रकार शब्दों के आवरण में भाव या विचार झलकता है । भाव के इस सुंदर बंधुर प्रकाशन में अनुवाद का कला रूप सहायक बनता है ।

4.4. अनुवाद विज्ञान है

अनुवाद प्रक्रिया में पहले स्रोत भाषा के मूलपाठ का विक्रोडीकरण होता है । तत्पश्चात् क्रोडीकरण के द्वारा उसका अंतरण लक्ष्य भाषा में होता है । वैज्ञानिक के मन और मस्तिष्क के आवेग के साथ अनुवादक दोनों भाषाओं के भाषिक तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन करने के उपरांत मूलपाठ का क्रोडीकरण लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करता है । नाइडा अनुवाद को प्रक्रिया की समझ के स्तर पर विज्ञान मानते हैं, क्योंकि एक वैज्ञानिक की तरह अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक विभिन्न स्तरों से होकर गुजरता है । विज्ञान का परिधान पहनकर अनुवाद ध्वनिविज्ञान, शब्द विज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, प्रोक्ति विज्ञान आदि का प्रश्रय ग्रहण करता हुआ मूल सौंदर्य चेतना का चित्र प्रस्तुत करता है ।

4.4.1. वैज्ञानिक प्रक्रिया

अनुवाद स्रोत भाषा की सामग्री को प्रतीकों के द्वारा लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करते समय न जाने कितनी बार वैज्ञानिक चिन्तन का प्रश्रय ग्रहण करता है ! न जाने कितनी बार भाषा विज्ञान, मनोविज्ञान आदि की सहायता से अभिव्यक्ति को समग्रता देने का प्रयत्न करता है !

4.4.2. अनुवाद अंशतः विज्ञान है

विज्ञान किसी विषय का व्यवस्थित विशिष्ट नियमों का पालन अवश्य करता है । अनुवाद प्रायोगिक भाषा विज्ञान के अंतर्गत स्थान पाता है । अनुवाद का विज्ञान पक्ष वास्तविक अनुवाद की पृष्ठभूमि होता है । निश्चित नियमों का पालन करने के बावजूद अनुवाद का कला पक्ष उभरता है । अतः अनुवाद को अंशतः विज्ञान माना जा सकता है ।

4.5. अनुवाद तंत्र है : डॉ.मिताली जी का मंतव्य

डॉ.मिताली जी के अनुसार अनुवाद एक तंत्र है । शिल्प के रूप में उसका अध्ययन किया जाता है । जिस अर्थ में काव्य या चित्र कला है, उस अर्थ में अनुवाद कला नहीं है । विज्ञान की तरह अनुवाद नया अन्वेषण प्रस्तुत नहीं करता । अतः वह विज्ञान भी नहीं है । अनुवाद की माँग सभी क्षेत्रों में बढ़ रही है । इस यांत्रिक तत्परता के कारण अनुवाद शिल्प का रूप धारण करता है । शिल्प में अभ्यास का बहुत बड़ा स्थान होता है । अभ्यास करते-करते अनुवादक कुशल हो सकता है । लेकिन इस अभ्यास प्रक्रिया में यांत्रिक होने की संभावना में योजना बनाने तक मौलिकता की आवश्यकता है । एक बार कार्य योजना बन

जाय, तो मशीनी अनुवाद शिल्प बन जाता है । इसलिए अनुवाद अंशतः शिल्प है । इस प्रकार अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और शिल्प भी है ।

4.6. निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अनुवाद न विज्ञान है, न कला है और न तंत्र ही । साथ ही इन तीनों की विशेषताएँ उसमें दृष्टिगोचर होती हैं । रचनात्मक कौशल और सृजनात्मक धरातल पर अनुवाद कला के रूप में दर्शन देता है । अनुवाद में निहित यांत्रिक तत्परता के कारण वह शिल्प का रूप धारण करता है । वैज्ञानिक दृष्टि के कारण वह विज्ञान भी कहलाता है ।

4.7. सारांश

इस घटक में अनुवाद के वास्तविक स्वरूप पर विचार करते हुए यह तथ्य समुद्‌घाटित किया गया है कि अनुवाद सफलता के गौरीशंकर पर पहुँचकर मौलिक कृति-सा लगता है और इस भव्य उत्थान में उसके तीन रूपों की महत्वपूर्ण भूमिका सक्रिय है -

कलारूप, विज्ञानरूप और तंत्ररूप ।

इस निबंध में यह सिद्ध किया गया है कि अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और तंत्र भी ।

जिस प्रकार हरिहर मूर्ति में विष्णु भी हैं और शिव भी, उसी तरह अनुवाद के कलेवर में कला, विज्ञान और तंत्र की विभिन्न विशिष्टिताओं के मयूख विद्यमान हैं । जिस प्रकार फूल में रंग भी है, सौरभ भी है और पराग भी, उसी प्रकार

अनुवाद के शरीर में कला, विज्ञान तथा तंत्र के ह्रदय स्वरों का गुंजन है ।

इस लेख में यह निरूपित किया गया है कि इन तीनों रूपों के समन्वय के कारण अनुवाद की उपयोगिता संप्रवर्द्धित हो गयी है । कला, विज्ञान और तंत्र के रूपों में अनुवाद स्त्रोत भाषा के मूलपाठ को क्रमशः सौंदर्य, शक्ति तथा औपयोगिकता से विभूषित कर अनूदित पाठ में प्रस्तुत करता है । कला सृजनात्मक है । लक्ष्य भाषा के पाठ को सुंदर एवं सुभग बनाकर अनुवाद प्रक्रिया पुनः सृजन का कार्य संपन्न करती है । कभी-कभी एतत्प्रक्रिया में अनुवादक के व्यक्तित्व का प्रतिफलन होता है । संवेदनशीलता के साथ कलात्मक सुभगता भी लक्ष्य भाषा के पाठ में संपन्न होती है । इस कलात्मक सौंदर्य के कारण अनुवाद काव्यानुवाद में अपूर्व सुषमा संयोजित कर उसे मौलिकता का सौरभ लेपन प्रदान करता है । इस प्रकार अनुवाद अपने कला रूप को सिद्ध करता है । इस घटक में अनुवाद के कला रूप में विद्यमान मौलिकता एवं सृजनात्मकता पर प्रकाश डालते हुए यह निरूपित किया गया है कि इस रूप के कारण अनुवाद वैश्विक लोक मंगल भावना को भी प्रश्रय देता है । सृजनात्मकता के कारण कला रूप निखरता है । अनुवाद के कला रूप में शैली की सुभगता, चेतना का उत्कर्ष, विसंगतियों का निवारण, शब्दानुवाद का सौंदर्य, भावव्यंजना की सूक्ष्मता आदि के कारण चार चाँद लग जाते हैं ।

अनुवाद विज्ञान भी है । अनुवाद के वैज्ञानिक स्वरूप के कारण स्त्रोत भाषा की सामग्री लक्ष्य भाषा में अपने संपूर्ण वैभव के साथ प्रतिष्ठापित होती है । एक वैज्ञानिक की तरह अनुवादक विभिन्न स्तरों से होकर गुजरता है । यह

निरूपित किया गया है कि विज्ञान का परिधान पहनकर अनुवाद ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, शब्द विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, प्रोक्ति विज्ञान आदि का प्रश्रय लेकर मूल सौंदर्य चेतना को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करता है । अतः अनुवाद अंशतः विज्ञान भी है ।

शिल्प के रूप में अनुवाद का अध्ययन इस घटक में किया गया है । अनुवाद यांत्रिक तत्परता के कारण शिल्प का रूप धारण करता है । अभ्यास प्रक्रिया से अनुवाद में यांत्रिकता उभरती है । यांत्रिक अनुवाद से अनुवाद का रूप और निखरता है ।

इस घटक में उपर्युक्त विवेचन के द्वारा यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद कला, विज्ञान तथा शिल्प की विभिन्न विशेषताओं से विभूषित होकर सत्‍ शिवं सुन्दरम् रूप धारण करता है । निष्कर्षतः यह सिद्ध किया गया है कि अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और शिल्प भी ।

4.8. प्रश्न

1. प्रमाणित कीजिए कि अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और तंत्र भी ।
2. अनुवाद की प्रकृति का परिचय दीजिए ।

4.9. उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

1. अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और तंत्र भी ।

अनुवाद में कला, विज्ञान और तंत्र के विभिन्न तत्व और आयाम समाहित

हैं । कतिपय विद्वान उसे केवल कला मानते हैं । चंद विद्वान उसे कला न मानकर केवल विज्ञान मानते हैं और कतिपय विद्वान उसे तंत्र के रूप में प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं । उसकी प्रकृति में कला, विज्ञान एवं तंत्र -- इन तीनों के लक्षण दृग्गोचर होते हैं ।

इस प्रश्न के उत्तर में यह निरूपित करना है कि उसमें ये तीनों रूप विद्यमान हैं ।

अनुवाद का कला रूप

अनुवाद एक प्रायोगिक कला है । शब्द प्रयोग, प्रतीक व अभिव्यक्ति में ललित्य लाने का प्रयत्न, प्रमुखतः साहित्यिक अनुवाद में निहित आलंकारिकता आदि से लक्ष्य भाषा में अनुवाद प्रक्रिया के द्वारा प्रतिस्थापित पाठ अत्यंत आकर्षक बनता है । अनुवाद की रचना प्रक्रिया इस प्रकार के कार्य में केवल मूल पाठ की छाया मात्र न रहकर उसका सुंदर प्रतिरूप बन जाता है । यह सौंदर्य चेतना अनुवाद को कला का रूप देती है । कलात्मकता की यह सूक्ष्म शक्ति साहित्य के अनुवाद में संभव है । सूचना साहित्य में यह मुमकिन नहीं है । अभिव्यक्ति प्रधान अनुवाद में भावानुवाद प्रक्रिया के कारण कोमलता, सुभगता एवं सुन्दरता आप ही आप आ जाती है, जिस के कारण अनुवाद कला के समीप पहुँच जाता है । कलात्मकता के चातुर्य से अनुवादक अपनी कृति को सौंदर्य का बाना पहनाता है । कला सृजनात्मक होती है । लक्ष्य पाठ में सुभगता का सृजन कर अनुवाद अपनी सृजनात्मकता निरूपित करता है । कला में लेखक के व्यक्तित्व का प्रतिफलन होता है । उसी प्रकार अनुवाद में कभी-कभी अनुवादक

के व्यक्तित्व की छाया प्रतिफलित होती है । अनुवाद की प्रकृति के कला रूप के कारण ही उसमें वैश्विक लोक मंगल भावना को प्रश्रय मिलता है । शैली की सुन्दरता, सृजनात्मकता, विसंगतियों के निर्वहरण आदि के कारण अनुवाद कला का रूप धारण करता है ।

अनुवाद का विज्ञान रूप

अनुवाद विज्ञान भी है । इस घटक में अनुवाद के विज्ञान रूप का निरूपण करते हुए जो विभिन्न तथ्य संप्रदत्त हैं, उनका उल्लेख करना उत्तर में अपेक्षित है । अनुवाद की वैज्ञानिकता के कारण ही स्रोत भाषा की सामग्री की प्रतिस्थापना लक्ष्य भाषा में संपन्न होती है । अनुवादक एक वैज्ञानिक की तरह विभिन्न स्तरों से होकर गुज़रता है । विज्ञान का परिधान पहनकर ही अनुवाद ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, शब्द विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, प्रोक्ति विज्ञान आदि का प्रश्रय लेकर मूल का सौंदर्य वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करता है । अतः अनुवाद अंशतः विज्ञान भी है ।

अनुवाद का शिल्प रूप

अनुवाद कला और विज्ञान मात्र नहीं, वरन् शिल्प भी है । अभ्यास करते करते अनुवादक एक शिल्पी की तरह चतुर बन जाता है । यांत्रिक अनुवाद से अनुवाद का रूप निखरता है । अतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है और शिल्प भी । घटक में प्रदत्त अन्य अंशों का उल्लेख आवश्यक है ।

2. **अनुवाद की प्रकृति**

अनुवाद पूर्ण रूप से न कला है, न विज्ञान है, और न तंत्र ही । किन्तु इसकी विशेषता यह है कि इस में इन तीनों के गुण दिखाई पड़ते हैं । प्रकृति का अर्थ स्वभाव के अर्थ में लेना चाहिए । अनुवाद की प्रकृति में कला, विज्ञान और तंत्र इन तीनों के लक्षण दृग्गोचर होते हैं । इस प्रश्न के उत्तर में यह निरूपित करना है कि अनुवाद कला भी है, विज्ञान भी है, और तंत्र भी । प्रथम प्रश्न के उत्तर के अंश इसमें अपेक्षित हैं ।

4.10. शब्दावली

घटक	-	Unit
तथ्य	-	Fact
गौरीशंकर	-	Everest
कला	-	Art
तंत्र	-	Technique
तांत्रिकता	-	Technology
कलात्मक	-	Artistic
उत्थान	-	Upliftment
सक्रिय	-	Active
भूमिका	-	Role, Part Played
शिल्प	-	Mechanical Art
हर	-	Lord Shiva
कलेवर	-	Body
सौरभ	-	Fragrance
पराग	-	The Pollen of a flower
गुंजन	-	Humming, Buzzing
सुभग	-	Fine, Beautiful
व्यक्तित्व	-	Personality

प्रतिफलन	-	Reflection
सुषमा	-	Beauty
मौलिकता	-	Originality
विद्यमान	-	Existing
सृजनात्मकता	-	Creativity
वैश्विक	-	Universal
चेतना	-	Consciousness
विसंगत	-	Unharmonious
स्तर	-	Stage, Standard
परिधान	-	Garment
ध्वनि विज्ञान	-	Phonetics
रूप विज्ञान	-	Morphology
शब्द विज्ञान	-	Wordology
अर्थ विज्ञान	-	Semantics
प्रोक्ति विज्ञान	-	Discoursology
यांत्रिक	-	Mechanical
सत्यं शिवं सुन्दरम्	-	The true, the good, the beautiful

4.11. संदर्भ ग्रंन्थ एवं निबंध

अ. निबंध

1. अनुवाद की प्रकृति - डॉ.मिताली भट्टाचारजी

2. अनुवाद विज्ञान है या कला - डॉ.शिवराज हल्लीखेड़

3. अनुवाद की कठिनाइयाँ - डॉ.वी.एस.नरवणे

4. अनुवाद - श्री पी.के.बालसुब्रह्मणियन

5. अनुवाद : एक वैज्ञानिक कला (अनुवाद ग्रंथ से) - संपादक

आचार्य बी.एन.केशवमूर्ति

6. सृजनात्मक प्रतिभा और अनुवाद - डॉ.प्रभाकर माचवे

7. अनुवाद : एक विचार - जैनेन्द्र कुमार

8. अनुवाद : एक कला - तीर्थ वसंत ।

आ. ग्रन्थ

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ.भोलानाथ तिवारी

2. अनुवाद - डॉ.जी.गोपीनाथन ।

NOTES

NOTES

इकाई पाँच

अनुवाद के प्रकार

5.0. प्रस्तावना

5.1. उद्देश्य

5.2. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की उपादेयता

- 5.2.1. सीमा के आधार पर अनुवाद के प्रकार
- 5.2.2. भाषिक स्तर के आधार पर अनुवाद के प्रकार
- 5.2.3. क्रम के आधार पर अनुवाद के प्रकार

5.3. शब्दानुवाद

5.4. आदर्श अनुवाद

5.5. अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार

5.6. मूलनिष्ठ अनुवाद

- 5.6.1. शब्दानुवाद
- 5.6.2. व्याख्यानुवाद
- 5.6.3. अधिकार्थ अनुवाद
- 5.6.4. आशु अनुवाद
- 5.6.5. आदर्श अनुवाद/सहाजानुवाद
- 5.6.6. भावानुवाद
- 5.6.7. रूपातंरण
- 5.6.8. सारानुवाद

5.7. प्रकृति के आधार पर अन्य भेद

5.8. वाङ्मय के आधार पर अन्य प्रकार

5.9. साहित्यिक अनुवाद एवं साहित्येतर अनुवाद में अंतर

5.1.9. गद्यत्व-पद्यत्व के आधार पर अनुवाद के प्रकार

5.9.1.1. पद्यानुवाद

5.10. साहित्य विधा के आधार पर अनुवाद के प्रकार

5.10.1. काव्यानुवाद

5.10.2. नाट्य अनुवाद

5.10.3. एकांकी का अनुवाद

5.10.4. कथानुवाद

5.10.5. निबंधानुवाद

5.10.6. अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद के प्रकार

5.11. भाषा के प्रकार पर आधारित अनुवाद

5.11.1. अर्थ पक्ष के आधार पर अनुवाद के प्रकार

5.12. कथ्य के आधार पर प्रकार

5.13. पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित अनुवाद के प्रकार

5.13.1. कैटफ़ोर्ड का प्रथम विभाजन

5.13.2. जुलियाना हॉउस के अनुसार अनुवाद के प्रकार

5.13.3. कसा ग्रांदे के अनुसार अनुवाद के प्रकार

5.14. शैली प्रधान विधाएँ

5.14.1. नाटक के अनुवाद के विशेष आयाम

5.14.1.1. नाटक व एकांकी की सामान्य समस्याएँ एवं उनका निराकरण

5.14.2. कथा साहित्य का अनुवाद

5.14.2.1. कथानुवाद की विडम्बना

5.14.2.2. कथा-उपन्यास का अनुवाद

5.14.2.3. उपन्यास के अनुवाद में ध्यातव्य तत्व

5.14.3. शीर्षकों का अनुवाद

5.15. उपन्यासेतर नाटकेतर गद्य विधाओं का अनुवाद

5.15.1. वाणिज्य विषयक अनुवाद

5.15.2. दूर संचार अनुवाद

5.15.3. समाचार के अनुवाद की भाषा

5.15.4. नवीन अनुवाद

5.15.5. वाणिज्यानुवाद की प्रकृति

5.15.6. वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद

5.15.7. समाचार संशोधन

5.15.8. मानविकी एवं समाज शास्त्रीय विषयों का अनुवाद

5.15.9. विज्ञापन कला

5.15.10. यंत्रानुवाद

5.15.10.1. बोलनेवाला यंत्र

5.15.10.2. हिन्दी के यंत्र

5.15.11. सांस्कृतिक अनुवाद

5.15.12. अलंकारों का अनुवाद

5.16. निष्कर्ष

5.17. सारांश

5.18. संभाव्य प्रश्न

5.19. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

5.20. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

5.21. शब्दावली

5.0. प्रस्तावना

इस घटक में आप अनुवाद के विभिन्न प्रकारों तथा उन प्रकारों की विशिष्टताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे । इस घटक में प्रदत्त विवरण से आपको यह भी ज्ञात होगा कि विषय-भेद के कारण अनुवाद की विधाओं एवं शैलियों में अंतर आ जाता है । अनुवाद को सुबोध एवं सक्षम बनाने हेतु उसके निश्चित प्रकार का प्रयोग करना पड़ता है । इस घटक में आप आदर्श अनुवाद, शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद, रूपांतरण आदि प्रकारों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त करेंगे ।

5.1. उद्देश्य

प्रस्तुत घटक में अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख करते हुए उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है । विषय भेद के कारण अनुवाद की विधाओं में अंतर आ जाता है । उसका प्रकार भी बदल जाता है । साहित्यिक अनुवाद में शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद नहीं होता । इसमें भाव को प्रमुख स्थान देते हुए विषय, विचार आदि के अनुवाद में अनुवादक दत्तचित्त हो जाता है ।

किसी के भाषण का अनुवाद करते समय अनुवाद का प्रकार बदल जाता है । इस प्रसंग में शीघ्र गति से आशु अनुवाद करना पड़ता है । तत्व शास्त्र का अनुवाद करते समय कतिपय तत्वों का अनुवाद व्याख्या के रूप में करना पड़ता है । अब यह तथ्य स्पष्ट हो गया है कि साहित्यिक विधा, गद्यत्व, पद्यत्व, विषय, शैली, अनुवाद की सीमा, प्रकृति, वाङ्मय, लेखन-अलेखन, पूर्णता-अपूर्णता आदि के आधार पर अनुवाद के प्रकार अस्तित्व में आते हैं ।

इस घटक के अंशों के पठन से छात्र यह जान सकेंगे कि किस विषय के अनुवाद में अनुवाद के किस प्रकार का प्रयोग होना चाहिए । इस तथ्य का निरूपण इस घटक का उद्देश्य है ।

5.2. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की उपादेयता

आधुनिक युग में अनुवाद अन्य शास्त्रों, कलाओं एवं तंत्रों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण बन रहा है, क्योंकि ज्ञान की इन सब शाखाओं के प्रचार-प्रसार का माध्यम अनुवाद है । विगत काल की अपेक्षा वर्तमान काल में ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं से संबंधित ग्रंथ अत्यंत अधिक संख्या में प्रणीत हो रहे हैं । इन ग्रंथों का प्रणयन एक भाषा में नहीं, बल्कि विभिन्न भाषाओं में हो रहा है । इन सभी पुस्तकों का अध्ययन असंभव है, क्योंकि इन सभी भाषाओं का ज्ञान कोई भी मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता ।

विभिन्न भाषाओं में रचित इन ग्रन्थों में उपलब्ध ज्ञान धन मानव केवल अनुवाद के द्वारा ही प्राप्त कर सकता है । यह अनुवाद किसी एक प्रकार में न होकर विभिन्न प्रकारों में होगा, अर्थात् कहीं शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद होगा, तो अन्यत्र भावनुवाद होगा । समय, आवश्यकता, औचित्य आदि के अनुसार किसी ग्रन्थ का पूर्ण अनुवाद होगा तो और किसी पुस्तक का आंशिक अनुवाद होगा । कहने का तात्पर्य यह है कि अनुवाद कार्य एक ही प्रकार में न होकर, विषय, आवश्यकता आदि के अनुसार कई प्रकारों में होता है ।

छात्र बंधु इस इकाई में अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

5.2.1. सीमा के आधार पर अनुवाद के प्रकार

सीमा के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार हैं -

i) पूर्ण अनुवाद

ii) आंशिक अनुवाद ।

पूर्ण अनुवाद - पूर्ण अनुवाद वह प्रकार है, जिसमें स्रोत भाषा के ग्रन्थ अथवा लेख का अनुवाद लक्ष्य भाषा में पूर्णतः किया जाता है, अर्थात् स्रोत भाषा में लिखित सामग्री के प्रत्येक भाग एवं अनुभाग का रूपांतरण अन्य भाषा में पूणतः प्रस्तुत किया जाता है । इसमें काट-कूट या तोड़-फोड़ नहीं होती ।

आंशिक अनुवाद - नाम से ही स्पष्ट है कि इसमें स्रोत भाषा की सामग्री के कतिपय मुख्य अंशों का अनुवाद लक्ष्यभाषा में किया जाता है । अनुवाद का यह प्रकार प्रमुखतः साहित्यिक ग्रंथों के भाषांतरण में प्रयुक्त होता है ।

5.2.2. भाषिक स्तर के आधार पर अनुवाद के प्रकार

भाषिक स्तर के आधार पर अनुवाद के दो भेद किए जाते हैं -

i) समग्रता में अनुवाद

ii) निर्बद्ध अनुवाद ।

i) समग्रता में अनुवाद

इसका अर्थ है — स्रोत भाषा में उपलब्ध सामग्री का अनुवाद लक्ष्य भाषा में सभी स्तरों पर किया जाता है, अर्थात् स्रोत भाषा में निहित शब्दावली, व्याकरण स्तर, लक्ष्य भाषा का पूर्ण ज्ञान, कथ्य, कथन आदि सभी स्तरों को लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है ।

ii) **निर्बद्ध अनुवाद**

इसमें स्रोत भाषा की सामग्री को लक्ष्य भाषा में समानार्थक पाठ के द्वारा एक ही स्तर पर प्रतिस्थापित किया जाता है । स्वर विज्ञान, लिपि विज्ञान, व्याकरण अथवा शब्द विज्ञान के आधार पर अनुवाद संपन्न होता है । इसके लिप्यन्तर को लिपि विज्ञानपरक इकाइयों द्वारा व्यक्त किया जाता है ।

5.2.3. क्रम के आधार पर अनुवाद के प्रकार

क्रमबद्ध अनुवाद

इसे श्रेणी या पदक्रम पर आधृत अनुवाद भी कहा जाता है । व्याकरण अथवा स्वर वैज्ञानिक पद क्रम के आधार पर अनुवाद संपन्न होता है । इसके तीन भेद हैं -

1. मुक्त अनुवाद
2. शब्द अनुवाद एवं
3. शब्द सह अनुवाद ।

1. मुक्त अनुवाद

मुक्त अनुवाद में शब्द के स्तर पर अनुवाद क्रमबद्ध रहता है । यह सदा मुक्त या अबद्ध होता है । यह किंचित् मूलाश्रित एवं मूलोन्मुख होता है ।

2. शब्दानुवाद : डॉ.मिताली जी का मत

डॉ.मिताली भट्टाचारजी के अनुसार यह शब्दानुवाद शब्दसह अनुवाद एवं मुक्त अनुवाद के बीच की श्रेणी है । इसमें स्रोत भाषा के व्याकरण के अनुसार कहीं-कहीं परिवर्तन किया जाता है ।

शब्दानुवाद के तीन प्रकार हैं -

i) शब्द क्रमाग्रही ,
ii) शब्दाग्रही तथा
iii) सम्यक् आग्रही ।

i) शब्दक्रमाग्रही

शब्दक्रमाग्रही में लक्ष्य भाषा में शब्दों का क्रम स्रोत भाषा के अनुसार होता है ।

उदा. I am going to Chennai.
मैं जा रहा हूँ चेन्नई ।
Rama accepted the gift
राम ने स्वीकृत की भेंट ।

यह अनुवाद हास्यास्पद होता है, क्योंकि स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार शब्दक्रम भिन्न भिन्न होते हैं । अतः स्रोत भाषा के शब्द क्रम के अनुसार लक्ष्य भाषा का शब्द क्रम नहीं होता । अंग्रेज़ी में कर्त्ता एवं क्रिया के उपरांत कर्म आता है, जब कि हिन्दी में कर्त्ता और कर्म के बाद क्रिया आती है ।

ii) शब्दाग्रही अनुवाद

शब्दाग्रही अनुवाद में स्रोत भाषा की सामग्री के प्रत्येक शब्द का अनुवाद लक्ष्य भाषा में किया जाता है, यथा -

I saw my father in the garden.
मैंने देखा अपने पिता को बगीचे में ।

यह अनुवाद भी शब्द क्रमाग्रही अनुवाद की तरह हास्यास्पद है, क्योंकि स्रोत भाषा के शब्द क्रम के अनुसार लक्ष्य भाषा का शब्दक्रम नहीं हो सकता ।

इस प्रकार के अनुवाद से न कथ्य के प्रति न्याय किया जा सकता है और न कथन के प्रति ।

iii) सम्यक् आग्रही अनुवाद

सम्यक् आग्रही अनुवाद में मूल रचना के कथ्य व कथन दोनों का अनुवाद किया जाता है । इस प्रकार के अनुवाद में शब्द क्रम के कारण लक्ष्य भाषा में दुरूहता पैदा होती है ।

3) शब्द सह अनुवाद

इसमें प्रत्येक शब्द का अनुवाद किया जाता है । यह भी बेहूदा एवं हास्य भाजन बनता है । प्राचीन धर्मग्रंथों के अनुवाद में कहीं-कहीं इस प्रकार का निर्वहण हुआ है ।

5.3. शब्दानुवाद

डॉ.नगेन्द्र कहते हैं कि मध्य युग में पूर्व और पश्चिम दोनों में यह धारणा रही है कि अनुवाद शब्दशः होना चाहिए । यह आस्थावान मनीषियों का दृष्टिकोण था और मूलतः उसके पीछे धर्मग्रंथों के प्रति प्रगाढ श्रद्धा का भाव निहित था । इन पंडितों का तर्क यह था कि ये धर्मग्रंथ ईश्वरीय ज्ञान है और इनका लेखन अथवा अनुवाद इसी ढंग से होना चाहिए कि सामान्य व्यक्ति पर दिव्य ज्ञान का प्रभाव पड़े । शब्दानुक्रम भी अपने आप में अर्थपूर्ण और अटल होना चाहिए, ताकि उसमें निश्चय ही कुछ रहस्य निहित होगा और उस रहस्य की रक्षा की जानी चाहिए । हमारे यहाँ भी वेदादि ग्रंथों के अनुवाद में इस पद्धति का अनुसरण किया गया है ।

शब्दानुवाद की कमियाँ

1) शब्दार्थ, विशिष्ट प्रयोग, मुहावरे तथा वाक्य रचना प्रक्रिया में दोनों भाषाओं में असमानता होती ही है । इससे शब्दानुवाद विकृत बनता है ।
2) स्रोत भाषा का प्रभाव लक्ष्य भाषा पर पड़ने से सभी दृष्टियों से अनुवाद कृत्रिम बनता है ।
3) यंत्रवत् शब्दानुवाद व पंक्ति-प्रति-पंक्ति का अनुवाद हास्यास्पद बनता है । इसमें शब्दों का क्रम नहीं रहता । लेकिन हर एक शब्द का अनुवाद रहता है । यह भी घटिया है ।

5.4. आदर्श शब्दानुवाद

इसमें मूल की प्रत्येक अभिव्यक्ति इकाई का, लक्ष्य भाषा में प्राप्त पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल के भाव को लक्ष्य भाषा में प्रकट किया जाता है, यथा - The boy, who fell down from the tower, died in the hospital.

हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल अनुवाद इस प्रकार है - 'जो लड़का गोपुर से गिर पड़ा, वह अस्पताल में मर गया ।'

5.5. अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार हैं -

1) बाह्य आधार 2) आंतरिक आधार ।

अनुवाद प्रकृति अनूद्य विषय के विविध अंग यथा अनुवाद की शैली, रीति आदि से संबंधित है । इसमें यह देखा जाता है कि अनुवाद भावशः हुआ है अथवा शब्दशः अथवा छायामात्र प्रस्तुत की गई है ।

1) **बाह्य आधार**

इसके अंतर्गत तीन प्रकार आते हैं -

i) गद्यत्व - पद्यत्व आधार

ii) साहित्य विधा अथवा शैली प्रधान साहित्य

iii) साहित्येतर विषय - सूचना प्रधान कार्यालय साहित्य

2) **आंतरिक आधार**

इसके अंतर्गत दो वर्ग आते हैं -

i) मूल निष्ठ ii) मूलाश्रित ।

i) **मूलनिष्ठ अनुवाद**

इसके दो प्रकार हैं -

अ) शब्दानुवाद आ) सहजानुवाद ।

मूलाश्रित अनुवाद : आंतरिक आधार के अंतर्गत मूलाश्रित अनुवाद में लक्ष्य भाषा में आगत मूल के अंश का विवेचन किया जाता है, अर्थात् इसमें यह देखा जाता है कि मूल का पूर्ण अनुवाद हुआ है या नहीं ।

5.6. मूलनिष्ठ अनुवाद

कोई अनुवाद केवल छायामात्र रहता है और किसी में केवल सारांश दिया जाता हे । अन्य वर्ग में व्याख्या दी जाती है । इस मूलनिष्ठ अनुवाद के सात प्रकार हैं -

i) भावानुवाद
ii) छायानुवाद
iii) सारानुवाद
iv) व्याख्यानुवाद

v) रूपांतरण

vi) वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद

vii) अधिकार्थ अनुवाद ।

5.6.1. शब्दानुवाद

मूलनिष्ठ अनुवाद के इस उपवर्ग शब्दानुवाद में स्रोत भाषा के शब्दों के लिए लक्ष्य भाषा में समानार्थी शब्द रखे जाते हैं, अर्थात् इसमें स्रोत भाषा के विषय का शब्दशः अनुवाद किया जाता है । इसमें स्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द पर ध्यान दिया जाता है । मूल सामग्री के प्रत्येक अंश को स्थान दिया जाता है । विज्ञान का अनुवाद करते समय अनुवाद का यह प्रकार अपनाया जाता है । इस अनुवाद के अंतर्गत ''कुछ न छोड़ो कुछ न जोड़ो'' - पद्धति को अपनाया जाता है । मूलार्थ की रक्षा के लिए शब्दानुवाद पद्धति के साथ साथ यत्र तत्र भावानुवाद पद्धति को भी अपनाना पड़ता है । शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद में भी यह देखना पड़ता है कि स्रोत भाषा की सूक्ष्म अर्थध्वनियों का प्रतिष्ठापन लक्ष्य भाषा में हो रहा है । संप्रेषणीयता, बोध गम्यता, अर्थ ध्वनि प्रतिष्ठापन तथा पूर्णतः अभीप्सितार्थ का आनयन इसमें आपेक्षित हैं । इसके तीन उपवर्ग हैं -

i) शब्दशः अनुवाद

ii) शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद

iii) वाक्य-प्रति-वाक्य अनुवाद

शब्दानुवाद अंग्रेज़ी में बाइबिल ट्रानस्लेशन और लिटरल ट्रानस्लेशन कहलाता है ।

5.6.2. व्याख्यानुवाद

व्याख्यानुवाद में व्याख्या के साथ साथ अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है । इसमें मूल के विषयों का विस्तृत अनुवाद होता है । यह अनुवाद का आदर्श प्रकार है । मूल सामग्री का लक्ष्य भाषा में निकटतम एवं स्वाभाविक समतुल्य प्रतीकों के द्वारा अनुवाद किया जाता है । यह स्वाभाविक सटीक अनुवाद भी कहलाता है ।

भाषा या टीका परक अनुवाद/व्याख्यानुवाद

व्याख्यानुवाद या भाषा या टीका परक अनुवाद के अन्य नाम हैं - आचार्य पद्धति एवं भाषा अनुवाद । इसमें मूल की व्याख्या की जाती है । अनुवाद की सीमाएँ लाँघ कर यह **उपवर्ग भाषा** का स्थान ग्रहण करता है ।

5.6.3. अधिकार्थ अनुवाद

इस अनुवाद पद्धति में अनुवादक कथ्य और कथन में चंद अंश जोड़ता है । इन अधिक अंशों के कारण अनुवाद में नवीन स्फूर्ति आ जाती है ।

5.6.4. आशु अनुवाद

इसका अन्य नाम वार्तानुवाद है । राजनीतिक नेताओं, विद्वानों आदि के भाषणों का अनुवाद मंच पर ही प्रस्तुत किया जाता है । इस तरह के अनुवाद की माँग बढ़ रही है । बहुभाषाभिज्ञ ही आशु अनुवाद कर सकता है । इस अनुवाद के तीन आधार हैं -

1) माध्यम
2) प्रक्रिया एवं
3) पाठ ।

1) **माध्यम के आधार पर अनुवाद के प्रकार**

माध्यम के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार हैं -

i) प्रतीक प्रकार

ii) भाषा प्रकार

iii) लेखन प्रकार ।

i) **प्रतीक प्रकार के भेद**

इसके तीन भेद हैं -

अ) अंतर भाषिक

आ) अंतर प्रतीकात्मक

इ) अंतर प्रकार ।

5.6.5. आदर्श अनुवाद/सहजानुवाद

मूलनिष्ठ अनुवाद के इस उपवर्ग में अत्यंत सहज रूप से अनुवाद किया जाता है । इसमें कृत्रिमता बिलकुल नहीं होती । सहजानुवाद आदर्शानुवाद माना जाता है । इसमें पूर्वाग्रह मुक्त होकर शैली एवं कथ्य को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि पाठक को यह अनुवाद सा नहीं लगता । डॉ.मिताली भट्टाचार्जी के अनुसार इस अनुवाद में पाठक को स्रोत भाषा का स्मरण तक नहीं आता । डॉ.भोलानाथ तिवारी के शब्दों में आदर्श अनुवादक सिरिंज की वह सूई है, जो सिरिंज की दवा को ज्यों की त्यों मरीज़ के शरीर में पहुँचा देती है ।

5.6.6. भावानुवाद

मूलाश्रित अनुवाद के इस उपवर्ग में शब्द और वाक्यों पर नहीं, बल्कि अर्थ पर, अर्थात् भाव एवं विचार पर अधिक ध्यान दिया जाता है । यह शब्दानुवाद से पूर्णतः भिन्न है । इसे पर्याप्त अनुवाद भी कहा जाता है । मूल

भाव की रक्षा के लिए अर्थ छवि एवं अर्थछाया प्रतिष्ठापित की जाती है । इसमें भाव को संजोते समय मूल लेखक का व्यक्तित्व छिप जाता है ।

छायानुवाद - मूलाश्रित अनुवाद के उपवर्ग छायानुवाद में स्रोत भाषा के मूल पाठ की केवल छाया मात्र लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत की जाती है । यह छाया भी धुँधली-धुँधली होती है । इसमें मूल में प्रयुक्त नाम आदि भी बदल दिए जाते हैं । 'गीतांजली' में वेद् और उपनिषद् की छाया है । 'चित्रलेखा' में थाया की छाया द्रष्टव्य है । इस प्रकार के अनुवादों में जॉन के स्थान पर जानकीराम का प्रयोग किया जाता है । छायानुवाद में न शब्दानुवाद की गंध मिलली है और न भावानुवाद की ।

5.6.7. रूपांतरण

मूलाश्रित अनुवाद के रूपांतरण उपवर्ग में अनुवादक अपनी इच्छा के अनुसार स्रोत भाषा की सामग्री प्रस्तुत करता है, अर्थात् मूलग्रंथ की विधा इसमें बदल जाती है । 'मर्चैंट ऑफ वेनिस' का अनुवाद 'वाराणसी का व्यापारी' के रूप में हुआ है । इसमें भी नाम बदल दिए जाते हैं, यथा - सोनिया के स्थान पर सोनाली, मोहिनी के स्थान पर मोनिका, रोमन के स्थान पर रामन आदि शब्द रख दिए जाते हैं ।

5.6.8. सारानुवाद

राजनीतिक समाचार, लंबे भाषण, पत्रकारिता विषय आदि का अनुवाद सारानुवाद के रूप में किया जाता है । मूल पाठ का केवल सारांश इसमें दिया जाता है ।

वार्तानुवाद या आशु अनुवाद

दुभाषिया बनकर अनुवादक तुरन्त अनुवाद करता है । दोनों भाषाओं का ज्ञाता होना आवश्यक है ।

5.7. प्रकृति के आधार पर अन्य भेद

शब्दानुवाद में हर एक शब्द का अनुवाद होता है । अंग्रेज़ी में इसे लिटरल या 'वर्ड फार वर्ड ट्रान्सलेशन' कहते हैं । इसमें शब्दों का अनुवाद होता है । कभी कभी यह दुरूह व भद्दा होता है, यथा - 'वह पानी पानी हो गया' का अनुवाद 'He became water and water'. यह घटिया किस्म का अनुवाद है ।

मूल निष्ठ अनुवाद

यथासंभव मूल का अनुगमन करे तो उसे मूलनिष्ठ अनुवाद माना जाता है । विचार और अभिव्यक्ति दोनों में मूल पर अनुवादक ध्यान देता है और अनुकरण करता है ।

मूल मुक्त अनुवाद : डॉ.मिताली जी का मत

डॉ.मिताली जी के शब्दों में कथ्य या विचार की दृष्टि से मू[illegible]क्त अनुवाद प्रायः मूलबद्ध या मूलनिष्ठ होता है । किन्तु शैली व अभिव्यक्ति की दृष्टि से भिन्न रहता है । इसे मूलाधारित या मूलाधृत अनुवाद भी कहते हैं ।

5.8. वाङ्मय के आधार पर अनुवाद के प्रकार

वाङ्मय के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार हैं -

1) ज्ञान साहित्य का अनुवाद

2) रस अथवा शैली प्रधान साहित्य का अनुवाद ।

1) ज्ञान साहित्य

ज्ञान साहित्य अनुवाद के अन्तर्गत ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाएँ यथा-रसायन शास्त्र, भौतिकी, सांख्यिकी आदि के अनुवाद आते हैं । इन शास्त्रों के अनुवाद में कथ्य का सरल व पूर्ण अनुवाद होना चाहिए ।

2) रस/शक्ति अथवा शैली प्रधान साहित्य का अनुवाद

ज्ञान साहित्य यदि कथ्य प्रधान साहित्य है, तो रस प्रधान सांहित्य, शैली प्रधान साहित्य है । यह भावात्मक साहित्य का अनुवाद है । ललित कलाएँ, यथा-काव्य, नाटक, उपन्यास आदि इसके अन्तर्गत आते हैं ।

5.9. साहित्यिक अनुवाद एवं साहित्येतर अनुवाद में अंतर

डॉ.जी.गोपीनाथनजी के शब्दों में साहित्यिक अनुवाद शैली प्रधान अनुवाद है तो साहित्येतर अनुवाद विषय प्रधान अनुवाद है । इन दोनें में अंतर इस प्रकार है -

	साहित्यिक अनुवाद	**साहित्येतर अनुवाद**
i)	वैयक्तिक, कलापरक व आलंकारिक शैली	निर्वैयक्तिक, अनलंकृत व वस्तुनिष्ठ शैली
ii)	अर्थ के नष्ट होने की संभावना अधिक	अर्थ के नष्ट होने की संभावना कम
iii)	भावानुवाद महत्वपूण	शब्दानुवाद प्रायः आवश्यक
iv)	पारिभाषिक शब्द अनिवार्य नहीं	पारिभाषिक शब्द अनिवार्य
v)	पुनःसृजन आवश्यक	पुनःसृजन अनिवार्य नहीं

vi)	घटाया बढ़ाया जा सकता है	घटाना बढ़ाना प्रायः असंभव
vii)	परिनिष्ठित, आंचलिक, ग्रामीण, अभिव्यंजनात्मक भाषा	परिनिष्ठित सूचना परक भाषा
viii)	अनुभूति, रसात्मकता, समतुल्य प्रभाव आवश्यक	पठनीयता, प्रामाणिकता, अर्थ स्पष्टता, बोधगम्यता पर्याप्त
ix)	व्यक्तिवाचक संज्ञा का अनुवाद वर्ज्य	व्यक्तिवाचक संज्ञानुवाद वर्ज्य है ।

5.9.1. गद्यत्व - पद्यत्व के आधार पर अनुवाद के प्रकार

गद्यत्व - पद्यत्व के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार हैं -

i) गद्यानुवाद

ii) पद्यानुवाद ।

गद्यानुवाद - गद्य का अनुवाद प्रायः गद्य में ही किया जाता है । डॉ.रामचंद्रस्वामी ने कन्नड़ लेखिका त्रिवेणी के 'अपस्वर' एवं 'अपजय' उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी गद्य में किया है । कभी-कभी गद्य का अनुवाद पद्य में भी किया जाता है ।

5.9.1.1. पद्यानुवाद

मूल पद्य का अनुवाद पद्य में किया जा सकता है । कभी-कभी पद्य का अनुवाद गद्य में भी किया जाता है । पद्यानुवाद में शब्दलय व अर्थलय का निर्वहण होता है । इसके दो प्रकार हैं -

i) छंदोबद्ध अनुवाद तथा

ii) छंद मुक्त अनुवाद ।

i) छंदबद्ध अनुवाद

इसमें स्रोत भाषा के छंद का अनुवाद लक्ष्य भाषा में किया जाता है ।

ii) **छंदमुक्त अनुवाद**

इसमें स्रोत भाषा के छंद का अनुवाद लक्ष्य भाषा में नहीं किया जाता । अन्तर्लय सहित मुक्त छंद में अनुवाद किया जाता है ।

5.10. साहित्यिक विधा के आधार पर अनुवाद के प्रकार

इसके अन्तर्गत साहित्यिक विधाओं का अनुवाद किया जाता है । इस में काव्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, आत्मकथा, जीवनी, पत्र-पत्रिका, रेखा चित्र, यात्रा, संस्मरण आदि का अनुवाद होता है ।

5.10.1. काव्यानुवाद

काव्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ विधा है । काव्य का अनुवाद गद्य और पद्य दोनों में ही होता है ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने मैथ्यू आरनाल्ड के 'लाईट ऑफ एशिया' का अनुवाद पद्य में किया है । वाल्मीकि रामायण का अनुवाद पद्य और गद्य दोनों में किया गया है ।

5.10.2. नाट्य अनुवाद

नाट्य अनुवाद नाटक के रूप में किया जाता है । हरिवंशराय बच्चन ने शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद हिन्दी में मुक्त छंद में किया है । कभी-कभी नाटक का अनुवाद उपन्यास के रूप में भी किया जाता है । इसमें कथा वही रहती है, जो स्रोत भाषा में है, किन्तु लक्ष्य भाषा में केवल विधा बदल दी जाती है । नाटक के संवादों का अनुवाद इसलिए कठिन है कि केवल वह पढ़ा नहीं जाता, बल्कि रंगमंच पर प्रदर्शित किया जाता है ।

5.10.3. एकांकी का अनुवाद

अनुवाद के इस प्रकार में नाटक अनुवाद के सभी नियमों का पालन किया जाता है । एकांकी का अनुवाद एकांकी के रूप में अथवा कहानी के रूप में किया जाता है । डॉ.एसं.एम.रामचंद्र स्वामी ने हिन्दी के एकांकियों को कन्नड में रेडियो रूपांतर के रूप में प्रस्तुत किया है ।

5.10.4. कथानुवाद

इसके अन्तर्गत उपन्यास, कहानी, लघुकथा एवं क्षणिका का अनुवाद किया जाता है । शरत बाबू के 'देवदास', 'परिणीता', 'चरित्रहीन', 'श्रीकांत' आदि उपन्यासों का अनुवाद हिन्दी में किया गया है । प्रेमचंद के 'निर्मला' उपन्यास का अनुवाद डॉ.तिप्पेस्वामी ने किया है ।

उपन्यास विधा के अनुवाद में अनुवादक को शब्दानुवाद एवं भावानुवाद दोनों का प्रश्रय लेना पड़ता है ।

5.10.5. निबंधानुवाद

निबंध का अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक संख्या में निबंधों की रचना हो रही है । साधारणतः यह देखा जा रहा है कि निबंधों का अनुवाद भावानुवाद के रूप में किया जाता है । इंदिरा गाँधी के चंद निबंधों का अनुवाद डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति ने तेलुगु में प्रस्तुत किया है । डॉ. तिप्पेस्वामी, डा.एम.एस.कृष्णमूर्ति, डॉ. मिताली भट्टाचारजी आदि ने कन्नड़, बंगाली आदि भाषाओं के निबंधों का अनुवाद किया है ।

5.10.6. अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद के प्रकार ये हैं -

1) आत्मकथा अनुवाद
2) जीवनी अनुवाद
3) रेखाचित्र अनुवाद
4) यात्रा अनुवाद
5) रिपोर्ताज का अनुवाद
6) पत्र अनुवाद
7) पत्रिका अनुवाद
8) शास्त्र ग्रंथों का अनुवाद
9) ललित कलाओं का अनुवाद ।

5.11. भाषा के प्रकार पर आधारित अनुवाद

इसके अंतर्गत दो भेद हैं -

1) उपादान सापेक्ष

2) रूप सापेक्ष ।

1) उपादान सापेक्ष के भेद

इसके दो भेद हैं - i) पद्यानुवाद ii) गद्यानुवाद ।

लेखन प्रकार के दो भेद हैं - i) लिप्यंकन ii) लिप्यन्तर ।

1) लिप्यंकन

इसमें स्रोत भाषा के शब्दों की वर्तनी आदि तत्वों पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण के आधार पर शब्द बना लिया जाता है ।

उदा.: जमीनदार - Zamindar

2) लिप्यन्तर

इसमें मूल शब्द अन्य लिपि में लिखा जाता है - School -स्कूल ।

5.11.1. अर्थ पक्ष के आधार पर अनुवाद के प्रकार

अर्थपक्ष के आधार पर अनुवाद के चार भेद हैं -

1) शाब्दिक अनुवाद
2) शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद
3) भावानुवाद
4) शब्दानुवाद

5.12. कथ्य के आधार पर

विषय अथवा कथ्य के आधार पर अनुवाद के कई प्रकार होते हैं । विभिन्न वैज्ञानिक विषयों का अनुवाद करते समय उन शास्त्रों की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करना अत्यंत आवश्यक है । इस प्रकार के अनुवाद में लक्ष्य भाषा एवं स्रोत भाषा का ज्ञान ही नहीं, वरन् विषय का ज्ञान भी अन्यंत आवश्यक है । इसमें भावानुवाद से काम नहीं चलेगा । अत्यंत सक्षम एवं संतुलित शब्दानुवाद अपेक्षित एवं आवश्यक है । अनुवादक 'न जोड़ो न काटो' पद्धति को अपनाता है ।

विषय अथवा कथ्य के आधार पर अनुवाद के प्रकार ये हैं -

i) काव्यशास्त्र का अनुवाद
ii) गज शास्त्र का अनुवाद
iii) अश्व शास्त्र का अनुवाद
iv) गणित का अनुवाद
v) साहित्य का अनुवाद
vi) भाषा विज्ञान का अनुवाद
vii) प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद
viii) समाज शास्त्र का अनुवाद
ix) पत्रकारिता का अनुवाद
x) इतिहास का अनुवाद

xi) सूचना प्रधान साहित्य का अनुवाद
xii) विधि अनुवाद
xiii) शिक्षा शास्त्र का अनुवाद
xiv) अर्थ शास्त्र का अनुवाद
xv) राजनीतिशास्त्र का अनुवाद
xvi) नागरिक शास्त्र का अनुवाद
xvii) भौगोलिक शास्त्र का अनुवाद
xviii) भूगर्भ शास्त्र का अनुवाद
xix) दर्शन शास्त्र का अनुवाद
xx) अभिलेखों का अनुवाद
xxi) भौतिक शास्त्र का अनुवाद
xxii) रसायन शास्त्र का अनुवाद
xxiii) खगोल शास्त्र का अनुवाद
xxiv) जीव शास्त्र का अनुवाद
xxv) संगणक शास्त्र का अनुवाद
xxvi) सांख्यिकी शास्त्र का अनुवाद
xxvii) सस्य शास्त्र का अनुवाद
xxviii) ज्योतिष शास्त्र का अनुवाद
xxix) संख्या शास्त्र का अनुवाद
xxx) पुरातत्व शास्त्र का अनुवाद
xxxi) ललितकला शास्त्र का अनुवाद
xxxii) राजपत्र का अनुवाद
xxxiii) सरकारी पत्रों का अनुवाद
xxxiv) अंतरिक्ष अनुसंधान विषयक अनुवाद
xxxv) मनोवैज्ञानिक शास्त्र का अनुवाद
xxxvi) कार्यालयी अनुवाद आदि ।

5.13. पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रतिपादित अनुवाद के प्रकार

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार अनुवाद के निम्न प्रकार हैं -

5.13.1. कैटफ़ोर्ड का प्रथम विभाजन

कैटफ़ोर्ड ने पाठ विस्तार के दो प्रकार बताये हैं -

1) **पूर्ण** - इस में कोई अंश नहीं छोड़ा जाता है ।

2) **आंशिक** - इस में अनुवाद की असंभाव्यता के कारण चंद अंश छोड़ दिए जाते हैं ।

कैटफ़ोर्ड का द्वितीय विभाजन

भाषा स्तर के आधार पर कैटफ़ोर्ड अनुवाद के दो स्तर मानते हैं -

i) **समस्त** - इसमें भाषा के सभी स्तरों पर, अर्थात् शब्द, ध्वनि आदि पर अनुवाद किया जाता है ।

ii) **सीमित** - इसमें सीमित स्तर पर, अर्थात् ध्वनि अथवा शब्द अथवा व्याकरण के स्तर पर अनुवाद किया जाता है ।

कैटफ़ोर्ड का तृतीय विभाजन

श्रेणी के आधार पर कैट फोर्ड अनुवाद के तीन प्रकार मानते हैं -

i) **मुक्त** - इसमें वाक्य या उससे अधिक स्तर का अनुवाद किया जाता है ।

ii) **शाब्दिक** - इसमें मूल के प्रत्येक शब्द का अनुवाद किया जाता है ।

iii) **मध्यवर्गीय** - इसमें मुक्त और शाब्दिक दोनों का प्रश्रय लिया जाता है ।

इसे लिटररी अनुवाद भी कहा जाता है ।

5.13.2. जुलियाना हॉउस के अनुसार अनुवाद के प्रकार

जुलियाना हॉऊस अनुवाद के दो प्रकार मानते हैं -

i) **प्रत्यक्ष** - जो पढ़ने में अनुवाद-सा लगता है ।

ii) **परोक्ष** - जो पढ़ने में अनुवाद-सा नहीं लगता है ।

5.13.3. कसा ग्रांदे के अनुसार अनुवाद के प्रकार

इनके अनुसार अनुवाद के प्रकार ये हैं -

i) **भाषा परक** - इसके अनुवाद में मूल की भाषा अर्थात् शब्दों पर अधिक ध्यान दिया जाता है ।

ii) **तथ्यपरक** - इसमें तथ्यों पर अधिक ध्यान दिया जाता है ।

सूचनापरक एवं तथ्य परक वैज्ञानिक अनुवाद में तथ्य परक (वैज्ञानिक अनुवाद) विंधा अपनाई जाती है ।

iii) **संस्कृति परक** - इसमें मूल सामग्री की संस्कृति पर अधिक ध्यान दिया जाता है ।

iv) **सौंदर्य परक** - इसमें सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद होता है ।

5.14. शैली प्रधान विधाएँ

अधिकांश गद्य विधाएँ शैली प्रधान होती हैं । डॉ.जी.गोपीनाथनजी के शब्दों में सरलता एवं सादगी के साथ काव्यात्मक कल्पना विस्तार भी इनकी भाषा में मिल सकता है । वैयक्तिकता की पूरी छाप के कारण ही ये विधाएँ शैली प्रधान बन जाती हैं । अतः शैली की विशिष्टिता एवं छाप को अनुवाद में भी प्रतिफलित करना पड़ता है । व्यक्तित्व के अनुकूल शब्दावली का प्रयोग अनुवाद में अपेक्षित है । गाँधीजी की आत्मकथा के अनुवाद में बोधगम्य शैली का एवं नेहरूजी की पुस्तक के अनुवाद में फारसी-उर्दू मिश्रित हिन्दुस्तानी शैली का प्रयोग अनुवादकों ने अपनाया है । आलोचना की भाषा में पारिभाषिक शब्द एवं

तत्सम शैली का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है । आज के सृजनशील आलोचक अपनी भाषा को इस तरह सृजनात्मक साहित्य के करीब रखते हैं कि उसके अनुवाद में सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद से कम प्रयत्न नहीं करना पड़ता है । विचारात्मक निबंधों का अनुवाद एक सीमा तक सरल है । ललित निबंधों का अनुवाद पूर्णतः सृजनात्मक प्रक्रिया है । रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी आदि विधाओं का अनुवाद भी सृजनात्मक कार्य ही है । गद्य-काव्य के अनुवाद में काव्यानुवाद की सी ही जटिल समस्याएँ उपस्थित होती हैं ।

5.14.1. नाटक के अनुवाद के विशेष आयाम

नाटक के अनुवाद के संबंध में श्री.पी.के.बालसुब्रह्मणियन लिखते हैं - नाटक व एकांकी सृजनात्मक हैं । अतः काव्य के निकट हैं । काव्य की तरह ये भी अभिव्यंजनाप्रधान हैं, शैली प्रधान हैं । नाटक या एकांकी की भाषा काव्यमय हो, तो उनके अनुवाद में काव्यानुवाद की सारी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा ।

पठनीय नाटक के अनुवाद में कम कठिनाई महसूस होती है । भाषा शैली-प्रधान नाटक के अनुसार हो सकती है । पाठक आराम से उसका आस्वादन कर सकेंगे । श्रव्य नाटक का अनुवाद करते समय रंगमंच की आवश्यकताओं पर ही नहीं, सामान्य दर्शक की समझ के लिए अनुकूल होने वाली भाषा पर भी ध्यान देना पड़ता है । सरल भाषा में संवादों का अनुवाद होना चाहिए, क्योंकि दर्शक, कोष या अन्य साधन की सहायता नहीं ले सकेगा । स्रोत व लक्ष्य भाषाओं के रंगमंच की संस्कृति से परिचित हो तो अनुवाद सफल बनेगा ।

मंचीय साज सज्जा, प्रकाश के प्रभाव, ध्वनि संयोजन आदि की जानकारी हो तो अनुवाद का कार्य सरल एवं सफल बन सकता है ।

5.14.1.1. नाटक व एकांकी की सामान्य समस्याएँ एवं उनका निराकरण

नाटक संवादात्मक है । इन संवादों को अभिनेता के अनुरूप होना चाहिए ।

संवादों की भाषा सरल, मुहावरेदार व लोकोक्तियों से परिपूर्ण हो तो उसका सौंदर्य निखर उठेगा ।

पात्रों के स्तर के अनुकूल भाषा का प्रयोग होना चाहिए - विभिन्न भाषाओं की प्रकृति ज्ञात कर तदनुसार अनुवाद करे तो सोने में सुगंध आ जाती है ।

नाटक व एकांकी में संवेदनात्मक कथा, कार्य व्यापार और अभिनय का समन्वित रूप रहता है । अनुवादक का ध्यान इन तीनों पर पूर्णतः रहना चाहिए ।

15.14.2. कथा साहित्य का अनुवाद

डॉ.जी.गोपीनाथन के शब्दों में कथा साहित्य भाषा की सीमाओं को आसानी से तोड़ता है । अन्य भाषाओं के कथा साहित्य के अनुवाद की बहुत माँग रहती है । बंकिम, शरत, ताराशंकर, विमल मित्र, विभूति भूषण, खांडेकर, धूमकेतु, मुंशी कृष्णचंदर बेदी, अमृता प्रीतम आदि उपन्यासकार अनुवाद के माध्यम से पूरे देश में पहुँच गए हैं । टॉलस्टॉय, तुर्गनेव, दास्तोवस्की, जेला वाल्जाक, टैगोर, प्रेमचंद, तकषी आदि कथाकार अपनी भाषाओं की सीमाएँ लाँघकर विश्व भर में जनप्रिय हो गए हैं । वास्तव में कथा साहित्य के अनुवाद ने

ही विश्व साहित्य की परिकल्पना को साकार बना दिया है । पंचतंत्र आदि का अनुवाद करते करते कइयों ने मौलिक कथा साहित्य लिखना सीखा था । उसी तरह पश्चिमी उपन्यास का अनुवाद करते-करते भारत ने अपनी उपन्यास कला विकसित की । कथा साहित्य की विशिष्टता कथा तत्व और उसके कहने की शैली पर निर्भर है । आधुनिक उपन्यासों की शिल्प रचना अत्यंत सूक्ष्म एवं जटिल होती है । उपन्यास और कहानी के अनुवाद में शैली और शिल्प की सूक्ष्मताओं, अर्थ छायाओं, व्यंग्य, प्रतीक आदि पर अधिक ध्यान देना पड़ता है ।

5.14.2.1. कथानुवाद की विडम्बना

डॉ.प्रभाकर माचवे लिखते हैं कि कथा और उपन्यास के अनुवाद में मूल का प्रवाह भी उतना ही सहज सुपाठ्य रख पाना एक कठिन कार्य है, विशेषतः आधुनिक मनोविश्लेषणात्मक, वातावरण प्रधान और प्रतीकात्मक या अध्यात्म संबंधी उपन्यासों में जेम्स जोयस या ग्रैहेम ग्रीन या फांकनेर के अनुवाद का कार्य साधारण व्युत्पन्नता संपन्न व्यक्ति सहज रूप से नहीं कर सकता । कई बार हिन्दी अनुवादों में मूल विदेशी रचना का निरा कंकाल हाथ लगता है । कभी-कभी कुछ रक्त, मज्जा या चर्म का आभास भी मिल जाता है, पर पूरी ऊष्मा या मूल जैसा पूरा आस्वाद बहुत ही कम कृतियों में पाया जाता है ।

5.14.2.2. कथा-उपन्यास का अनुवाद

डॉ.प्रभाकर भाचवे के अनुसार कथा एवं उपन्यास क्षेत्र में सबसे अधिक हलचल सभी भारतीय भाषाओं में मिलती है । शरतचंद्र और बंकिमचंद्र के कितने ही अनुवाद हिन्दी में उपलब्ध हैं । बंगाली के प्रायः सभी महत्वपूर्ण लेखकों की

कृतियाँ हिन्दी में अनूदित हैं । ताराशंकर बेनर्जी, माशिक बेनर्जी, विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, विमल मित्र - इन सब के उपन्यास अब हिन्दी में उपलब्ध हैं । मराठी से साने गुरूजी, खांडेकर कड़के, वरेरकर आदि की रचनाएँ और गुजराती से धूमकेतु मुंशी, पन्नालाल पटेल आदि की कृतियों के अनुवाद हिन्दी में उपलब्ध हैं । डॉ.प्रभाकर माचवे कहते हैं कि उर्दू और पंजाबी के कई लेखक अनुवाद के सहारे हिन्दी लेखक हो गए हैं । किशनचंदर बेदी, अमृता प्रीतम, करतार सिंह दुग्गल, नानकसिंह आदि हिन्दी लिखना नहीं जानते । यह कोई कहे तो किसी को भरोसा नहीं होगा ।

5.14.2.3. उपन्यास के अनुवाद में ध्यातव्य तत्व

श्री.पी.के.बालसुब्रह्मणियन के शब्दों में उपन्यास में अन्य विधाओं की समस्याओं का भी विवेचन होता है । दर्शन, इतिहास, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान आदि के संदर्भ भी उपन्यास में आते हैं । अतः अनुवादक को सचेत रहना पड़ता है । उपन्यास के अनुवाद में वातावरण का पुनर्निमाण करना पड़ता है । दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक दूरी बहुत हद तक कठिनाई प्रस्तुत करती है । भावग्रहण और सम्प्रेषण में अनुवादक को सतर्कता बरतनी है । कतिपय अभिव्यंजनाएँ कठिन होती हैं । अनुवाद अर्थ की दृष्टि से मूल के निकट और सहजता की दृष्टि से लक्ष्य भाषा के अनुरूप होना चाहिए ।

5.14.3. शीर्षकों का अनुवाद

शीर्षकों के अनुवाद में रोचकता, सरलता एवं बोधगम्यता के साथ भाषा की प्रकृति का भी ध्यान रखना पड़ता है । शीर्षकों के बारे में डॉ.तिवारीजी का

सुझाव है कि अंग्रेजी आदि से नकल न करके स्वतंत्र रूप से उचित एवं आकर्षक शीर्षक दिया जाये ।

रचना में मूल के क्रम पर ध्यान न देकर लक्ष्य भाषा के स्वाभाविक रचना क्रम को अपनाना चाहिए ।

कविता, निबन्ध, कहानी आदि के शीर्षकों का अनुवाद सरल होना चाहिए ।

डॉ.तिवारी जी के अनुसार शीर्षक में अपेक्षित गुण ये हैं -

1) शीर्षक कथ्य से सम्बन्धित होना चाहिए तथा वह संबंधित कृति का सम्यक् प्रतिनिधित्व करे ।
2) शीर्षक लम्बा न हो ।
3) वह रोचक व प्रभविष्णु हो ।
4) शीर्षक मुहावरे के अनुकूल हो, यथा - 'मन मंदिर में', 'नयनों का तारा' आदि ।
5) मूलकृति के नाम का अनुवाद लक्ष्य भाषा के मुहावरे के अनुकूल होना चाहिए ।
6) अनूदित कृति का नाम मूल नाम ही हो अथवा मूल का अनुवाद हो, मूल का भावानुवाद हो या उचित नया नाम हो ।

5.15. उपन्यासेतर व नाटकेतर गद्य-विधाओं का अनुवाद

उपन्यास, कहानी एवं नाटक के अतिरिक्त जो अन्य गद्य विधाएँ हैं, यथा - आत्मा कथा, जीवनी, निबंध, यात्रा साहित्य, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, संस्मरण, आलोचना आदि । उनके अनुवाद के संबंध में अधिक चर्चा नहीं हुई है । गाँधीजी की आत्मकथा का अनुवाद पहले गुजराती से अंग्रेज़ी में हुआ और तत्पश्चात् अंग्रेजी से अन्य भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ । पत्रकारिता का

अनुवाद द्विवेदी युग में शुरू हुआ । निबंधों का अनुवाद पहले से ही विद्यमान है । रोमारोला आदि के द्वारा रचित गाँधी और विवेकानंद से संबंधित ग्रंथों का अनुवाद अनेक भाषाओं में हुआ । आलोचना तथा अन्य लघु सृजनात्मक विधाओं के अनुवाद की प्रक्रियां पहले से विद्यमान है ।

5.15.1. वाणिज्य विषयक अनुवाद

वाणिज्य-अनुवाद व्यापार, उद्योग-धन्धे, फिल्म विज्ञापन, बैंक, जहाज़रानी, पर्यटन आदि क्षेत्रों के लिए आवश्यक अनुवाद विधा है । डॉ.गोपीनाथन जी के शब्दों में माल एवं संस्था की ओर आकर्षित करने हेतु कई भाषाओं में विज्ञापन एवं प्रचार सामग्री देने की आवश्यकता है । अनुवादक प्रचार सामग्री को विभिन्न भाषाओं में प्रस्तुत करता है । अतर्राष्ट्रीय स्तर पर वाणिज्यानुवाद की महत्वपूर्ण संभावनाएँ हैं ।

5.15.2. दूर संचार अनुवाद

दूर संचार के अनुवाद में व्यक्ति नाम व अज्ञात स्थानों के नामों के अनुवाद की समस्या आती है । कई विदेशी भाषाओं की ध्वनियों को अंग्रेजी के बजाय यदि उन भाषाओं से सीधे भारतीय भाषाओं में लिखें तो ज्यादा सहूलियत होती है । रोमन के कारण बड़ी गड़बड़ी होती है । विदेशी शब्दों के लिप्यंतरण में भारतीय भाषाओं की सहज प्रकृति को दृष्टि में रखना चाहिए ।

सूचना एवं दूर संचार में अनुवाद

डॉ.जी.गोपीनाथनजी के शब्दों में सूचना एवं समाचार के अनुवाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें राजनीति एवं कूटनीति से लेकर व्यापार

एवं खेल तक के समस्त जीवन कार्य-कलाप एवं विषयों का विस्तार होता है । अन्य महत्वपूर्ण विषय यह है कि यह अनुवाद अन्य अनुवादों की अपेक्षा अधिक वेग की अपेक्षा रखता है । चाहे दैनिक पत्रों का अनुवाद हो, चाहेआकाशवाणी अथवा दूरदर्शन का अनुवाद हो, अनुवादक के पास कम समय रहता है और उपलब्ध कम समय में समस्त सामग्री का अनुवाद करना पड़ता है । यह अनुवाद एक साथ करोड़ों पाठकों एवं श्रोताओं के पास पहुँचता है । अतः उसमें संप्रेषणीयता, कौतूहल वर्धिष्णुता, प्रभावोत्पादकता आदि गुण सहजतः होने चाहिए ।

5.15.3. समाचार के अनुवाद की भाषा

समाचार सम्पादक को प्राप्त सूचनाओं में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है । यदि समाचार का शब्दानुवाद करेंगे, तो भी भटकाव की संभावना है । भाव का अनुवाद स्पष्टतः कर देने से दोष से बच सकते हैं । नए-नए शब्दों एवं प्रयोगों का अनुवाद कठिन हो जाता है । नए शब्द कोश में भी नहीं मिलते हैं । प्रसंगानुसार उन शब्दों को रख देना उचित है । लक्ष्य भाषा की सहज शैली को ही दृष्टि में रखे तो महत्वपूर्ण अनुवाद किया जा सकता है । क्लिष्ट शब्दानुवाद से बचना आवश्यक है । समाचारों के अनुवाद में भाव एवं विचारों पर ही बल होना चाहिए, न कि शब्द पर ।

5.15.4. नवीन अनुवाद

नवीन अनुवाद के संबंध में डॉ.जी.गोपीनाथन के विचार पठनीय हैं । प्राचीन काव्यों के नवीन अनुवाद एवं एक ही विशिष्ट कृति के अनेक अनुवाद

महत्व तथा उपयोग की दृष्टि से अनिवार्य हैं । एक ही कृति के अनेक अनुवादों में स्तष्टता, दक्षता एवं सूक्ष्मता बढ़ती जाती है । उमर खैयाम की रुबाइयों के अनुवाद पं.केशव प्रसाद पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत एवं बच्चन ने किए हैं । आलोचना के कारण भी नवीन अनुवादों का जन्म होता है । भिन्न-भिन्न अर्थ महत्वपूर्ण हो जाते हैं । तिलक, गाँधी आदि द्वारा कृत राजनीति प्रेरित गीतानुवाद द्रष्टव्य हैं । प्रसिद्ध रूसी कवि ओजिरोव का कथन है कि युगानुरूप श्रेष्ठ काव्यों का नवीन अनुवाद नये ऐतिहासिक एवं साहित्यिक अनुभवों के कारण आवश्यक हो जाता है ।

5.15.5. वाणिज्यानुवाद की प्रकृति

वाणिज्यानुवाद के सम्बन्ध में डॉ.जी.गोपीनाथन् जी कहते हैं कि यह अनुवाद प्रमुख रूप से तकनीकी प्रकृति का होता है । इसके कई क्षेत्र हैं, जिनमें अनुवाद की कई सम्भावनाएँ हैं । उनकी भाषा शैलियाँ एवं प्रयुक्तियाँ भिन्न-भिन्न हैं । अतः विशेष प्रशिक्षण - प्राप्त अनुवादक ही इनमें सफल हो सकते हैं । विज्ञापन, कला, फिल्म, प्रचार आदि में मूल का अनुकरण करते हुए भी स्वतंत्र अभिव्यक्तियों को प्रतिस्थापित करना चाहिए । व्यावसायिक क्षेत्र के विशिष्ट शब्द, अभिव्यक्तियाँ आदि अनुवादकों के लिए समस्याएँ उत्पन्न करती हैं । प्रशासन एवं कानून से भी इसका सम्बन्ध है । इसलिए चंद पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद इसमें होता है । विज्ञापन के अतिरिक्त व्यावसायिक पत्र, सूचना सामग्री, निर्देश, उद्घोष, नामपद तथा अन्य प्रशासनिक महत्व के कार्य भी इसमें समाहित हैं । बैंकों में वाणिज्यानुवाद की संभावनाएँ बढ़ रही हैं । रेलवे आदि अन्य विभागों में भी वाणिज्यानुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है ।

5.15.6. वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद

साहित्य में अभिव्यक्ति प्रधान होती है, जब कि वैज्ञानिक साहित्य में तथ्य अथवा सूचना प्रधान होती है । पारिभाषिक शब्दावली व नए-नए तथ्यों के निरूपण के साथ नये-नये पारिभाषिक शब्दों क निर्माण लक्ष्य-भाषा के अनुरूप करना है । मूल भाषा के शब्दों को ज्यों के त्यों अथवा यत्किंचित् रूप परिवर्तन के साथ ग्रहण कर सकते हैं ।

वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद स्पष्ट व संपूर्ण होना चाहिए । भाषा का सरल व अर्थ प्रधान होना अत्यंत आवश्यक है ।

5.15.7. समाचार संशोधन

डॉ.गोपीनाथन जी लिखते हैं - समाचार प्रमुख रूप से समाचार एजेंसियों एवं संवाददाताओं से प्राप्त होते हैं, जो देश-विदेश की अनेक भाषाओं से अनूदित होकर संपादकों के पास पहुँचते हैं । सम्पादकों को इन समाचारों का न केवल अनुवाद करना पड़ता है, बल्कि उनका उचित संपादन भी करना पड़ता है । समाचारों के अनुवाद में संपादन-कला एवं अनुवाद कला का संगम होता है । सभी विषयों की सामान्य जानकारी के साथ-साथ उसकी गहरी पैठ भी आवश्यक है । राजनीतिक समाचार, अन्तर्राष्ट्रीय व राजनीतिक गति विधियाँ, खेल-कूद, व्यापार मंडी, सांस्कृतिक समाचार, फिल्म समाचार आदि की विशेषज्ञता अपेक्षित है । अनुवाद के संशोधन के लिए अधिक समय नहीं मिलता, अतः अनुवादक को सतर्क रहना पड़ता है ।

5.15.8. मानविकी एवं समाज शास्त्रीय विषयों का अनुवाद

मानविकी एवं समाजशास्त्रीय विषयों के ग्रन्थों के अनुवाद में पारिभाषिक शब्दावली की समस्या हमारे सम्मुख आती है । समाजशास्त्र, इतिहास, नृतत्व विज्ञान, अर्थ शास्त्र आदि के पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कार्य अपर्याप्त है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, राज्य ग्रन्थ अकादमियों एवं भाषा संस्थाओं द्वारा निर्मित शब्दावलियाँ प्रगति की दिशा में हैं । विभिन्न संस्थाओं द्वारा निर्मित शब्दावलियाँ प्रगति के पथ पर हैं । विभिन्न संस्थाओं द्वारा निर्मित शब्दों में एकरूपता लाना अत्यंत आवश्यक है ।

5.15.9. विज्ञापन कला

वाणिज्यानुवाद का प्रमुख रूप विज्ञापन की कला में प्रकट होता है । विज्ञापन के अपने समाज-मनोविज्ञान एवं सौंदर्यशास्त्र होते है । इसलिए अनुवाद में भी लक्ष्य भाषाभाषियों के मनोविज्ञान, परिवेश एवं सौंदर्यबोध का ध्यान रखना पड़ता है । जहाँ रेडियो, दैनिक पत्र, दूरदर्शन आदि के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में विज्ञापनों का अनुवाद प्रस्तुत करना है, वहाँ पर अनुवादक में कलाधर्मिता भी आवश्यक हो ज़ाती है । जहाज़रानी, उड्डयन आदि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चलनेवाले व्यापारिक कार्यों में भी विभिन्न भाषाओं में सूचनाओं, नियमावलियों, निर्देशों आदि का अनुवाद आवश्यक हो जाता है । फिल्म डब्बिंग क्षेत्र में भी अन्तर्राष्ट्रींय स्तर पर महत्वपूर्ण वाणिज्यानुवाद हो रहा है ।

5.15.10. यंत्रानुवाद

डॉ.भोलानाथ तिवारीजी, डॉ.जी.गोपीनाथनजी, डॉ.मिताली भट्टाचार्जी,

श्री होनूरजी राव शंभूकारी, श्रीमती एम.सरस्वती जी, श्रीमती बी.जी. चंन्द्रलेखा जी आदि ने यंत्रानुवाद का रोचक विवरण दिया है - कम्प्यूटर पर आधारित यंत्रानुवाद एक नई उपलब्धि है । त्रोभास्कि ने 1933 में एक अनुवादक यंत्र तैयार कराया । दस वर्ष बाद कम्प्यूटर के आधार पर अनुवाद करनेवाला एक यंत्र बना । ई.रीझलर ने अनुवाद में आदमी की सहायता करनेवाला यंत्र बनाया । 1955 में लेबिदोव ने अंग्रेजी रूसी अनुवाद यंत्र का अच्छा प्रयोग करते हुए उसमें अंग्रेजी के 952 शब्द भर दिए हैं । फ्रांस, जर्मनी और जापान ने भी इस दिशा में स्तुत्य कार्य किया है ।

5.15.10.1. बोलनेवाला यंत्र

एक ऐसी मशीन बनाई गई, जो न केवल अनुवाद कर सकता है, बल्कि अनुवाद को बोल भी सकता है । यंत्र का नाम वी.आर.ए. (वाइस रिप्लाइंग अप्पारेटस) है । यह यंत्र टोकियो विश्वविद्यालय के यांत्रिकी विभाग ने तैयार किया । इस मशीन की क्षमता आठ हज़ार जापानी शब्द और दैनिक व्यवहार के दो हज़ार वाक्यों तक सीमित थी ।

5.15.10.2. हिन्दी के यंत्र

हिन्दी फ्रांसीसी की दिशा में फ्रॉंस में तथा हिन्दी रूसी की दिशा में सोवियत संघ में कुछ काम हुआ था । एक भाषा के कुछ शब्दों के लिए दूसरी भाषा या भाषाओं के प्रतिशब्दों को देने वाले यंत्र अवश्य बनने लगे हैं, जिनके कार्य को एक सीमा तक यंत्रानुवाद कहा जा सकता है ।

5.15.11. सांस्कृतिक अनुवाद

प्रत्येक संस्कृति की कतिपय अपनी विशेषताएँ होती हैं । संस्कृति की भाषा में निहित चंद विशिष्ट शब्दों और अभिव्यक्तियों का अनुवाद करना अत्यंत कठिन है, क्योंकि अन्य संस्कृतियों में विकसित भाषाओं में हमारी संस्कृति की भाषा के शब्दों के लिए समकक्ष अभिव्यक्ति अकसर नहीं मिलती । सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ बहुत व्यंजक होती हैं, यथा - श्री हनुमान जी का वचन, द्रौपदी का चीर, भीष्म प्रतिज्ञा आदि । इनका अनुवाद कठिन है । डॉ.तिवारी अंग्रेजी के ये उदाहरण देते हैं - अंग्रेजी में Old Adam, Baptism of blood, Witch hunt, One's Water Loo आदि सांस्कृतिक गंध के कतिपय नाम अननुवाद्य होते हैं । हिन्दी के मंगल सूत्र, उपवीत, सप्तपदी आदि ऐसे ही शब्द हैं । संबंधों के नामों की भी यही दशा है । डॉ.तिवारीजी कहते हैं कि अंकल या आंट को भारतीय भाषाओं में कहना कठिन है, तो हिन्दी फूफा, मामा, ताऊ, मौसा आदि को अंग्रेजी में ।

5.15.12. अलंकारों का अनुवाद

अलंकार काव्यश्री के आभूषण हैं । अलंकार के सक्षम अनुवाद से कृति की कांतिश्री की रक्षा होती है ।

ध्वनि समानता के शब्द

अलंकार के दो प्रकार हैं - शब्दालंकार एवं अर्थालंकार । लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के शब्दों के ऐसे प्रतिशब्दों की प्रतिस्थापना आवश्यक है, जिनमें ध्वनि साम्य हो । 'मंजु मनोहर मधुर-मधुर स्वर' - किसी भी भाषा में अनुवादक

को इन मकारयुक्त चार शब्दों के लिए ऐसे प्रतिशब्द खोजने पड़ेंगे, जिनमें आरम्भिक ध्वनि समान हो । यह अतीव कठिन है । डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में किसी भी भाषा की आनुप्रासिक सौंदर्ययुक्त पंक्ति का दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद कर पाना, जिसमें मूल अलंकार अक्षुण्ण रहे, बहुत कठिन है । यमक ओर श्लेष अलंकार का अनुवाद और भी कठिन है ।

यमक - ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहनवारी
ऊँचे घोर मंदर के अन्दर रहाती है ।

श्लेष - श्री मोहन राजहरि सराजेन्द्र सुराजाजि
नमामि ते नरभाव सत्याग्रह जयराजि ।

अनुवाद तब सम्भव है, जब दो भाषाओं के शब्द भंडार में समानता हो, यथा संस्कृत - हिन्दी, हिन्दी गुजराती, तेलुगु-कन्नड । जब अलंकार संज्ञा या विशेषण शब्दों पर आधारित हों, तब उनका अनुवाद संभव है । सर्वनाम या क्रिया शब्द पर आधारित होने पर इन्हें अनुवाद में उतार पाना सम्भव नहीं होता ।

अर्थालंकार के अनुवाद की समस्या

क) अर्थालंकार का अनुवाद तब संभव है, जब स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के अर्थालंकारों के स्तर पर समानता हो ।

ख) जिन अलंकारों का प्रयोग स्रोत भाषा साहित्य में होता है, उन्हीं का प्रयोग लक्ष्य भाषा में भी होता हो, प्रयोग समान स्थितियों में हो, दोनों में उपमान समान भाव व्यक्त करते हों, तब अनुवाद सरलता से किया जा सकता है ।

डॉ.तिवारी उपमान विषयक उदाहरण देते हैं - स्त्री की जंघा की उपमा केले के चिकने खम्भे से दी जाती है । लक्ष्य भाषा क्रे क्षेत्र में केले नहीं हों तो

उनके सौंदर्य से वे लोग अपरिचित रहते हैं । उनकी भाषा में स्त्रोत भाषा की उपमा का कोई विशेष अर्थ नहीं है । जाँघें कदली के खम्भे की तरह हैं - स्थान पर यह कहा जाये कि जाँघें सुडौल, चिकनी, लोमरहित, स्वच्छ तथा कांतियुक्त हैं ।

उपमान - अनुवादक के सामने सबसे जटिल समस्या तब आती है, जब कोई उपमान स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा में असमान या विरोधी भाव व्यक्त करता हो । 'उल्लू' हिन्दी में मूर्खता द्योतक उपमान है, जबकि अंग्रेजी में वह बुद्धिमान का द्योतक है । He is as wise as an owl. इसका अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में उस अर्थ में जिस उपमान का प्रयोग होता हो , उसका प्रयोग करे - वह बृहस्पति जैसा बुद्धिमान है अथवा अभिधाओं में भाव व्यक्त करे । डॉ.तिवारी कामदेव - कुपिड़ उपमान का उदाहरण देते हैं । हिन्दी में सौंदर्य के लिए कामदेव से उपमा दी जाती है - वह कामदेव जैसा सुन्दर है । अंग्रेजी में रोमनों का प्रेम देवता क्यूपिड़ कामदेव का पर्याय है, किन्तु वह कामदेव की तरह सौंदर्य का उपमान नहीं । क्यूपिड़ स्वरूप की दृष्टि से बड़ा भयावह माना जाता है, अर्थात् वह कामदेव का ठीक उल्टा है । ग्रीक पौराणिक कथा में अपोलो सूर्य देवता है, जो कला, संगीत, औषधि और धनुर्विद्या के अधिष्ठाता माने जाते हैं और सुन्दर भी कहे जाते हैं । अतः कुपिड़ के स्थान पर अपोलो उपमान का प्रयोग होना चाहिए ।

5.16. निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि विषयों के अनुसार अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का प्रयोग करना पड़ता है । साहित्यिक अनुवाद में शब्दानुवाद

की अपेक्षा भावानुवाद को अधिक प्रश्रय दिया जाता है । वैज्ञानिक अनुवाद में भावानुवाद को नहीं, बल्कि अत्यंत संयत एवं सुनियंत्रित शब्दानुवाद रूप को ग्रहण करना पड़ता है । अनुवाद की सफलता उसके उचित प्रकार, विधा एवं शैली के चयन पर आधारित है ।

5.17. सारांश

अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का परिचय इस घटक में संप्रदत्त है । चर्चित प्रकार एतद्वत् हैं -

1) अनुवाद के प्रकार गद्यत्व-पद्यत्व के आधार पर

अ) गद्यानुवाद

आ) पद्यानुवाद

इ) मुक्त छंद अनुवाद

2) साहित्य विधा के आधार पर

क) काव्यानुवाद

ख) नाटकानुवाद

ग) कथानुवाद

घ) जीवनी अनुवाद

ङ) रेखाचित्र अनुवाद

च) निबंध अनुवाद

छ) संस्मरण अनुवाद

ज) आत्मकथा अनुवाद

झ) यात्रा अनुवाद

ञ) रिपोर्ताज का अनुवाद

ट) पत्रिका का अनुवाद

ठ) पत्रों का अनुवाद

ड) शास्त्र ग्रंथों का अनुवाद

ढ) ललित कला संबंधी अनुवाद

ण) धर्म ग्रंथों का अनुवाद ।

शब्दानुवाद

1) शब्द प्रति शब्द अनुवाद
2) वाक्य प्रति वाक्य अनुवाद

माध्यम के आधार पर अनुवाद के प्रकार

1) प्रतीक प्रकार
2) भाषा प्रकार
3) लेखन प्रकार

प्रतीक प्रकार के भेद

1) अंतरभाषिक
2) अंतरप्रतीकात्मक
3) अंतर प्रकार

प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार

1) बाह्य आधार
2) आंतरिक आधार

1) बाह्य आधार

i) गद्यत्व-पद्यत्व के आधार
ii) साहित्य विधा के आधार
iii) साहित्येतर विषय
iv) सूचना प्रधान कार्यालय साहित्य

2) आंतरिक आधार

i) मूलनिष्ठ ii) मूलाश्रित

i) **मूलनिष्ठ** - शब्दानुवाद, सहजानुवाद

मूलनिष्ठ अनुवाद (अन्य प्रकार)

i) भावानुवाद

ii) छायानुवाद
iii) सारानुवाद
iv) व्याख्यानुवाद
v) रूपांतरण
vi) वार्तानुवाद अथवा आशु अनुवाद
vii) अधिकार्थ अनुवाद

भाषा प्रकार के भेद

1) उपादान सापेक्ष 2) रूप सापेक्ष

उपादान सापेक्ष के भेद

i) उपादान परक ii) आशु अनुवाद

रूप सापेक्ष के भेद

i) पद्यानुवाद ii) गद्यानुवाद

लेखन प्रकार के भेद

i) लिप्यंकन ii) लिप्यंतर

अर्थपक्ष के आधार पर अनुवाद के प्रकार

i) शाब्दिक अनुवाद ii) शब्दप्रति शब्दानुवाद

iii) भावानुवाद iv) शब्दानुवाद

लेखन अलेखन के आधार पर अनुवाद के प्रकार

i) मौखिक ii) लिखित

साधन के आधार पर अनुवाद के प्रकार

i) मनुष्य कृत ii) दल कृत iii) यंत्र कृत

विषय या कथ्य के आधार पर अनुवाद के प्रकार

1. काव्य शास्त्र अनुवाद
2. गजशास्त्र अनुवाद
3. अश्व शास्त्र अनुवाद
4. गणित अनुवाद
5. साहित्य अनुवाद
6. भाषा विज्ञान अनुवाद
7. प्रशासनिक अनुवाद
8. समाज शास्त्र अनुवाद
9. पत्रिकारिता अनुवाद
10. इतिहास अनुवाद
11. सूचना प्रधान अनुवाद
12. विधि अनुवाद
13. शिक्षा शास्त्र अनुवाद
14. अर्थ शास्त्र अनुवाद
15. राजनीति शास्त्र का अनुवाद
16. नागरिक शास्त्र का अनुवाद
17. भूगोल शास्त्र का अनुवाद
18. भूगर्भ शास्त्र का अनुवाद
19. दर्शन शास्त्र का अनुवाद
20. अभिलेखों का अनुवाद
21. भौतिकी का अनुवाद
22. रसायन शास्त्र का अनुवाद
23. खगोल शास्त्र का अनुवाद
24. जीवशास्त्र का अनुवाद
25. संगणक शास्त्र का अनुवाद
26. सांख्यिकी का अनुवाद
27. सस्यशास्त्र का अनुवाद
28. ज्योतिषशास्त्र का अनुवाद
29. संख्या शास्त्र का अनुवाद
30. पुरातत्व शास्त्र का अनुवाद

31. ललित कला शास्त्र का अनुवाद
32. राजपत्र का अनुवाद
33. सरकारी पत्रों का अनुवाद
34. अंतरिक्ष अनुसंधान विषयक अनुवाद
35. मनोविज्ञान का अनुवाद
36. कार्यालयी अनुवाद
37. अनुवाद विज्ञान का अनुवाद
38. व्याकरण का अनुवाद
39. कोश विज्ञान का अनुवाद
40. प्रशासनिक अनुवाद
41. खगोल शास्त्र का अनुवाद
42. चिकित्सा शास्त्र का अनुवाद

अनुवाद के प्रकार के संबंध में पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों के विचार

पाश्चात्य विद्वानों ने अनुवाद के प्रकारों के संबंध में विभिन्न मत व्यक्त किये हैं ।

1) कैट फ़ोर्ड का मत

प्रथम विभाजन - i) पूर्ण ii) आंशिक

द्वितीय विभाजन (भाषा स्तर पर) - i) समस्त ii) सीमित

तृतीय विभाजन (श्रेणी के आधार पर) - i) मुक्त ii) शाब्दिक iii) मध्यवर्गीय

2) जुलियाना हॉउस के अनुसार

i) प्रत्यक्ष ii) परोक्ष

3) कसा ग्रांदे का मत - अनुवाद के प्रकार

i) भाषा परक ii) संस्कृति परक iii) सौंदर्य परक आदि ।

5.20. संदर्भ ग्रंथ एवं निबंध

1) अनुवाद एक विचार (निबंध) - श्री जैनेंद्र कुमार
2) अनुवाद (निबंध) - प्रो. बालकृष्ण
3) सरकारी अनुवाद (निबंध) - श्री विश्वदेवशर्मा
4) शैक्षणिक अनुवाद (निबंध) - श्री चंद्र मौद्गल्य
5) अखबारी अनुवाद (निबंध) - श्री अग्रसेन गोस्वामी
6) सूचना साहित्य का अनुवाद (निबंध) = श्री अशोक
7) अनुवाद के प्रकार (निबंध) - डॉ.मिताली भट्टाचार्जी
8) अनुवाद विज्ञान (ग्रंथ) - डॉ.भौलानाथ तिवारी
9) अनुवाद (निबंध) - श्री.पी.के.बालसुब्रह्मणियन
10) अनुवाद कला (ग्रंथ) - डॉ.जी.गोपीनाथन
11) अनुवाद (निबंध) - डॉ.नगैन्द्र
12) अनुवाद (निबंध) - डॉ.प्रभाकर माचवे
13) अनुवाद - सिद्धांत और प्रयोग (ग्रंथ) - डॉ.कैलाशचन्द्र भाटिया
14) अनुवाद कला : कुछ विचार - सं.आनन्दप्रकाश खेमाणी, वेद प्रकाश

5.21. शब्दावली

1)	मुक्त छंद	- Free Verse
2)	कथानुवाद	- Translation of fiction
3)	अभिलेख	- Record
4)	शब्दानुवाद	- Literal Translation or Verbal Translation
5)	शब्द प्रति शब्द अनुवाद	- Word for Word translation
6)	शैली	- Style
7)	पंक्ति प्रति पंक्ति अनुवाद	- Inter lines translation
8)	पदबंध	- Phrase
9)	समानक	- Equivalents
10)	रूपान्तरण	- Adoptation
11)	दुभाषिया	- Interpreter
12)	अनुवादक	- Translator

13) सीमित - Restricted
14) आंशिक अनुवाद - Partial Translation
15) कतिपय - Few, Some
16) शब्दावली - Terminology
17) इकाई - Unit
18) ज्ञान साहित्य - Literature of Knowledge
19) शक्ति साहित्य - Literature of Power
20) रसायन शास्त्र - Chemistry
21) भौतिकी - Physics
22) सांख्यिकी - Statistics
23) अलंकार Figures of Speech
24) रेखाचित्र - Sketch
25) पत्र अनुवाद - Translation of letters
26) पत्रकारिता - Journalism
27) प्रशासनिक - Administrative
28) अर्थ शास्त्र - Economics
29) राजनीतिशास्त्र - Political Science
30) नागरिक शास्त्र - Civics
31) भौगोलिक शास्त्र - Geography
32) वर्गीकरण - Classification
33) संगणक - Computer
34) उपवर्ग - Sub Class
35) द्रष्टव्य - Visible, Can be seen
36) समाज शास्त्र - Sociology
37) जीव विज्ञान - Biology or Life Science
38) जीवाणु विज्ञान - Micro Biology
39) इतिहास - History
40) गणित - Mathematics

पड़ता है । अनुवाद को सशक्त बनाने हेतु भावानुवाद, शब्दानुवाद, पूर्णानुवाद आदि को अपनाना पड़ता है ।

विषय अथवा कथ्य के आधार पर अनुवाद के प्रकार

i) काव्यशास्त्र का अनुवाद
ii) गज शास्त्र का अनुवाद
iii) अश्व शास्त्र का अनुवाद
iv) गणित का अनुवाद
v) साहित्य का अनुवाद
vi) भाषा विज्ञान का अनुवाद
vii) प्रशासनिक साहित्य का अनुवाद
viii) समाज शास्त्र का अनुवाद
ix) पत्रकारिता का अनुवाद
x) इतिहास का अनुवाद
xi) सूचना प्रधान विषय का अनुवाद
xii) विधि अनुवाद
xiii) शिक्षा शास्त्र का अनुवाद
xiv) अर्थ शास्त्र का अनुवाद
xv) राजनीतिशास्त्र का अनुवाद
xvi) नागरिक शास्त्र का अनुवाद
xvii) भौगोलिक शास्त्र का अनुवाद
xviii) भूगर्भ शास्त्र का अनुवाद
xix) दर्शन शास्त्र का अनुवाद
xx) अभिलेखों का अनुवाद
xxi) अंतरिक्ष अनुसंधान विषयक अनुवाद
xxii) रसायन शास्त्र का अनुवाद
xxiii) संविधान का अनुवाद
xxiv) जीव शास्त्र का अनुवाद
xxv) संगणक शास्त्र का अनुवाद
xxvi) सांख्यिकी का अनुवाद

xxvii) ज्योतिष शास्त्र का अनुवाद
xxviii) संख्या शास्त्र का अनुवाद
xxix) पुरातत्व शास्त्र का अनुवाद
xxx) ललित कला विषयक अनुवाद
xxxi) राजपत्र का अनुवाद
xxxii) सरकारी पत्रों का अनुवाद
xxxiii) अन्य प्रकार ।

2) अनुवाद के प्रकारों के संबंध में पाश्चात्य चिंतकों के विचार

1. कैटफोर्ड का प्रथम विभाजन - पाठ विस्तार के आधार पर

i) पूर्ण ii) आंशिक

2. द्वितीय विभाजन - भाषा स्तर के आधार पर

i) समस्त ii) सीमित

3. तृतीय विभाजन - श्रेणी के आधार पर

i) मुक्त ii) शाब्दिक iii) मध्यवर्गीय

जुलियाना हॉउस के अनुसार अनुवाद के प्रकार

i) प्रत्यक्ष ii) परोक्ष ।

कसा ग्रांदे के अनुसार अनुवाद के प्रकार

i) भाषा परक ii) तथ्य परक iii) संस्कृति परक iv) सौंदर्य परक

पाश्चात्य चिंतकों के द्वारा प्रतिपादित अनुवाद के प्रकारों से संबंधित विभिन्न विचारों का उल्लेख अपेक्षित है ।

5.18. संभाव्य प्रश्न

i) अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का परिचय दीजिए ।

ii) अनुवाद के प्रकारों के संबंध में पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों के विचार प्रस्तुत कीजिए ।

5.19. संभाव्य उत्तर अभ्यास के प्रश्नों के संबंध में

1) अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का परिचय

विषय, शैली, विस्तार, सीमा, प्रकृति, मूल निष्ठता आदि के आधार पर अनुवाद के कई प्रकार अस्तित्व में आते हैं । प्रस्तुत घटक में इन सभी प्रकारों का परिचय दिया गया है । अनुवाद के इन सभी प्रकारों की अपनी खास विशेषताएँ होती हैं । इस प्रश्न के उत्तर में प्रमुखतः निम्न लिखित आधारों पर वर्गीकृत प्रकारों का विवेचन अपेक्षित है -

i) गद्यत्व पद्यत्व के आधार पर अनुवाद के प्रकार

ii) साहित्यिक विधा के आधार पर अनुवाद के प्रकार

iii) सीमा के आधार पर अनुवाद के प्रकार

iv) भाषिक स्तर के आधार पर अनुवाद के प्रकार

v) भाषा वाङ्मय के आधार पर अनुवाद के प्रकार

vi) विषय या कथ्य के आधार पर अनुवाद के प्रकार

vii) प्रकृति के आधार पर अनुवाद के प्रकार

viii) शब्द, भाव आदि के आधार पर अनुवाद के प्रकार

ix) अर्थपक्ष के आधार पर अनुवाद के प्रकार

x) लेखन अलेखन के आधार पर अनुवाद के प्रकार

xi) साधन के आधार पर अनुवाद के प्रकार ।

सीमा के आधार पर अनुवाद के प्रकार

i) पूर्ण अनुवाद

ii) आंशिक अनुवाद

भाषिक स्तर के आधार पर अनुवाद के प्रकार

i) समग्रता में अनुवाद

ii) निर्बद्ध अनुवाद

iii) क्रम के आधार पर अनुवाद

iv) क्रम बद्ध अनुवाद

अ) मुक्त अनुवाद आ) शब्द अनुवाद इ) शब्द सह अनुवाद

शब्द अनुवाद के भेद

i) शब्द क्रमाग्रही ii) शब्दाग्रही iii) सम्यक् आग्रही

वाङ्मय के आधार पर अनुवाद के प्रकार

i) ज्ञान साहित्य का अनुवाद

ii) रस अथवा शक्ति साहित्य का अनुवाद

लेखन अलेखन के आधार पर अनुवाद के प्रकार

1) लेखन अलेखन के आधार पर अनुवाद के दो प्रकार हैं -

i) मौखिक अनुवाद एवं ii) लिखित अनुवाद

2) साधन के आधार पर अनुवाद के प्रकार

साधन के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार हैं -

i) मनुष्य कृत	-	एक व्यक्ति के द्वारा
ii) दल कृत	-	कई व्यक्तियों द्वारा कृत अनुवाद
iii) यंत्र कृत	-	ज्ञान विज्ञान के प्रसार के लिए

अनुवाद ही आधुनिक युग का एक मात्र कल्प वृक्ष है । विषय, शैली आदि के सफल अनुवाद के लिए अनुवादक को विभिन्न प्रकारों का प्रश्रय लेना

NOTES

ಆದೇಶ ಸಂಖ್ಯೆ : ಕರಾಮುವಿ/ಅಸಾವಿ/4-060/2013-2014 ದಿನಾಂಕ : 24-09-2013
ಒಳಪುಟ : 60 GSM MPM ವೈಟ್ ಪ್ರಿಂಟಿಂಗ್ ಪೇಪರ್ ಮತ್ತು ಹೊರಪುಟ: 170 GSM ಆರ್ಟ್‌ಕಾರ್ಡ್
ಮುದ್ರಕರು : ಅಭಿಮಾನಿ ಪಬ್ಲಿಕೇಷನ್ ಲಿ., ಬೆಂಗಳೂರು-10 ಪ್ರತಿಗಳು : 1,200

Karnataka State Open University

Manasagangotri Mysore - 570 006

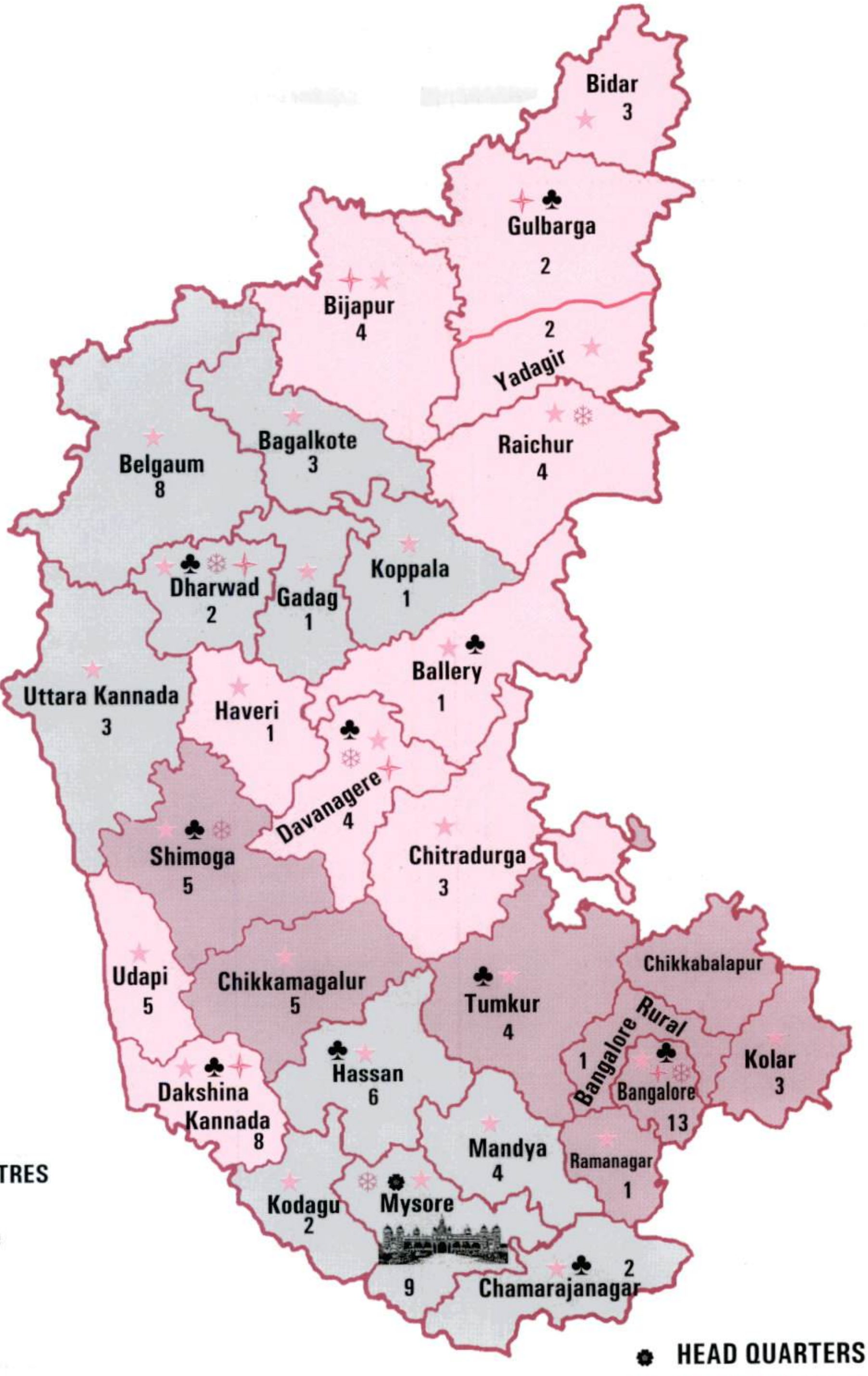

♣ **REGIONAL CENTRES**

Bangalore
Davanagere
Gulbarga
Dharwad
Shimoga
Mangalore
Tumkur
Hassan
Chamarajanagar
Bellary

- ❁ **HEAD QUARTERS**
- ★ **Total Study Centres : 111**
- ♣ **Regional Centres : 10**
- ❄ **B.Ed Study Centres : 10**
- ✦ **M.Ed Study Centres : 08**

Karnataka State Open University

Manasagangothri, Mysore - 570 006.